चार खेत

मरकुस 4:26–29

कलीसिया स्थापन के चार खेत

मरकुस 4:26–29

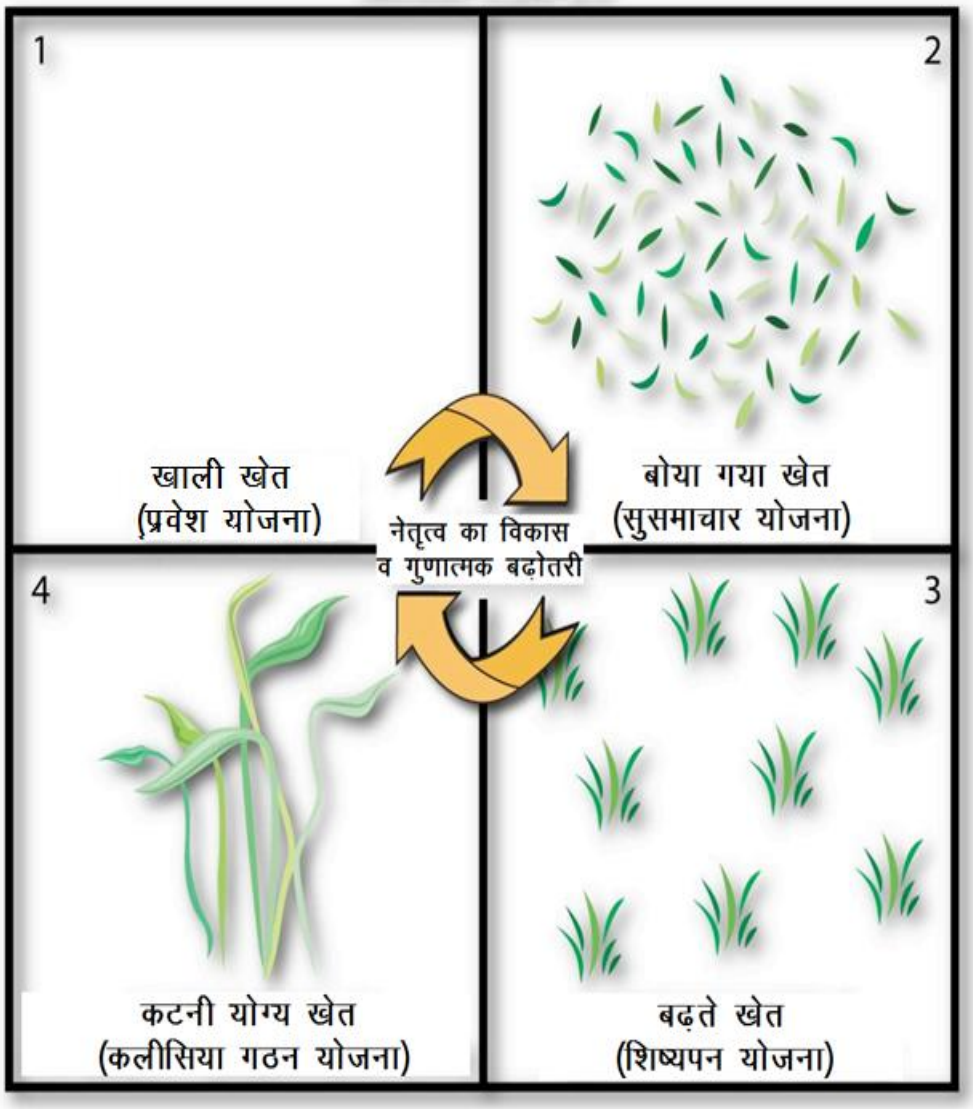

सामान्य उपकरणों का उपयोग करते हुए कलीसिया का पुनरुत्पादन करना

द्वाराः नैथन एंड कैरी शैंक – 2007

‘‘चार खेत’’

कलीसिया स्थापन सरलीकरण के लिये एक हस्त-पुस्तिकाः

स्वस्थ कलीसियाओं का शुरु करना और जारी रखना

इस हस्त-पुस्तिका के भीतर की सामग्रियों को कई दक्षिण एशिया के अभ्यास-कर्त्ताओं के कलीसिया रोपण अनुभव से तैयार किये गये हैं। इस हस्त-पुस्तिका के संकलन-कर्त्ताओं ने उन्हीं साथियों को श्रेय देने की मांग की है; तौभी अफसोस के साथ इस प्रशिक्षण के पहलुओं में योगदान देने वाले कुछ लोगों की संभावित चूक को स्वीकारते हैं।

विशिष्ट स्वीकृतियां जाती हैंः जेफ़ एस. ऐंजी एस. जॉन सी. नील एम. जेसी एस. शेन एस. जेरेड एच. डेविड जी. लिपॉक एल. कुन्सांग सी.

लिखित व संकलित द्वाराः नैथन व कैरी शैंक, 2007

प्रस्तावना

कलीसिया परमेश्वर की महिमा का वाहन है। जहॉ कहीं भी यीशु मसीह का ज्ञान दिया गया है वहॉ कलीसिया ने एक चौकी के रुप में सेवा की है। मसीह के देह के रुप में वचनबद्ध प्रतिबद्धता अपने लोगों के लिये परमेश्वर की एकमात्र योजना है। यह सामाजिक सेवकाई, समुदाय परिवर्तन और व्यक्तिगत पवित्रता के लिये नियुक्त नमूना है। इस कारण से इस हस्त-पुस्तिका के लेखकों ने अपनी जिन्दगी इस उद्देश्य के लिये समर्पित कर दी हैः उन क्षेत्रों में कलीसिया स्थापन करना, जहॉ उसके (यीशु) बारे में लोगों को जानकारी नहीं है।

कलीसिया स्थापन एक पवित्र आत्मा द्वारा संचालित प्रक्रिया है। कोई मानव-निर्मित मॉडल या ज्ञान कभी भी परमेश्वर की गतिविधियों या उनके राज्य के विस्तार या समय में जगह ले न सकेगा। हालांकि यह हस्त-पुस्तिका अग्रिम के लिये सुझाव प्रदान करता है, इसका प्राथमिक उद्देश्य संगठन है और वर्तमान नमूनों के मूल्यांकन में प्रतिलिपि प्रस्तुत करने योग्य उपकरण शुरु करने की उम्मीद है। हमने पवित्रशास्त्र से कलीसिया स्थापन की विस्तारित प्रक्रिया को प्राप्त करने की जरुरत की है क्योंकि ऐसा दक्षिण एशिया के लोगों के साथ जीवंत रहा है। हम शुरुआत् में कई खामियों को स्वीकार करते हैं और व्यापक रणनीति के लिये कोई दावा नहीं करते हैं।

इस हस्त-पुस्तिका का लक्ष्य उन ''बड़े दृश्य'' मुद्दों की समझ है, जो कलीसिया स्थापन प्रक्रिया के लिये लाभकारी और हानिकारक दोनों है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हम पाठक को इस काम को प्रार्थना का बिषय मानने को कहते हैं। यह कामना करते हुए कि यह पौलुस के अनुशरण की पूर्ति हो सके, ताकि इससे हर विचार बंदी यीशु मसीह के प्रभुत्व के तले लाया जा सके। इन प्रयासों के परिणाम से परमेश्वर की महिमा हो सके।

नैथन व कैरी शैंक

उत्तर-पूर्व भारत, 2007

बिषय सूची

मरकुस 4 कलीसिया स्थापन का परिचय	पृष्ट संख्या 4
पांच भागों का मूल्यांकन	पृष्ट संख्या 13
खेत संख्या 1 – पुनरुत्पादनीय प्रवेश रणनीति	पृष्ट संख्या 20
खेत संख्या 2 – पुनरुत्पादनीय सुसमाचार प्रस्तुति	पृष्ट संख्या 30
खेत संख्या 3 – पुनरुत्पादनीय शिष्यपन	पृष्ट संख्या 41
खेत संख्या 4 – पुनरुत्पादनीय कलीसिया गठन	पृष्ट संख्या 53
नेतृत्व बढ़ोतरी – अगुवों के द्वारा अगुवों को स्थापन करना	पृष्ट संख्या 69
जय पाने की रुकावटें	पृष्ट संख्या 85
सफलता को परिभाषित करना	पृष्ट संख्या 91
कलीसिया स्थापन का अभिप्राय	पृष्ट संख्या 99
संभव क्या है?	पृष्ट संख्या 102
घटना का अध्ययन	पृष्ट संख्या 109
चारों खेत प्रशिक्षकों की मार्गदर्शिका	पृष्ट संख्या 112
यीशु मसीह की सात आज्ञाएं	पृष्ट संख्या 121
बिब्लियॉग्राफी, ''अन्य अभ्यास–कर्त्ताओं से''	पृष्ट संख्या 132
चारों खेत प्रशिक्षार्थियों के लिये बुकमार्क	पृष्ट संख्या 134

परिचयः चर्च की शुरुआत के लिये क्या आवश्यक है?

हमारी सभी प्रशिक्षण में हम प्रशिक्षुओं से पुछते हैं, अगर आप किसी नये चीज के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं ताकि वह आपको नयी कलीसिया की शुरुआत के लिये मदद करे, तो आप क्या मांगेंगे? कई बार जवाब हमारी खुद की पूर्व परिभाषित परिभाषाओं को दर्शाता है, कि चर्च वास्तव में क्या है। प्रतिक्रियाओं में अक्सर ऐसी चीजें शामिल होती है, ''मैं परमेश्वर से एक भवन मांगुंगा।'' अन्य लोगों ने प्रतिक्रिया दिया है, ''मैं एक अच्छे स्थान के लिये प्रार्थना करुंगा।'' एशियाई संदर्भ में जहॉ बजट गिटार, ड्रम, या सर्वाधिक परम्परागत परिवेश की गीत की किताबों में सीमित हो सकती है; उन्हीं चीजों की सूची बनाते हैं।

जबकि इन सभी चीजों ने उन मांगने वाले लोगों के मन में एक कथित आवश्यकता को भर दिया है, हमें परमेश्वर के राज्य की प्रगति के लिये उनकी जरुरतों पर प्रश्न करना चाहिये। क्या परमेश्वर को इन चीजों की जरुरत लोगों के बीच मे उसकी इच्छा को पूरा करने के लिये है? क्या यह वास्तव में परमेश्वर था जिसने चर्च में इन चीजों को प्रथम स्थान लेने के लिये प्रदान किया था? शायद इस तरह के जवाबों के कारण यह सही मायने में मूल्यांकन करने में एक साधारण सफलता है कि नये कलीसियाओं के गठन के लिये क्या जरुरी है।

इस क्षेत्र में हमें अनुमान लगाने की जरुरत नहीं है कि सबसे अच्छा क्या है। यीशु ने पहले से ही स्प" ट शिक्षा दी है कि इसके लिये क्या जरुरी है। एक कलीसिया स्थापक को इन आवश्यक वस्तुओं की खोज करना अत्यन्त जरुरी है। नीचे दिये गये बढ़ते बीच की दृष्टांत को पढ़ने के लिये समय लें। परमेश्वर के राज्य के बिषय यीशु की शिक्षा हमें इन प्रमुखताओं को दिखाती है।

> फिर उस ने कहा; परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहिले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना। परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।।
>
> मरकुस 4:26–29

आत्म–खोज कार्य – समूह 6–10 में मरकुस 4:26–29 वचन पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्न पर विचार–विमर्श करें।

एक कलीसिया को शुरु करने के लिये किस चीज की जरुरत होती है?

अपने विचारों को नीचे लिखें।

किसी एक से समूह के द्वारा पता लगाये गये बातों को पढ़ने को कहें।

जैसे कि हम इस दृष्टांत में एक साथ नज़र डालते हैं, तो कई बातें सामने उभर कर आती हैं। एक–एक पंक्ति में ध्यान दें कि एक नया काम शुरु करने के लिये क्या जरुरत है?

परमेश्वर का राज्य ऐसा है,
जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे।

इस प्रथम वाक्य में हम कलीसिया स्थापन के लिये तीन प्रमुख बातों को देख सकते हैं।

1. बीज बोनेवाला – पुरुष और स्त्रीयॉ बीज बोना चाहते हैं।

बीज बोनेवाले परमेश्वर की योजना की शुरुआत कर रहे हैं। परमेश्वर ने अपने लोगों को अपने राज्य के उत्प्रेरक के रुप में उपयोग करने के लिये चुना है। पवित्रशास्त्र हमारे कर्तव्य के बारे में, और इसके साथ–साथ हमारे सृजनहार और उसके छुटकारे की योजना को प्रस्तुत करने के विशेष अवसर के बारे में हमसे बार–बार कहती है। जैसे कि हम बीज बोनेवाले की आवश्यकता पर विचार करते हैं, तो उन्हीं की तरह ही कलीसिया स्थापक के साथ भी निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान करने की जरुरत हो जाती है। इन सवालों का जवाब उनकी सेवकाई पर बहुत बड़ा प्रभाव डालता है।

बीज बोनेवाले से संबंधित कुछ महत्वपूर्णण प्रश्नः

1. एक बीज बोनेवाला क्या करता है?
2. कौन एक बीज बोनेवाला के योग्य हो सकता है?
3. कैसे मैं एक सेवक को परमेश्वर के राज्य के कार्य के लिये भरपूरी देता हूँ?
4. वर्तमान में आपके खेत/क्षेत्र में कितने बीज बोनेवाले कार्य कर रहे हैं?

इस प्रकार के प्रश्नों के जो उत्तर होंगे, वे आपकी सेवकाई की सच्ची गुणवत्ता को प्रगट करेंगे। 2 कुरिन्थियों 9:6 हमेशा से सच रहा हैः

परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी;
और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।

2. बीज बोनेवाले के हाथ से परमेश्वर का वचन बोया जाता हैः

परमेश्वर ने इस तरह से सृष्टि को आदेश दिया है कि बीज सभी जीवन का प्रमुख प्रारंभिक स्थान रखता है। कोई भी जीवन किसी पूर्व–निर्धारण, या प्राथमिक तत्व के बिना नहीं होता है, अर्थात् जिसके माध्यम से विकास संभव हो। आध्यात्मिक जीवन के लिये परमेश्वर के वचन को मूल–बिन्दु के रुप में नियुक्त किया गया है। इसके बिना हम रोमियों अध्याय 1 के साथ छोड़ दिये जाते हैं, सृजनहार का प्रकाश सृष्टि में दृश्य है तौभी केवल दण्ड के योग्य ठहरते हैं। यही कारण है कि परमेश्वर ने हमें अपना स्वभाव व अपनी योजना का पूरा लेख हमें देने के लिये इतनी दूरी तय किये हैं (रोमियों 10:17)।

आपके द्वारा परमेश्वर के बीच की उपयोगिता से संबंधित इन प्रश्नों पर ध्यान दिजियेः

बीज से संबंधित प्रश्नः

1. किस प्रकार का बीज?
2. बीज के क्या–क्या प्रमुख तत्व होते हैं?
3. वो क्या–क्या रुकावटें हैं जो सुसमाचार के संदेश को समझने के मेरे लक्ष्य को दूर रखती है?
4. वह क्या माध्यम हैं जो फल उत्पन्न करने के लिये अधिकताई से पसंद किये जाते हैं?
5. क्या बड़ी संख्या में बीज बोना मेरे कार्य को पूरा करती है?

विश्वास सुनने से आता है (रोमियों 10:17)। तौभी हर सुनने के परिणाम में विश्वास उत्पन्न नहीं होता है (मत्ती 13:14)। ऐसे भी लोग होते हैं जिनके मन सुसमाचार के संदेश को ग्रहण करने के लिये तैयार नहीं होते हैं। तौभी इन दो प्रकार के लोगों को भेद करना कभी भी मनुष्य का काम नहीं रहा है। यहॉ तक कि मसीह ने भी बड़े पैमाने पर बीच बोने का अभ्यास किया, और फिर उन्हें छॉटना शुरु किया जो उस बीज के लिये तैयार थे। एक बीज बोनेवाले की कुंजी अधिकाधिक रुकावटों को दूर करना होता है, ताकि जितना संभव हो सके सुसमाचार ग्रहणशील हो सके। जो ठोकर खाये वह मसीह पर खाये, हमारी अनिपुण अयोग्यता के कारण नहीं। बीज बोनेवाले के द्वारा संस्कृति के पहलूओं को गलत समझा गया है जिसके परिणाम में सुसमाचार को ग्रहण करने के द्वारा राज्य में प्रवेश करने से अनेकों को दूर रखा गया है; अन्यथा अनेक लोग इसके लिये तैयार होते। श्रोताओं के बारे में उचित समझ एक बीज बोनेवाले को हर संभावित ठोकर से बचे रहने में सहायता कर सकता है, या श्रोताओं सांसारिक परिदृश्य की बातों की कमी के कारण उन बातों पर जोर देने की जरुरत है, जो हमारी अगली प्रमुखता को सामने लाती है।

3. भूमि – मनुष्य का हृदय जिसमें बीज बोया जाता हैः

कलीसिया स्थापन के लिये श्रोताओं को जानना जरुरी है। जो खोये हुओं से अलग रहते हैं वे बहूतायत की कटनी को कभी नहीं देखेंगे। यीशु हमेशा हमारे समय के उपयोग के लिये मानक रहेगा। जब हम उसकी प्राथमिकता पर विचार करते हैं, ढुँढते और बचाते हैं जो खो चुका है, तो हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये भी बुलाया गया है जिन्होंने कभी नहीं सुना है। इस जगत में खोये हुए लोगों तक पहूँचने का कार्य अभी बाकी है, इसीलिये अभी तक हमने अपने उद्धारक के दूसरे आगमन का स्वागत नहीं किया है (2 पतरस 3:9, मत्ती 24:14)। परमेश्वर के अन्तः दर्शन में हरेक देश, जाति, समूदाय से याजकों की शामिलता है, जो आराधना के लिये सिंहासन के सम्मुख खड़े हों (प्रकाशितवाक्य 5:9–10)। हमारे प्रभु यीशु के आगमन की आशा हमेशा दुनिया के लोगों के बीच उसके काम को जारी रखने की इच्छा से जुड़ी रहेगी।

भूमि हमारे चारों ओर हैं। हम कहीं भी देखें, हम खोये हुओं को देख सकते हैं। भूमि से संबंधित इन प्रश्नों पर ध्यान दें:

भूमि से जुड़े प्रश्न

1. आपके श्रोता कौन हैं?
2. कैसे मेरे लक्ष्य निर्धारित लोग सुचना पर प्रतिक्रिया देते हैं? और निर्णय लेते हैं?
3. श्रोताओं की कितनी प्रतिशत पढ़े–लिखे हैं? कैसे अनपढ़ लोगों में सुसमाचार बताया जाये?
4. कितने घरों को मैं अपने लक्ष्य में रखा हूँ? गॉव/शहर?
5. कितने खोये हुए लोगों को आप व्यक्तिगत रुप से जानते हैं?

आज हमें बतायी गयी है कि इस ग्रह में 6 अरब लोग पाये जाते हैं। हम इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि प्रतिदिन मरने वालों की संख्या लगभग 3,00,000 है। केवल 86,000 प्रति सेकेण्ड प्रतिदिन, इसका मतलब है कि हर सेकेण्ड तीन

से भी अधिक लोगों की मृत्यु होती है। कैथोलिक को मिलाकर, मसीहियों की संख्या लगभग 2 अरब या इस पृथ्वी की आबादी का एक–तिहाई है। यदि ये अनुमान सही है तो इसका मतलब है कि प्रतिदिन के प्रति सेकेण्ड दो लोग अनन्त नरक में प्रवेश करते हैं। आपके शहर या आपके लक्ष्य–निर्धारित लोग या जनसंख्या का कितना भाग मसीह को जानते हैं? उनमें से कितने होंगे जो आज मसीह के उद्धार का ज्ञान से वंचित होकर अनन्त मृत्यु में प्रवेश करेंगे?

यीशु आगे कहते हैं:

''और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह
न जाने। पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहिले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना।
परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।।''

एक बार फिर हम इन पंक्तियों में कलीसिया स्थापन की तीन प्रमुख बातों को देखते हैं।

4. आत्मा – परमेश्वर की आत्मा बढ़ोतरी देता है।

एक किसान के लिये बढ़ोतरी का भेद बताया नहीं जा सकता है। यद्यपि वह खाद डालता और जल पटावन की व्यवस्था करता है, वह सूर्य के प्रकाश के बिषय आश्वस्त रहता है, तौभी बढ़ोतरी की वास्तविक प्रक्रिया उसके नियंत्रण से बाहर होती है। दिन के अन्त में वह खाता और आराम से सो जाता है, यह जानते हुए कि यह भूमि और बीज का स्वभाव ही है जिससे फसल आयेगा। अब वह इस ज्ञान के मामले में चैन से रहता है क्योंकि परमेश्वर ने आदि ही से इस प्रक्रिया का आदेश दे रखा था। यह प्रक्रिया इतनी सामान्य है कि इसके भेद को प्रायः अनदेखा कर दिया जाता है। सही समय पर, सही जगह में, सही दशाओं की भीड़ पर निर्भरता से बीज अंकुरित होता और बढ़ता है। इस प्रक्रिया में, कई बार, हम परमेश्वर के अविश्वसनीय वाद्यवृदंन/दखल–अंदाजी की बात सोच लेते हैं। वही उपयुक्त परिस्थिति और विकास के सभी आवश्यक तत्व प्रदान करता है। जब यीशु बोल रहा था, तब कलीसिया को पवित्र आत्मा दिया जाना बाकी ही था। पिन्तेकुस्त की घटना के बाद, हम पौलुस से कलीसिया से जुड़ी बड़ी भेद की बातों की व्याख्या सुनते हैं।

मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा,
परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया'' (1 कुरिन्थियों 3:6)।

पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के बिना एक नई कलीसिया शुरु करने का प्रयास करना ठीक वैसा ही है, जैसे कि बिना रॉकेट के चंद्रमा की यात्रा करना। कलीसिया स्थापन के संसाधनों के बारे वार्तालाप में, बातचीत की शुरुआत और अन्त परमेश्वर के हाथ से होना चाहिये। हालांकि हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि परमेश्वर की इच्छा कलीसिया के फैलाव में है, जिसमें उसकी इच्छा से जुड़े सबसे मुश्किल काम उसके समय को समझना है। बोने के लिये सबसे अच्छा मौसम कब होता है? क्यों बीज ने इसी भूमि में अपना जड़ पकड़ा है, और पड़ोसी की भूमि में नहीं? ये सभी बातें पवित्र आत्मा के रहस्य में छीपे होते हैं। कलीसिया स्थापक की बड़ी सांत्वना परमेश्वर के संप्रभुता पर आश्रित होती है, जो अपने फसल को पालन–पोषण करने से कभी विश्राम नहीं करता।

आपकी सेवकाई में आत्मा की शामिलता से संबंधित इन प्रश्नों पर ध्यान दें:

परमेश्वर का आत्मा के बारे में प्रश्न

1. परमेश्वर की आवाज सुनने के लिये आप कितने घंटे बिताते हैं?
2. वह अन्तिम समय कब था जब परमेश्वर ने अपनी योजना या समय आपके जीवन में प्रगट किया था?
3. कैसे आप बतायेंगे कि परमेश्वर ने आपको बुलाया है?
4. कैसे आप अपने निर्णय को परखेंगे ताकि परमेश्वर की इच्छा व समय के बारे में आश्वस्त हो सकें?
5. क्या ऐसा भी समय आया था जब आपने परमेश्वर की इच्छा व समय को गलत तरीके से लिया था?

परमेश्वर की दिशा–निर्देश को समझने के लिये मसीह में बने रहना ही कुंजी है (यूहन्ना 15:4–8)। पवित्रशास्त्र में पाये जाने वाले महान अगुवे बने रहनेवाले लोग हुआ करते थे। यूसुफ, मूसा, यहोशु, शमुएल, दाऊद, नेहेमायाह, और दानिय्येल जैसे सभी लोग परमेश्वर की आवाज सुनने को निर्भर हुआ करते थे, और वे समय पर उसका पालन भी किया करते थे। वे कई विपत्तियों से बच गये थे, क्योंकि वे परमेश्वर की आवाज को सुनने में सक्षम थे और परमेश्वर ने उन्हें ऊँचा उठा लिया था। इसी प्रकार की प्रक्रिया से अनेक जीत हासिल की गयी थी। कैसे आप अपने कर्त्ता और विश्वास को सिद्ध करनेवाले की आवाज को सुनने के लिये प्राथमिकता देते हैं,?

5. मौसम – खेती के लिये समर्पण

कोई भी बीज रातों–रात उग नहीं जाता। कोई भी किसान पहला दिन बो कर दूसरा दिन कटनी की उम्मीद नहीं रखता। केवल खेती के लिये प्रतिबद्ध लोग ही फलों को देख सकेंगे। एक किसान की तरह, एक कलीसिया स्थापक को अगली खेती का स्पष्ट दर्शन रखना चाहिये। इसके बिना, ध्यान भंग, भुख, और यहॉ तक कि निराशा भी आपके प्रयासों के सामानान्तर चलेंगे। यीशु के दृष्टांत में इस किसान पर ध्यान करें। वह कितनी बार खेत में गया था? एक बार बोने के लिये, एक बार डंठल को देखने के लिये, एक बार उसके सिरे को देखने के लिये, एक बार उसके सिरे में दानों से भरी बालियों को देखने के लिये, एक बार हंसिया लगाने के लिये। हम देख सकते हैं कि वह कम से कम छः बार, और उससे भी बढ़कर प्रतिदिन अपने खेतों में गया होगा। क्यों एक किसान बोयेगा, यदि उसने कटनी का इरादा न रखा हो? मौसम से संबंधित इन प्रश्नों पर ध्यान करें:

मौसम से संबंधित प्रश्नः

1. क्या आप कटनी के लिये समर्पित हैं?
2. आप बीज की बढ़ोतरी को देखने के लिये कितना समय देते हैं? क्या आपके लिये फसल सर्वोच्च प्राथमिकता है?
3. आप वर्तमान में किस प्रकार के फसल का पीछा कर रहे हैं?
4. क्या आपकी सेवकाई का लक्ष्य या अन्तिम लक्ष्य कटनी को इकट्ठा करना है?

जब ऐसे प्रश्नों का सामना किया जाता है तब अधिकांश लोग महसुस करते हैं कि उनके लक्ष्य नयी कलीसियाओं का स्थापन नहीं था। यदि आप फसल को इकट्ठा करने से कुछ भी कम से संतुष्ट हो जाते हैं तो इसका मतलब है कि आपकी सेवकाई कलीसिया स्थापन पर केन्द्रित नहीं है। बीज तो बोया गया, परन्तु इसकी देखभाल नहीं की गयी, परन्तु इसे नष्ट होने के लिये छोड़ दिया गया। बीज, समय, मेहनत, उपजाऊ भूमि और अन्य कई संसाधन नष्ट हो जाते हैं, जब हम फसल के प्रति समर्पण से चूक जाते हैं।

6. हंसिया – मजदुर–बल में कटनी

बोने के लिये सिर्फ एक जन की जरुरत होती है। तौभी फसल सम्पूर्ण समूदाय को एक साथ इकट्ठा कर देती है। जब किसी एक के द्वारा प्रभावकारी रुप से बीज को छींटा जाता है, तो फसल की प्रकृति तुरन्त किसी एक किसान की योग्यता की मांग करती है। इसी कारण, परिवार, मित्रों, और पड़ोसियों को फसल में शामिल किया जाता है, ताकि वे एक साथ पके। यह तर्क स्पष्ट है। समय ही सब कुछ है। यदि हम जल्दीबाजी करते हैं, तो दाना नहीं पकेगा, और उसमें पौष्टिकता की कमी रह जायेगी। यदि बहूत दे की जाये तो फसल खेत ही में सड़ जायेंगे। संसाधनों और मजदूरों का सम्पूर्ण मेहनत व मौसम बर्बाद हो जायेगा। यीशु के निर्देश पर ध्यान दें, जब उसने बीज बोनेवाले को यहूदिया के खेतों में भेजा।

पक्के खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं: इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो,
कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे (लुका 10:1–2)।

बोनेवाले पर्याप्त नहीं थे। बोनेवालों को बोझ दिया गया ताकि वे तुरन्त और अधिक मजदूरों के लिये प्रार्थना करे, ताकि वे बोये हुए फसल को काट सके। उन्होंने इकट्ठा करनेवालों के लिये प्रार्थना किये, जो ये निश्चित करेंगे कि फसल को समय पर और सही तरीके से लाया गया है। उसी तरह से, हमें भी फसल के प्रत्युत्तर के लिये तैयार रहने की जरुरत है। इन प्रश्नों पर ध्यान करें जो हंसिया/कटनी से संबंधित है।

हंसिया/कटनी से संबंधित वचन

1. आपके पास क्या संसाधन मौजूद हैं जिसे आप कटनी के लिये ला सकते हैं?
2. आपके नेटवर्क/सेवकाई के अन्तर्गत कितने लोग हंसिया चलाने को तैयार हैं?
3. वह कौन है जो आपकी सेवकाई में मजदूरों को इकट्ठा कर सकता है?
4. क्या आपका हंसिया पैना है?

मरकुस 4 के इन प्रमुख बातों की भयानक सच्चाई यह है कि सभी को हमें पहले ही से प्रदान किया गया है। जैसे कि हम मरकुस 4 को, और कलीसिया स्थापन प्रक्रिया अपने अध्ययन में जारी रखते हैं; इन संसाधनों के माध्यम से प्रार्थना करें ताकि कटनी में उपयोग में लाने के लिये हमारे पास ये सभी संसाधन उपलब्ध हो सके।[1]

सोचने–विचारने के लिये कुछ और प्रश्न

- ☞ कलीसिया स्थापन के लिये इन (उपरोक्त) संसाधनों में से वह कौन–सा तत्व है जिसे आप पहली बार उपयोग कर रहे हैं?
- ☞ कलीसिया स्थापन प्रक्रिया के किन क्षेत्रों में आप अगुवाई करने को दान प्राप्त किया है?
- ☞ आप किन क्षेत्रों पर जोर देना चाहेंगे ताकि आप आपके सेवकाई के अन्तर्गत सही ध्यान करने में आश्वस्त हो सकें?

इन अनिवार्य तत्वों की अन्तर्दृष्टि के लिये देखें:

[1] Brock, C. 1981. *Indigenous Church Planting*, Broadman Press, Nashville, Tenn.

परमेश्वर का राज्य और कलीसिया दोनों अविभाज्य है। जहॉ कहीं भी परमेश्वर का राज्य फैल चुका है, वहॉ कलीसिया ने एक चौकी के रुप में कार्य किया है जो नयी फसल को इकट्ठा कर उसे फॉलो–अप करते हुए दैहिक रुप प्रदान करता है। यीशु ने मरकुस 4:26–29 के दृष्टांत का उपयोग किया ताकि हमें कलीसिया स्थापन प्रक्रिया की एक जीवंत तस्वीर दी जा सके। खेती से उधार ली गयी दृष्टांत यह सुनिश्चित करता है कि इसका अर्थ आसानी से अनुवाद किया जा सकता है, और सांस्कृतिक अंतरों में समझा जा सकता है। इस तरह यीशु ने राज्य की सच्चाई को एक रुप से बंद कर दी है ताकि हर समय के हर लोग इसे आसानी से समझ सकें।

कलीसिया स्थापन के लिये आवश्यक तत्वों को स्वीकार करना केवल एक शुरुआत है, उन्हें उचित समय की अभ्यास में डालने में की प्रतिबद्धता और समझ की मांग होती है। प्रत्येक तत्व के लिये उचित संगठन भी बहूत जरुरी है। कटनी कभी भी बोने से पहले नहीं आती है। बोना कभी भी खेत में प्रवेश करने से पहले नहीं होता है। यदि फसल प्राप्त करना है तो ऐसे तत्वों को लागू करने के क्रम और समय को समझना, और उसके अनुसार काम करना बहूत जरुरी है। एक बार फिर बुवाई और कटाई की प्रक्रिया हमें उन सभी बातों को जानने का अवसर प्रदान करता है, जिसे हमें जानना चाहिये। यीशु ने बढ़ते हुए प्रक्रिया में प्रत्येक तत्व का उपयोग उचित रीति से किया, और ऐसा करने से हमें अनमोल औजार दिखाया। मरकुस 4 से हमें पता चलता है कि चार खेत फसल की ओर अगुवाई कर रहे हैं। इन चारों खेत की समझ एक कलीसिया स्थापक को प्रगति के लिये एक चिन्हात्मक स्तम्भ प्रदान करता है, और इसके साथ–साथ समर्पण का वह स्पष्ट दर्शन भी, जो कि फसल के अत्यावश्यक होती है।

कलीसिया स्थापन के चार खेत

मरकुस 4:26–29

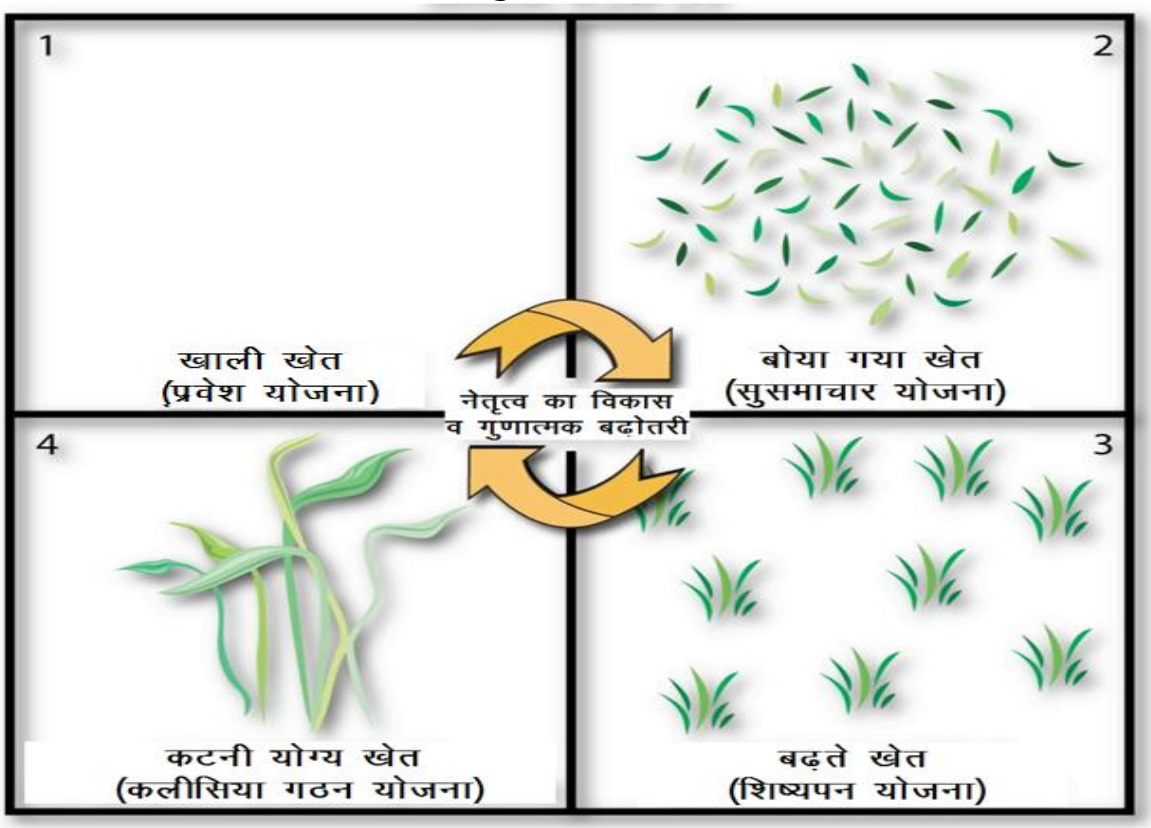

कलीसिया स्थापन के चार क्षेत्र (खेत) होते हैं।

खेत #1 - खाली खेत

एक किसान की तरह हमें भी प्रवेश की पद्धति पर ध्यान देने की जरुरत है।

कुंजी प्रश्न – *कैसे मैं एक नये खेत में प्रवेश करता हूँ?*

हम कहॉ से शुरु करते हैं? कैसे हम जानते है। कि कब और कहॉ हमें रोपना चाहिये? जब एक बाहरी व्यक्ति एक नये इलाके में प्रवेश करने का प्रयत्न करता है, या सुसमाचार के साथ लम्बी खड़ी अवरोधों को पार करता है; तो उसके लिये ये प्रश्न ध्यान देने योग्य बन जाता है। अन्यथा एक कलीसिया स्थापक गलत सलाह के साथ कार्य के द्वारा गुणवत्ता–युक्त फसल को बर्बाद कर देता है। ऐसे प्रश्नों के लिये बाईबलीय उत्तरों को समझ लेने से एक कलीसिया स्थापक को वाह्य–संचालित पद्धति से बदलकर आंतरिक आंदोलन के लिये एक सरल व स्पष्ट रणनीति मिल जाता है। पवित्रशास्त्र के अनुसार इसे **''प्रवेश रणनीति''** कहेंगे।

खेत #2 – बोया हुआ खेत

इस द्वितीय खेत के अन्तर्गत एक कलीसिया स्थापक इस सरल प्रश्न का सामना करता है।

कुंजी प्रश्न – मैं क्या कहता हूँ?

इस प्रश्न का उत्तर देना सरल जान पड़ता है, परन्तु जातीय और सामाजिक रुकावटों में सुसमाचार पेश करने की आवश्यकता कुछ और नहीं, परन्तु सरल है। विश्व–परिदृश्य, सुसमाचार का प्रत्युत्तर (अपोलोजेटिक्स), और सुसमाचार के अन्य तत्व की समझ ही इस कुंजी प्रश्न का जवाब का हिस्सा है। खेत # 2 की उचित समझ से सुसमाचार साझा करने के लिये एक कलीसिया स्थापक को अनुरुप और पुनरात्पादन–योग्य व प्रभावकारी उपकरण प्रदान हो सकेगा। पवित्रशास्त्र के अनुसार इसे **''सुसमाचार प्रस्तुति''** कहेंगे।

खेत # 3 – नयी बढ़ोतरी का खेत

अब एक कलीसिया स्थापक अपने मेहनत का फल देखना शुरु कर देता है। जैसे कि दाना अंकुरित होकर भूमि से निकलना आरम्भ कर देता है। अब किसान इस प्रश्न से सामना करता है।

कुंजी प्रश्न – कैसे मैं शिष्य बनाता हूँ?

इसे एक अन्य प्रकार से कहा गया है, कैसे मैं बढ़ोतरी में उन्नति कर सकता हूँ? बढ़ोतरी के शुरुआती चरण महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे ही भविष्य की सफलतापूर्ण फसल का निर्धारण करते हैं। फसल हर बिन्दु मे अति संवेदनशील होते हैं। इसी कारण पूर्ण रुपेण शुद्ध बाईबलीय नींव की प्रस्तुति के लिये चिंता करना चाहिये जिस पर भावी बढ़ोतरी बनाया जा सके। इस कारण से हम **''अल्पकालिक और दीर्घकालिक शिष्यत्व''** योजनाओं के संदर्भ में शिष्यत्व का उल्लेख करेंगे।

खेत # 4 – कटनी का खेत

यह खेत पर्व के समय को प्रस्तुत करता है। जब फसल कट जाता और बांध लिया जाता है, तो कलीसिया स्थापक निम्नलिखित प्रश्न का सामना करता है।

कुंजी प्रश्न – *कैसे मैं कलीसिया का गठन करता हूँ?*

इस प्रश्न का उत्तर ठीक से नयी कलीसियाओं के दीर्घकालिक विकास और स्वास्थ्य को सुनिश्चित करेगा। बाईबल में उदाहरण और प्रत्यक्ष आदेश के माध्यम से इस प्रश्न के उत्तर में बड़ी मात्रा में सामग्री पाई जाती है। जैसे कि हम बाईबल में पाते हैं, इस योजना को **''कलीसिया गठन''** कहेंगे।

अगुवापन में (गुणात्मक) बढ़ोतरी

कुंजी प्रश्न – कैसे में अगुवों को विकसित करता और गुणात्मक वृद्धि करता हूँ?

अन्ततः प्रक्रिया अपने आप दोहराती है। जब कटनी इकट्ठा की जाती है, तो किसान या कलीसिया स्थापक को दो चीजें दी जाती हैं। पहला आत्मिक संसाधनों व वरदानों के रुप में इकट्ठा की गयी कलीसिया के लिये पर्याप्त भोजन। दूसरा, अगली खेती के लिये बहूतायत से बींज। हमारे पास जो संसाधन उपलब्ध हैं, वह हमें निम्नलिखित प्रश्न पुछने को अग्रसर करता है।

प्रत्येक खेत एक किसान या कलीसिया स्थापक के लिये एक खास प्रश्न प्रस्तुत करता है।

खेत #1 - खाली खेत कुंजी प्रश्न – कैसे मैं एक नये खेत में प्रवेश करता हूँ?

खेत #2 – बोया हुआ खेत कुंजी – हम क्या कहते हैं? हम इसे किससे कहते हैं?

खेत # 3 – नयी बढ़ोतरी का खेत कुंजी प्रश्न – कैसे मैं शिष्य बनाता हूँ?

खेत # 4 – कटनी का खेत – कैसे मैं कलीसिया का गठन करता हूँ?

सामूहिक रुप से इन पॉच भागों को ''कलीसिया स्थापन के पॉच भाग'' के नाम से जाना जाता है।[2]

प्रवेश रणनीति सुसमाचार प्रस्तुति शिष्यपन कलीसिया गठन अगुवापन में गुणात्मक बढ़ोतरी

[2] इन पांच भागों को पहले नील एम.आई.एम.एम के शिक्षण में संग्रह के रुप में प्रस्तावित किया गया था।

''पॉच भागों'' का मूल्यांकन किया जाना

इससे पहले कि हम इन ''पांच भागों'' का परिक्षण शुरु करें, यहॉ रुकना उचित होगा। कोई आदर्श योजना नहीं है, और न ही कोई आदर्श कलीसिया स्थापक। हम में से प्रत्येक तेज हो सकते हैं। हमारी सेवकाई के ध्यान–केन्द्र का मूल्यांकन, और उपकरण हमें पुनरात्पादन आदर्श की ओर आगे लिये चल सकता है, और उच्च मूल्य वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देने में मदद कर सकता है। हमारे नेटवर्क की ताकत और कमजोरियों का आकलन करने की इच्छुकता इस प्रशिक्षण पुस्तिका को संक्षम करने के लिये उचित सामग्री प्रदान करेगा।

प्रशिक्षण के लिये संभावित नेटवर्क का मूल्यांकन भी मरकुस 4 द्वारा संचालित किया जा सकता है। प्रत्येक पांच भागों में शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करने के लिये निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें। ये प्रश्न अधिकार, पुनरात्पादन, और विद्यमान मानव संसाधनों की जुटाई के मुद्दों का मूल्यांकन करने के लिये डिजाइन किये गये हैं।

प्रवेश रणनीति

सुसमाचार के लिये कितने गॉव/समुदाय खुले हैं?

कलीसिया स्थापन की कितनी धाराएं आगे बढ़ रही हैं? क्या आप उसे मानचित्र में दिखा सकते हैं?

सुसमाचार प्रस्तुति

खेत में कितने बीज बोनेवाले हैं?

आज कितने लोग सुसमाचार सुनेंगे?

कलीसिया गठन

कितनी कलीसियाएं स्वतंत्र भाव से कलीसियाई अध्यादेश का अभ्यास करती है?

क्या वहॉ पांच कार्य वर्तमान हैं?

शिष्यपन

कितनी बपतिस्मा हुई? उसका प्रतिशत क्या है?

कितने नये समूहों का गठन किया गया है?

अगुवापन की (गुणात्मक) बढ़ोतरी

क्या वहॉ द्वितीय पीढ़ी की कलीसिया पाई जाती है,? और तीसरी पीढ़ी?

क्या आप नियंत्रण में हैं?

आरम्भ ही से इन प्रश्नों को परखने के लिये गंभीरता से समय लेना और प्रभु के सामने अपनी योजना को रख देना; ये दो ही हमारी सेवकाई में मददगार होगी जैसे कि हम अपने उपकरण के बारे में सलाह देते हैं। जो अगुवा बनना चाहते हैं या साथ में अध्ययन करना चाहते हैं, उन्हें बताने के लिये इन प्रश्नों के बारे में बताने के लिये समय लें।

चार खेतों का मूल्यांकन करना

मूल्यांकन करने के लिये समय लें, चाहे वो आपके नेटवर्क के क्षेत्र हों, या पहले से ही वर्तमान नेटवर्क में जहॉ आप प्रशिक्षण दे रहे हैं।

बल के कौन–कौन से क्षेत्र हैं?

किन क्षेत्रों में सुधार की जरुरत है?

कमजोरी के किन्हीं भी इलाकों का पता लगाने के लिये योजना बनायें।

क्या ये कमजोरी बाधाओं के कारण हैं, या सरल भाव से ध्यान करने में कमी के कारण?

वो बाधाएं क्या–क्या हैं? –

आपके पास क्या संसाधन उपलब्ध हैं जो आपको इन क्षेत्रों में बल देने में सहायक हो सकता है?

क्या आपके नेटवर्क में ऐसे लोग हैं जो आपको इन क्षेत्रों में आदर्श बल दे सकता है?

क्या आपका केलेण्डर इन कमजोरियों को दिखाने में प्राथमिकता देता है?

आपने मरकुस 4 से क्या–क्या पाठ सीखा है जो इन कमजोरियों का सामना कर सकता है?

उपकरणों और पद्धतियों का मूल्यांकन करना

एक कलीसिया स्थापक का दर्शन उन उपकरणों व रणनीतियों के प्रकार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो आगे चलकर वह उपयोग करेगा। उनके लिये जो एक कलीसिया स्थापन करना चाहते हैं, पुनरात्पादन का बिषय थोड़ी परिस्थिति–जनक है। जो एक दर्शन के साथ कलीसिया बढ़ोतरी के लिये नई कलीसिया की शुरुआत करने के द्वारा पीढ़ियों को आगे बढ़ाती है, तो उस बड़े दृश्य में स्थानीय विश्वासियों के द्वारा संचालित उपकरणों और रणनीतियों की मांग होती है। हालांकि यह आज की विशिष्ट कलीसिया स्थापन के कार्यकत्ताओं के लिये एक चुनौती प्रस्तुत करता है, तौभी यह संभव है। पुनरात्पादन के बिषय में निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें, क्योंकि हम कलीसिया की स्थापन योजनाओं और सामग्रियों का मूल्यांकन करते हैं।

प्रथम, क्या हमारे उपकरण और योजनाएं आज्ञाकारिता/जवाबदेही पर आधारित है?
मत्ती 28:10–20

कलीसिया स्थापन योजनाओं में आज्ञाकारिता को केन्द्र में रखना सिर्फ एक सलाह मात्र नहीं है। यह मसीह की आज्ञा है। मत्ती अध्याय 28 में, हम महान आदेश के बारे में पढ़ते हैं। यीशु नें हमें शिष्य बनाने के लिये आदेश दिया है। वह हमें ऐसे शिष्यपन के लिये नजरिया भी देता है।

पढ़ें मत्ती 28:10–20 और इस प्रश्न का उत्तर दें।

हमें अपने शिष्यों को क्या सीखायेंगे?

मत्ती 28:10–20

इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।

अधिकांश समय जब हम इस प्रश्न को पुछते हैं तो तुरन्त जो उत्तर निकलकर आता है, वह हैः ''हमें मसीह की आज्ञा मानना सीखाना चाहिये।'' तौभी यह सही उत्तर नहीं है। जब हम करीब से नजर डालते हैं, तो पाते हैं कि यीशु ने और अधिक खास आदेश दिया था। शिष्य बनाने का कार्य यीशु की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता सीखाना है। सिर्फ आज्ञाओं को सीखाने से स्वस्थ्य शिष्य कभी नहीं बन सकता है। यह आज्ञाकारिता ही है जो एक व्यक्ति को सही मार्ग में लेकर चलता है। आज्ञाकारिता आदेश का केन्द्र है। इस दुध के बिना, एक शिशु कभी भी परिपक्वता देख नहीं पायेगा, और न ही उन उपकरणों व रणनीतियों का पुनरुत्पादन करने में सक्षम होगा, जिसे हमने व्यय किया है।

यहॉ इस बात को ध्यान दिया जाना चाहिये, आज्ञाकारिता के नमूने को सीखाना – मसीह के आदेश को सीखाने से कहीं अधिक आसान कार्य है। मसीह की शिक्षाओं को ग्रहण करना जीवन भर का कार्य है। इन जारी रहनेवाली आज्ञाकारिता की आदत, तौभी हमारे अल्प–कालिक शिष्यपन में सीखाया जा सकता है।

आज्ञाकारिता की आदत एक शिष्य को जीवन भर सेवा करती रहेगी, क्योंकि पवित्रशास्त्र में मसीह की आज्ञाकारिता के लिये नयी चुनौतियां और उपयोगिताएं प्रगट की गयी हैं। मसीह की आज्ञा को उपयोग में लाने के लिये जो सरल कार्य किये जा सकते हैं, वे हैंः देना, प्रेम करना, और शुभ संदेश बांटना। यही स्वस्थ्य कलीसिया की शुरुआत के लिये आरम्भिक बिन्दु है।

आज्ञाकारिता को मापने के लिये जवाबदेही की मांग होती है। हमारे कलीसिया स्थापन प्रयत्नों के अन्तर्गत आज्ञाकारिता पर आधारित कार्य में नित्य प्रति–पुष्टि (फीड–बैक) शामिल रहना चाहिये, जो मसीह के प्रभुत्व में परस्पर आधीनता के लिये प्रोत्साहन करने में सक्षम हो। अपने कलीसिया स्थापन गतिविधियों के सत्र में ऐसी जवाबदेही सत्र को शामिल करने के लिये समय लें।

द्वितीय, क्या आपके उपकरण और योजनाएं इस जवाबदेही की गारंटी देती है कि यह नये विश्वासियों को चुनौती देगी? 1 कुरिन्थियों 14:26

जैसे कि याकुब हमें स्मरण दिलाता है, ''कर्म बिना विश्वास मरा है'' (याकुब 2:26)। इस बात को ध्यान में रखते हुए, हमें उम्मीद रखना चाहिये और अपने शिष्यों को वचन की उपयोगिता के लिये आदेश देना चाहिये। ऐसे कार्य को बढ़ावा देने के लिये एक कुंजी तत्व हैं, वह हैः जिम्मेवारी सौंपना।

कल्पना करें कि एक किसान अपने खेत में बीज बोता है, और चार महिनों के लिये बाहर चला जाता है। इसके समय के अन्त में वह वापस आता है, परन्तु वह यह देखकर दंग रह जाता है कि उसने जो बीज बोया था, उसने कोई फसल नहीं लाया। इस प्रकार के किसान को मूर्ख कहा जायेगा। उसने वही पाया, जिसका वह हकदार था। मान लें कि दूसरी ओर एक सफल किसान है, वह अपने फसल की देखभाल करता है। पर्याप्त सिंचाई की जाती है, और जहॉ मिट्टी हल्की है, वहॉ वह खाद डालता है। यह खाद आश्वस्त करता है कि अब जरुरत के अनुसार भूमि उपजाऊ हो चुकी है, और इससे फसल बढ़ेगी। कलीसिया स्थापक को इसी खाद की मानिन्द जिम्मेदारी पर ध्यान देना चाहिये। जिम्मेदारी से शीघ्र बढ़ोतरी को बढ़ावा मिलता है। इसके बिना, बढ़ोतरी के लिये क्या मकसद रह जाता है?

कलीसिया स्थापन में – जिम्मेवारी ही खाद है!

मैंने कई चर्चों में शिष्यत्व का दौरा किया और प्रयास किया, जिनमें दर्शन की कमी थी। सक्रिय भागीदारी के बजाय, सामान्य तौर पर यह माना गया था कि उनकी भूमिकाओं में केवल दर्शकों का होना था। अन्य मामलों में जिन लोगों ने देह के अन्तर्गत ऐसी जिम्मेदारियां ली थी, वे प्रतिनिधिमंडल का विस्तार करने में मंडली में खो गये। किसी भी मामले में, देह के जीवन में योगदान के मूल्य को कम करके आंका गया था, जिससे पुनरुत्पादन क्षमता में गिरावट आई थी।

कलीसिया स्थापक के लिये नेतृत्व में दूसरों को सलाह देना, विश्वासियों की खोज और उनके आध्यात्मिक वरदानों के अभ्यास पर निर्भर करता है। इस प्रकार के संचालनीय कार्यों के द्वारा नये विश्वासियों को चुनौती देने से, जो ऐसे वरदानों से संचालित होता है; उनके परिपक्वता को आगे बढ़ाता है। उन्हें मसीह में अपनी पहचान को जान लेना और देह में उनका अभिनय ही उनकी क्षमता तक पहूॅचने की कुंजी है। जिम्मेवारी देने से यह दरवाजा खुल जाता है।

तृतीय, क्या आपके उपकरण और योजनाएं बढ़ोतरी की उम्मीद व पूर्वाभास करती है? क्या यह आदेश देती है? 2 तीमुथियुस 2:2

सेवकाई का सबसे बड़ा आनन्द शिष्य बनाने में नहीं है, बल्कि यह देखने में है कि आपके शिष्यगण अपने शिष्य बना रहे हैं। शुरु से ही पौलुस का शिष्यपन का ध्यान पुनरुत्पादन पर केन्द्रित था। जो पुनरुत्पादन की इच्छा रखते हैं, उनकी वही प्राथमिकता होगी जो उसनें सीखा है। हम मान सकते हैं कि इसका विपरित भी सही है। जिन्होंने पुनरुत्पादन नहीं किया, उन्होंने नेतृत्व के पद को नहीं भरा।

2 तीमुथियुस में, पौलुस इस अधिकार को अपने शिष्यों को देता है। पुनरुत्पादन की इस नीति पर ध्यान करेंः

2 तीमुथियुस 2:2

और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे;
जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

इस पद के अन्तर्गत विश्वासियों की चार पीढ़ियों को देखा जा सकता हैः

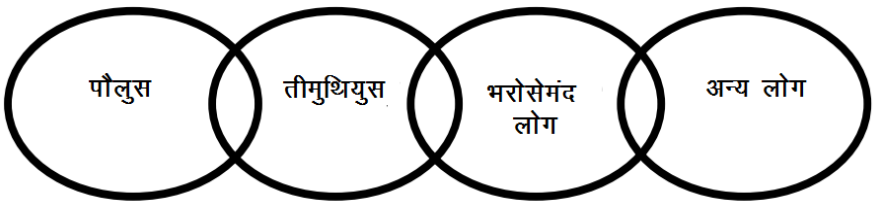

यह शिष्यपन श्रृंखला है। ठीक जैसे कि पौलुस नें तीमुथियुस की विश्वासयोग्यता की पहिचान की, कि वह मसीह के अन्य शिष्यों को श्रंखलाबद्ध करे। वैसे ही तीमुथियुस को भी उन लोगों पर व्यय करना था जो कलीसिया स्थापन के लिये पौलुस के नमूने का पुनरुत्पादन करेगा। जो कलीसिया स्थापनक अपनी सेवकाई में इस वचन को लागू करता है, वह वैसे ही श्रृंखला को उभरते देखेगा। हम इस श्रृंखला को 222 कहेंगे, ऐसा कहने की नीति 2 तीमुथियुस 2:2 से लिया गया है।

कलीसिया स्थापन श्रृंखलाओं के इन बलों पर ध्यान करें:

1. सीखने के लिये दूसरों को सीखाना एक बड़ा औजार है, शिष्यों के लिये पुनरुत्पादन की पाठ और सामग्री – पाठ की मांग करता है और इसके महत्व को मजबुत करता है।

2. शिष्यपन एक छोटे समूह या एक–एक के साथ उत्तम है। ऐसे रिश्तों के लिये शिष्यपन का प्रतिनिधित्व करने से गुण का विस्तार होता है।

3. एक श्रृंखला के माध्यम से विभिन्न स्थानों में सेवकाई को बनाये रखा जा सकता है। प्रेरितों के काम में पौलुस के उदाहरण को देखें।

4. जैसे कि अधिकार और जिम्मेवारी को हस्तांतरित किया जाता है, तो इससे घटनाक्रम में ''पौलुस'' की हानि से बचा जा सकता है।

222 स्वर्ग राज्य की कुंजी है!

चतुर्थ, क्या आपके औजारों और योजनाओं को आसान बनाने के लिये अंदरुनी सुत्रों का उपयोग किया जाता है? तीतुस 1:5

आपके कलीसिया स्थापन दर्शन के अन्तर्गत कौन अगुवाई करता है? यदि उपकरण और योजनाएं आंदोलन को तेज करने या सीखाने के लिये बाहरी लोगों पर निर्भर हों तो इससे बढ़ोतरी नहीं होंगी। कलीसिया स्थापक को अवश्य ही खेती से जुड़ी बातों को याद रखने की जरुरत है, जो उसी खेती में पाई जाती है। इसमें इफिसियों 4 में लिखित कलीसिया में सीखाने के लिये शिक्षक शामिल हैं।

कई बार अग्रणी कलीसिया स्थापक पूर्वानुमानित जरुरतों के कारण पटरी से उतर जाते हैं, कारण वे बाहरी शिक्षा के प्रति खुले होते हैं। हमने सैकड़ों उगते अगुवो को उदाहरण स्वरुप देखा है, जिन्हें संदर्भ के बाहर सघन शिष्यपन प्रशिक्षण में शामिल होने के लिये भेज दिया जाता है। कई बार यह अगुवा को उसके शिष्यों से संबंध–विच्छेद कर देता है, और एक अन्देखा सीमा खड़ा कर देता है। इन कठिनाईयों पर ध्यान दें।

1. जो अगुवे बाहर जाकर प्रशिक्षित हुए हैं, अब उनका एक खास स्तर है, और औसतन विश्वासियों के लिये अन्–उपलब्ध है। ऐसा स्तर वह नमूना नहीं है जिसे पवित्रशास्त्र में गया हो।

2. निर्भरता विश्वासियों के मन में होता है, जब कलीसियाई पूर्वापेक्षा परिवार व नौकरी छोड़ने की योग्यता होती है; ताकि आवासिय शिष्यपन कार्यक्रम में शामिल हुआ जा सके।

कोई भी कलीसिया स्थापन प्रयत्न, जो अपने ही फसल से शिक्षकों को खड़ा नहीं करती है; यह आश्वस्त करने के उनका मूल्यांकन किया जाना चाहिये कि सामग्रियां संदर्भ में समा रही है। वे सामग्रियां जिन्हें बाईबल के पूर्व–ज्ञान से पहले ही मान लिया जाता है; नये स्थानों के लिये उचित नहीं ठहरेगी। कलीसिया स्थापक को विश्वास करना चाहिये कि विश्वासियों में दूसरों को संचालन करने की क्षमता पाई जाती है। [3]

[3] उपकरण के लिये देखें खेत #3 के अन्तर्गत ''बाईबल स्टडी मेथड्स''। इसे नये विश्वासीगण अन्य लोगों को शिष्य बनाने के लिये ठोस बाईबलीय शिक्षा के साथ उपयोग कर सकते हैं।

पंचम्, क्या आपकी योजना व उपकरण विश्वासियों को स्वः–अनुसंधान के लिये आगे धकेलती है? 2 तीमुथियुस 3:16–17

यूहन्ना 14:26 आज भी लागू किया जाता है। पवित्र आत्मा अभी भी सलाहकार है। वह मसीह के शिष्यों को सब बातें सीखाने, और उन्हें मसीह के वचन स्मरण दिलाने के लिये जिम्मेदार है। ये पाठ केवल कक्षा–कमरा तक ही सीमित नहीं हैं। पवित्र आत्मा चौबीसों घंटे सातों दिन अपने कार्य पर लगा है। कलीसिया को पवित्रशास्त पवित्र आत्मा के उपकरण के रुप में प्रदान किया जाना चाहिये। नये शिष्यों के लिये वचन के निर्देशानुसार उसकी संगति में चलने सीखना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिये।

कलीसिया स्थापक को पवित्र आत्मा के हाथों में वचन की पूर्ति में आत्म–विश्वास सीखना चाहिये। वचन पढ़ना और उस पर मनन करना, और इसकी उपयोगिता को कलीसिया स्थापन के लिये उपयोग करना एक ऐसा माहौल पैदा करता है, जिससे हम जीवन भर सीख सकते हैं। यह आत्म–आहार को सक्षम करता है, और निरंतर कलीसिया स्थापन की कोशिश के लिये ईंधन का एकमात्र स्रात प्रदान करता है। इसके बिना शिशु कभी परिपक्वता तक नहीं पहुंचता है। स्वस्थ शिष्य वह होता है जिसे पता है कि भोजन कहॉ खोजना है।[4]

कलीसिया स्थापक को शुरु से ही पासबानीय देखभाल के उत्तरदायित्व, और भागीदारी बाईबल अध्ययन के प्रति जोर देना चाहिये। एक परामर्शदाता के रुप में सिर्फ भाषण देना पासबानी कार्य में निष्क्रियता पैदा करता है। शिष्य के अर्थ को प्रोत्साहित करना और वचन को उपयोग में लाना, पवित्र आत्मा के निर्देश को सक्षम करता है और शिष्यों को उसकी आवाज सुनने में इच्छा उत्पन्न करता है। परमेश्वर और विश्वासी के बीच वार्तालाप ही सच्ची शिष्यता और मजबुत कलीसिया स्थापन दल के लिये नींव है।

षष्ठ, क्या आपके उपकरण व योजनाएं स्वाभाविक रीति से कलीसिया गठन की ओर अगुवाई करती है?

अंतः लक्ष्य हमेशा स्वतंत्र कलीसिया होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारे द्वारा बनाये गये औजारों व योजनाओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिये; ताकि एक ऐसा वातावरण सुनिश्चित किया जा सके जो चर्च समारोह में स्वतंत्र रुप से बहता हो। पांच भागों के भीतर हमारे बदलावों का मूल्यांकन किया जाना चाहिये, जिससे कि ''तेजी'' जो कि विश्वासियों को पहले से रगड़ने के कारण बनने का कारण बनता है, लगातार निरंतर समाप्त हो जाता है।[5] उदाहरण के लिये अनुशासन शुरु करना, मसीह के आदेशों के लिये दैह–जीवन, सामूहिक पहचान और आपसी जिम्मेवारी को शामिल करना चाहिये।

कलीसियाई समारोह प्रायः शिष्यत्व का एक नज़रअंदाज किया गया पहलू है। आराधना, संगति, सेवकाई, और मिशन में शिष्य होने की भूमिका स्वस्थ बढ़ोतरी का हिस्सा है।

सारांश

इन तत्वों में से सभी स्वीकारे जाने के योग्य है, जैसे कि हम इस प्रश्न का उत्तर देते हैः क्या यह पुनरुत्पादनीय है?

कलीसिया स्थापक के लिये बाहरी सामग्रियों से परिचय करना/कराना खतरनाक है। हरेक नये उपकरण, अस्त्र, किताब, परम्परा, और उम्मीद जो एक कलीसिया स्थापक के मन में उठता है; वह कलीसिया स्थापन में एक दरार खड़ा करता है।

---

[4] उपकरण के लिये अध्याय चार के अन्तर्गत ''बाईबल अध्ययन पद्धति'' शीर्षक देखें, जो बाईबल अध्ययन में पवित्र आत्मा के नेतृत्व पर जोर देती है।

[5] यहॉ यह ध्यान दिया जाना चाहिये कि लेखक अपने स्वयं के प्रयासों में चोट करनेवाली बिन्दुओं को समाप्त करना नहीं चाहता है। रुकावटें हमेशा रहेंगी, और इसकी उम्मीद की जानी चाहिये। बल्कि, वह पहचान करने के लिये अपना समर्पण को इंगित करना चाहता है, और जैसे ही वे प्रस्तुत होते हैं उसे समाप्त कर देता है।

- ☞ उपकरणों की पसंद राय की बात है।
- ☞ छुट्टी की परम्परा को पवित्रशास्त्र में नहीं बताया गया है।
- ☞ बुंनियादी ढांचा एक विलासिता है, आवश्यकता नहीं।

दर्जनों क्षेत्रों में से केवल तीन हैं जहॉ एक कलीसिया स्थापक अज्ञानतावश कलीसियाई परम्परा का परिचय दे सकता ह, जो पुनरुत्पादन योग्य रणनीतियों में बाधा बन सकता है।

पुनरुत्पादन क्षमता को समझने के लिये फसल क्षेत्र में पेश किये गये सभी उपकरण, सामग्री, परंपरा की सूची बनाने से मदद मिलता है। भजन की पुस्तक, गिटार, बपतिस्मा लेनेवाले और यहॉ तक कि कुर्सियों का भी मूल्यांकन किया जाना चाहिये। सूची की कोई भी चीजें यदि संदर्भ में न हों तो उसे सावधानीपूर्वक जांच करनी चाहिये। यदि पवित्रशास्त्र में उसकी मांग न की गयी हो, तो उसका त्याग करना चाहिये। ऐसा करने से सुनिश्चित होगा कि कलीसिया उस मिट्टी के लिये स्वदेशी है। यह प्रक्रिया आगे बढ़नेवाले वित्तीय बोझ को रोक सकती है जो अक्सर गुणन के लिये संभावित रुप से अपंग होती है।

वह उपकरण जिसे हम अपनी प्रवेश रणनीति, सुसमाचार प्रस्तुतिकरण, शिष्यत्व सामग्री और कलीसिया गठन के लिये लागू करते हैं, उसका भी मूल्यांकन किया जाना चाहिये। सामग्रियों को लोगों की दिल की भाषा में उपयोग करना चाहिये। लोगों के बीच में अलिखित भाषा, या अधिकाधिक परम्परागत मौखिक शिक्षण शैली या मौखिक सामग्रियों को आसानी से विकसित किया जा सकता है।

<u>प्रशिक्षक के लिये औजार</u>

जैसे कि आप इस हस्त–पुस्तिका में दिये गये सामग्रियों को उपयोग करते हैं, आप हर भाग के अन्त में इन्हीं प्रश्नों को बार–बार पायेंगे। 6–10 के समूह में समय लें, और सलाह दी गयी उपकरण व रणनीतियों का मूल्यांकन करें। विचार–विमर्श के लिये इन प्रश्नों पर ध्यान करें। बल पर निर्माण करने की चाह रखें, और यदि आपकी पद्धति में कोई कमजोरी है तो उस पर सुधार करने के लिये कदम उठायें।

ध्यान देने के लिये प्रश्नः

क्या यह आज्ञाकारिता और जवाबदेही पर आधारित है?

क्या यह जिम्मेदारियों को मंजुरी देता है?

क्या यह बढ़ोतरी की योजना बनाता है?

क्या यह अंदरुनी लोगों के द्वारा सहायता किया जाता है?

क्या यह आत्म–खोज पर निर्भर होता है? क्या यह कलीसिया गठन के लिये अगुवाई करता है?

क्या यह पुनरुत्पादनीय है?

प्रत्येक ''हॉ'' उत्तर को व्याख्या करें। ये सभी क्यों जरुरी हैं?

खेत # 1 – पुनरुत्पादनीय प्रवेश रणनीति

उद्देश्यः

– एक सर्वोत्तम अभ्यास की खोज में आम प्रवेश रणनीतियों का मूल्यांकन करना।

– ''बाहरी लोगों का अंदरुनी लोगों में'' स्थानांतरण और इसके महत्व को समझना।

– विश्वास – प्रवेश के लिये यीशु के उदाहरणों और विधियों के लिये बच्चों की तरह आज्ञाकारिता।

खेत #1 एक खाली खेत है। इसी भूमि में फसल की सारी गुणवत्ता लिपटी हुई है। एक कलीसिया स्थापक को यह मानकर चलना होगा कि प्रत्येक नया खेत, चाहे वो शहरी हो, या ग्रामीण; उसमें भाग होते हैं जिसे बीज के लिये तैयार किया जाता है। यह कलीसिया स्थापक के लिये विश्वास का एक मामला है। अवश्य ही पवित्र आत्मा पर भरोसा किया जाना चाहिये ताकि वह उसके प्रयत्नों से पहले सुसमाचार के लिये मार्ग तैयार करे। इस मामले में कोई भी असफलता जिसमें आत्म–निर्भरता झलकती है; वह गुणकारी रीति से कलीसिया स्थापन प्रयत्नों में एक रोक डाल सकता है। जैसे कि कार्यकर्त्ताओं के द्वारा इस प्रकार के खेत से मुलाकात होती है, तो उन्हें अवश्य ही यह प्रश्न पुछना चाहियेः

कुंजी प्रश्न – कैसे मैं एक नये खेत में प्रवेश करता हूँ?

जैसे हम पवित्रशास्त्र में देखेंगे, इस प्रश्न का उत्तर उचित रीति से इस पहचान के साथ शुरु और अन्त होता है, कि पवित्र आत्मा कार्य पर है और उसके साथ उसके कार्य में जुड़ जायें। परमेश्वर की इच्छा यह है कि ''कोई भी नाश न हों... (2 पतरस 3:9)। जब हम इसे सच मान लेते हैं, तो कई बार हमारी रणनीतियां इसकी उपयोगिता को अपनाने में असफल हो जाती है। परमेश्वर हमलोगों से बढ़कर खोये हुओं के लिये तरस रखनेवाला है। यहॉ तक कि दुनिया के कम से कम पहूँचे लोगों के बीच हमारी बुलाहट की अस्वस्थ दृष्टिकोण और समय पर परमेश्वर के दृष्टिकोण का प्रकाश चमकना चाहिये; और कटनी के लिये परमेश्वर की अत्यावश्यकता को समझना चाहिये। जो सच में यह विश्वास रखते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें अपनी इच्छानुसार रखा है, उन्हें उसकी लागत को भी समझना चाहिये;[6] कि परमेश्वर ने उनके पहूँचने से पहले ही भूमि को तैयार करने के व्यवसाय में लगा हुआ है।[7] जो भूमि पथरीली व बंजर थी, उसे जोता गया और उपजाऊ बनाया गया है। इसलिये कलीसिया स्थापक इस समझ के साथ संचालित किया जाता है कि परमेश्वर अपनी शामिलता की बुलाहट के द्वारा कार्य पर है।

हमारे लक्ष्यित खेतों में परमेश्वर की शामिलता का आश्वासन उसके गतिविधियों को परखने का आश्वासन नहीं देता। परमेश्वर के एजेंडा और समय के साथ हमारा जुड़ना कोई आसान काम नहीं है। इसी कारण यीशु ने अपने शिष्यों को स्पष्ट निर्देश दिया था, जो वचन में जानबुझकर सुरक्षित रख दिया गया था।

लुका अध्याय 10 में यीशु के प्रवेश रणनीति को प्रगट किया गया है। इस अध्याय पर गौर करेंः

---

[6] देखें प्रेरितों के काम 17:26–27 – पौलुस कहता है, ''उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है। कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं!

[7] एक खाली खेत किसी आसान कार्य का संकेत नहीं देता है। इसे अन्य खेत की तरह ही बीज बोने के लिये तैयार किया जाना चाहिये। पत्थर और कंकड़ों को साफ करना, भूमि को जोतना और तैयार करना चाहिये। कोई हानिकारक कंटीली झाड़ी जो नये पौधों को नुकसान पहूँचायेगी, उन्हें उखाड़ फेंकना चाहिये। यहॉ जो काम दिया गया है, वह कार्य परमेश्वर का है। कई बार यह सच है कि कलीसिया स्थापन के लिये दसकों की प्रार्थना की जरुरत होती है। यह भी सच है कि कई लोग प्रार्थना के मध्य उत्तर देखने में असफल हो जाते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने द्वार तो खोला था, परन्तु पहचान न सके।

और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा। और उस ने उन से कहा; पक्के खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं: इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे। जाओ; देखों मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेडियों के बीच में भेजता हूं। इसलिये न बटुआ, न झोली, न जूते लो; और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो।

जिस किसी घर में जाओ, पहिले कहो, कि इस घर पर कल्याण हो। यदि वहां कोई कल्याण के योग्य होगा; तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगा। उसी घर में रहो, और जो कुछ उन से मिले, वही खाओ पीओ, क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए: घर घर न फिरना। और जिस नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें उतारें, तो तो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए वही खाओ। वहां के बीमारों को चंगा करो: और उन से कहो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।

लुका हमें इस भेजे जाने के विशिष्ट संदर्भ देने के मामले में सतर्क है। जैसे कि यीशु अपने पिता के उद्देश्यों को पूरा करता जा रहा था, तो यहूदिया और गलीली इलाकों में सुसमाचार का खुलासा होता जा रहा था। यीशु के लिये, यह मिशन नये खेतों, शहरों, और घरों में प्रवेश की मांग करता है। पद 1 इसके उद्देश्य और यीशु के रणनीति के अन्तर्गत शिष्य के उपयोग का विस्तार देता है। शिष्यों को भेजा जाना कोई अचानक घटनेवाली बात नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक जोड़ी को खास रीति से नियुक्त किया गया शहर के बारे में बताता है जहॉ उन्हें बोना है। इन शहरों का चयन यीशु ने उन्हें प्रवेश करने के लिये प्रमुख योजनाओं के कारण किया था। पद 1 में और इन बातों के बाद प्रभु ने –

> सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।

यीशु ने जल्दबाजी नहीं की, बल्कि शिष्यों को विस्तारित निर्देश दिये गये जिसे उसके जाने से पहले पूरा किया जाना था।

इस पहुंच के लिये कई कारण संभव हैं। हम जानते हैं कि जिन शिष्यों को इस तरीके से भेजा गया था, उन्होंने अपने कार्य–प्रशिक्षण में आत्मा के कार्य करने के परख को प्राप्त किया था। हर गांवों में शिष्यों के पहुॅचने से पहले ही आत्मा पहुंचकर लोगों के हृदय को तैयार करता था ताकि वे मेल के सुसमाचार को ग्रहण कर सके। क्षेत्र में रहकर ही उसकी उपस्थिति को अच्छी रीति से परखा जा सकता है। हम आगे कह सकते हैं कि यीशु ने योजना बनाई और फिर शायद उसने शिष्यों के सूचना को आधार बनाते हुए यात्रा को प्राथमिकता दिया। यीशु का अनुवर्त (फॉलो–अप) निश्चित रुप से क्षेत्रों को शामिल करेगा, जहॉ चेलों को काम पर आत्मा मिल गयी थी। इस भेजे जाने से कई गुणा प्रभाव पैदा हुए, कई गॉवों तक पहुंचने में अपनी यात्रा को प्राथमिकता देने के लिये परिणामों को छान लिया गया। अन्ततः यद्यपि यीशु अपने यहूदी शिष्यों को यहूदी शहरों और घरों में भेज रहे थे, उन्हें अजनबी माना जा रहा था। यीशु ने भी वही मुश्किल का सामना किया, जिसे आज हम करते हैं। स्थापित विश्व–दृष्टिकोण, निर्णय लेने और सामाजिक संरचनाओं के तरीकों वाले लोगों को मौलिक भिन्न संदेश पेश करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है? इस सवाल का उत्तर देने का अर्थ है किसी बाहरी व्यक्ति को लेकर अंदरुनी संचालित आंदोलन में बदल देना।

ऐसी जानकारी पेश करनेवाले किसी के लिये सबसे बड़ी बाधा मेजबान संस्कृति की धारणा है कि साझा किये गये विचार विदेशी हैं। मिशियोलॉजी के भीतर इस बाधा का एक आम सामाधान यह है कि संस्कृति को एक विशेष आबादी के सामाजिक चक्र में प्रवेश करने की आशा में गोद लिया जा रहा है। ये प्रयास विश्वास की स्थापना में समापन होता है, और बाहरी लोगों को समुदाय के भीतर एक आवाज प्राप्त करने की अनुमति दी जाती है। हालांकि इस विधि को अत्याधिक सम्मानित किया जाता है; लेकिन कठिनाई इसकी नींवगत धारणा से आती है। यह पद्धति गैर–सांस्कृतिक मिशनरी को मानता है, जिसे अन्दर आना चाहिये। इसमें महिनों की मांग होती है, यदि नही ंतो कई समुच्चों में सालों लग जाते हैं।

यीशु के कार्य की अत्यावश्यकता विभिन्न पहुंच की मांग करता है। घंटे भर में या भेजे जाने के दिनों बाद, शिष्यों के द्वारा आनन्द से भरा सुचना सख्ताई से पूर्ण भिन्न पद्धति के गुणों से भरा फल को प्रगट करता है।

यीशु ने बाहरी लोगों को नहीं भेजा ताकि वे अंदरुनी लोग बन जायें; बल्कि उसने उन अंदरुनी लोगों को ढुंढ़ने भेजा जिन्हें आत्मा ने सुसमाचार ग्रहण करने को तैयार किया था। इस तरह से प्राथमिक तौर पर ग्रहण करने के बाद, मेल के घर के अन्दर, सुसमाचार का फैलाव अंदरुनी आंदोलन बन चुका था। आत्मा का द्वार खुलकर एक फाटक बन गया था, जिससे अन्य लोग अपने सामाजिक ढॉचा के आधीन रहते हुए प्रत्युत्तर दे सके।

स्व–अनुसंधान अध्ययन – प्रवेश रणनीति

एक समूह या दो–दो की जोड़ी में, आपके छात्रों ने यीशु की प्रवेश रणनीति के बारे में पढ़ लिया है, और अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।

स्व–अनुसंधान अध्ययन – लुका 10:1–11

अब लुका अध्याय 10 को पढ़ने के लिये समय लें और उस गद्यांश से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. यीशु ने अपने शिष्यों से क्या करने को कहा था?
2. यीशु ने अपने शिष्यों से क्या नहीं करने को कहा था?
3. उनके प्रयासों का लक्ष्य क्या था?

हम आश्वस्त हो सकते हैं कि यीशु अपने स्वांस बर्बाद नहीं कर रहा था। शिष्यों को जो भी निर्देश दिये गये थे, उसके बिषय में यीशु के मन में एक खास उद्देश्य था। सावधानीपूर्वक इन 'करें' और 'न करें'' को ध्यान करने से – बाहरी लोगों के रुप में कार्य तक पहूॅचने में महान ज्ञान प्रगट होता है।

प्रवेश का माध्यम हमें पद 2 में बताया गया है।

> और उस ने उन से कहा; पक्के खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं: इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे।

यीशु के निर्देश सरल हैं। जाओं और पुछो! अधिकांश संस्करणों में हम पढ़ते हैं, ''जाओं और प्रार्थना करो...।'' सरल, केन्द्रित, क्षेत्र में रहते हुए प्रार्थना करना ही एक ऐसा इंजन है जो आत्मा के काम के बारे में हमारी समझ में आता है। यीशु अपने शिष्यों के पाठ इस उपकरण से शुरु करता है जो एक कलीसिया स्थापक को यह देखने में सहायता करता है कि द्वार पहले ही से खुला हुआ है। कुछ भी इससे अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। यीशु ने अपने चेलों को उपेक्षित फसल क्षेत्र की ओर से मध्यस्थता करने की मांग की। जब खेत काटे जाने के लिये तैयार है, तो कोई भी हंसिया नहीं ले रहा है। जब तक फसल का एहसास नहीं हो जाता है, तब तक यह कभी भी इकट्ठा नहीं किया जा सकेगा। इस याचिका में परमेश्वर का जवाब है, कि अपनी आंख खोलें ताकि फसल को देख सकें।

जाओ और प्रार्थना करो, यीशु की सूची में प्रथम ''करो'' है। क्षेत्र में प्रार्थना को प्रवेश की खिड़की माना गया था। पद 3 की चितौनी के बाद, यीशु ''करो'' और ''न करो'' की विस्तारित सूची का आरम्भ करता है।

करो	मत करो
कहो, 'इस घर का कल्याण हो'।	बटुआ न लो।
उस घर में ठहरो।	झोली न लो।
जो दिया जाये, उसे खाओ/पीओ।	जुती न लो।
रोगी को चंगा करो।	सड़कों पर नमस्कार मत करो।
कहो, राज्य निकट है।	घर–घर मत घुमो।
स्वागत नहीं किया गया तो धुल झाड़ दो।	

जब–जब इस गद्यांश को पढ़ा जायेगा, तो कलीसिया स्थापक को नयी अन्तर्दृष्टि और संभावित व्याख्यान प्रगट होगा। इन निर्देशों को देने में यीशु की बुद्धि ने चेलों को ऐसा सक्षम किया कि वे प्रभु के कार्य का मूल्यांकन कर सके और सुसमाचार से जुड़े उन गंभीर बातों को सही–सही पहचान सके।

चेलों ने बिना किसी तर्क या सहायता के माध्यम से सफर किये। वे शुरु से ही अपने प्रभु पर आश्रित थे कि वह उनके लिये द्वार खोलेगा। यही सबकुछ था, या कुछ भी नहीं। या तो वे उन बातों को यीशु के निर्देशानुसार पाये, या भुखे आगे बढ़ गये। इस निर्देश में अनेक संभावित कारण पाये जाते हैं।

1. शिष्यगण आश्रित थे इसीलिये उन्होंने परमेश्वर के प्रावधान को पहचाना था।
2. यीशु ने शिष्यों को सुसमाचार की मजदूरी सीखा दिया था।
3. यीशु का मकसद था कि चेले लोग अपनी असुरक्षा की भावना की सोच को साफ करे, ताकि वे उनकी पहचान कर सके जिन पर यह अनुग्रह उंडेला गया है।
4. ''धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर भी दया की जायेगी। ?
5. किसी को अनुमति देना कि वह आपकी सेवा करे, इससे भरोसा बढ़ता है और संबंध का मूल्य बढ़ जाता है।
6. दूसरे?

क्यों यीशु नें उनसे कहा था कि मार्ग में चलते किसी को नमस्कार न करना? इसके संभावित उत्तर हैं:

1. ध्यान भंग कम होना और एकल मन रहना।
2. सीधे घर के मुखिया की ओर आगे बढ़ना, न कि किसी सामान्य व्यक्ति के पास जाना।
3. जीवन परिवर्तन करनेवाली निर्णय घर में होते हैं।

इससे यात्रा और प्रार्थना का लक्ष्य भी प्रगट होता है। यीशु चाहता था कि उसके शिष्य ''और और कल्याणकारी मनुष्यों'' के पास जायें। ये केवल घर और लोग होते हैं जिसमें परमेश्वर की शांति ग्रहण की जाती और वास करती है।[8] इसी कारण चेलों को अपने ध्यान से भटकना नहीं चाहिये था यहॉ तक कि मार्ग कि किसी राहगीर से भी नहीं, और उन्हें घर–घर भी नहीं घुमना था।

---

[8] ''घर का कल्याण'' का महत्व को पूर्ण रुपेण सराहा जा सकता है जब सम्पूर्ण कलीसिया स्थापन प्रक्रिया दृश्य में हो। प्रवेश रणनीति का लक्ष्य, कल्याण का घर, सुसमाचार प्रचार, शिष्यपन, और कलीसिया गठन के लिये स्थान प्रदान करता है। घरों को खोलने वाली प्रवेश गृह–कलीसिया शुरु करने के लिये निर्विरोध संक्रमण प्रदान करता है।

लुका 10 का लक्ष्य – घर और कल्याण के लोग

यीशु का ध्यान सुसमाचार के लिये खुला एक घर था। हम बाद में देखेंगे कि कैसे यह स्थान नयी कलीसियाओं के जन्म के लिये मंच तैयार करता है। पहले हम महसुस करें, हालांकि परिवार ही हमेशा से परमेश्वर का निशाना रहा है।

पुराने नियम में परमेश्वर के न्याय के लेखे के अन्तर्गत हम बारम्बार परिवारों के छुटकारे के बारे में देखते हैं। जैसे कि जल प्रलय हुआ था, वह नूह और उसका परिवार ही था, जिन्हें बचा लिया गया था। जब परमेश्वर ने सदोम पर अपना न्याय दिखाया, तब उसका इरादा लूत और उसके परिवार को बचा लेने की थी। जब यहोशू ने यरदन पार यरीहो का नाश करने के लिये इस्राएलियों की अगुवाई की थी, तब राहाब और उसका परिवार बचा लिया गया था।

उसी रीति से नये नियम के अन्तर्गत भी हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा का नेतृत्व लगातार लुका 10 का अनुरुप पूरे परिवार को शामिल कर रहा है।

निम्नलिखित गद्यांशों पर ध्यान दें। कौन बचाया गया था?

प्रेरितों के काम 10:9–48 / प्रेरितों के काम 16:13–15 / प्रेरितों के काम 16:25–34 / प्रेरितों के काम 18:5–11 ‘

प्रत्येक मामले में, प्रार्थना के मध्य पवित्र आत्मा कल्याण के घर के द्वार को खोल देता है। हर मामले में, पूरे परिवार विश्वास करने में काबिल हुए, और जिन्होंने विश्वास किये वे तुरन्त बपतिस्मा भी लिये। इन प्रत्येक मामलों में, जैसे कि पहले पुराने नियम के गद्यांश के बारे में बताया गया है, उसमें परिवार या घराने के लिये युनानी शब्द ‘ओइकोस’ का इस्तेमाल हुआ है।[9] चुंकि अंग्रेजी में इसका सही–सही अर्थ बताया जाना मुश्किल है, तौभी यह विचारधारा इस जगत के दो–तिहाई भाग में स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है, जहॉ विस्तारित परिवार एक सामान्य बात है। कुरनेलियुस के मामले में, ‘ओइकोस’ का प्रयोग उसके परिवार, मित्रों, और पड़ोसियों का उल्लेख करने के लिये उपयोग किया गया था, जिन पर उसने अपना प्रभाव रख छोड़ा था। लुदिया, एक परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्री ने भी अपने परिवार के लिये द्वारपाल बनने का प्रमाण दी थी। उसी के द्वारा फिल्लिपी की कलीसिया का द्वार खुला था, ताकि पौलुस ने उस कलीसिया के बारे में जो सराहनीय बात कही थी, कलीसिया वह बन सके।

लुका अध्याय 10 और प्रेरितों के काम की पुस्तक में जारी अभ्यास के बीच समानता का एक अध्ययन से पता चलता है कि यीशु ने अपने चेलों को लुका 10:3 में चेतावनी दी थी कि यह सताव आयेगा। यह वह संदर्भ था जिससे पौलुस फिलिप्पियों के जेलर के साथ–साथ, प्रेरितों के काम अध्याय 18 के क्रिस्पुस के परिवार से जुड़ा था। पतरस प्रार्थना में पकड़ा गया था क्योंकि परमेश्वर ने उसे कुरनेलियुस और अन्यजातियों के लिये अपनी योजना के बारे में बता दिया था। जब पौलुस ने प्रार्थना के लिये स्थान का पीछा किया था, तब उसका परिचय लुदिया से हुआ था। एक बार फिर फिलिप्पियों के जेल में जो भुकम्प हुआ था, वह पौलुस और सिलास की स्तुति और प्रार्थना के संदर्भ के अन्तर्गत ही कैदी कैद से स्वतंत्र हो गये थे।

इन्ही सब गद्यांशों में एक अन्य सामान्य घटना थी, एक नयी कलीसिया स्थापना करनेवाली सुसमाचार प्रचारक का जल्द ही कूच करना। जैसे कि फसल में मजदूरों के लिये लुका 10 की याचिका दी गयी थी, इसका कभी भी पूरा उत्तर उन लोगों के द्वारा नहीं दिया गया जिन्हें परमेश्वर ने बाहर से लाया था। कुछ दिनों के बाद पतरस को छोड़ दिया गया। और कैद से छुटने के बाद पौलुस फिल्लिपी से निकल गया। कई बार सताव बढ़ने के कारण पौलुस को आगे बढ़ने के लिये मजबुर किया गया था। ऐसी दुनिया में जहॉ हमारा परमेश्वर सार्वभौम है, हमें मान लेना चाहिये कि परमेश्वर ने पौलुस को आगे बढ़ने के लिये इस दबाव की अनुमति दी थी। एक अपवाद कुरिन्थ में भी देखा गया जिसके लिये कहा जाता है कि परमेश्वर की ओर से दिये गये दर्शन के कारण पौलुस वहॉ पर 18 महीने बिताया था। यहॉ मुद्दा यह है कि परमेश्वर ने यहॉ नयी कलीसिया स्थापक को खेत के मजदूर के रुप में उपयोग नहीं किया, बल्कि उनकी अनुपस्थिति से नये अगुवो के उभरने की मांग बढ़ी थी।

---

[9] प्रेरितों के काम 10:24 / 16:15 / 16:31,33 / 18:8 यह भी देखें सप्तुआजिंत – उत्पत्ति 7:1 / 19:12,15 / यहोशु 6:17,22–23

मजदुरों के लिये याचना के प्रति परमेश्वर का उत्तर कल्याण के घर के माध्यम से नये विश्वासीगण जान पड़ते हैं। जिन्होंने कल्याण के संदेश को स्वीकार किया था, वे समुदायों के साथ जोड़े गये जिसमें कलीसिया आरम्भ हुई। कैसरिया, फिलिप्पी, और कुरिन्थ की कलीसियायें इस पद्धति का स्पष्ट नमूना है। इस प्रकार सुसमाचार का प्रसार अंदरुनी लोगों के बीच होने लगा, जो उस समय के अस्तित्व के सामुदायिक ढांचा तक पहूँचने में योग्य थे।[10]

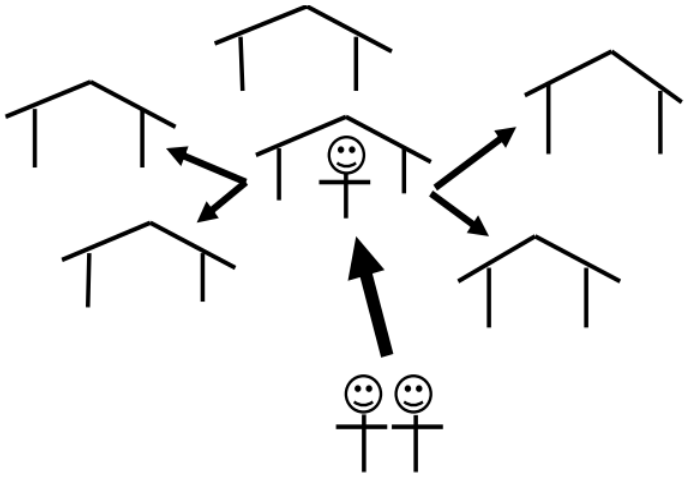

आधिकारिक ढॉचा को फिर लिखने की जरुरत नहीं। जैसे कि परमेश्वर ने प्रभावशाली स्त्रीयों व पुरुषों को तैयार किया है ताकि वे कल्याण के संदेश को प्राप्त करे, तो वह कल्याण बाधा–रहित था क्योंकि यह आबादी में से होकर बहा। इससे अंदरुनी आंदोलन उभरकर आई।

एक प्रवेश रणनीति जिसे यीशु के नमूने पर रुप दिया गया है, उसमें चेलों को खास निर्देशों और लक्ष्यों के साथ विभिन्न खेतों में भेजना शामिल रहता है। ये निर्देश यीशु के निर्देशों को जितना संभव हो, प्रतिबिंबित करना और उसके लक्ष्य को पूरा करना सुनिश्चित करना चाहिये। हमारे भेजे जाने का लक्ष्य घरों और कल्याण के लोगों की पहचान है, जो सुसमाचार के संदेश का स्वागत करते हैं। दूसरे तरीके से कहा जाये, तो लक्ष्य खुले घर हैं। इन घरों में इन समुदायों के द्वार हैं। जब आप कल्याण का घर खोजते हैं तो इसका मतलब है कि आपने अगले कलीसिया स्थापन के जगह को खोज लिया है। इस समुच्य के भीतर नये विश्वासीगण अपना वर्तमान आधिकारिक ढांचा और निर्णय लेने के नमूने को बनाये रखा है। नये विश्वासीगण, जो समुदाय में अंदरुनी हैं, को तुरन्त मसीह के संदेश को इकट्ठा करने और उनके 'ओइकोस' को उजागर करने के लिये जुटाया जाना चाहिये।

आगे शहर या समूदायों में 'ओइकोस' के माध्यम से पहूँचा जा सकता है। ओइकोस के सदस्य जो व्याह के कार्य के लिये बिखरे हुए हैं, वे आगे की खेतों के लिये सम्पर्क प्रदान करते हैं। इसलिये उन्हें नये विश्वासियों के द्वारा जुटाया जाना चाहिये।

<u>प्रशिक्षक के लिये उपकरण</u>

प्रवेश रणनीति के लिये सबसे प्रभावकारी उपकरणों में से एक कल्याण के ओईकोस के लोगों की एक सरल सूची बनाना है। जब प्रत्येक नये विश्वासी कम से कम 25 परिवार सदस्यों व मित्रों की सूची तैयार कर लेते हैं, जिन्हें मसीह की जरुरत हैं। तो वह सूची उनके प्रभाव–चक्र को प्रस्तुत करती है, और इसलिये यह उनकी जिम्मेदारी बन जाती है। जिनके नाम सूची में लिखे गये हैं, उनके साथ सुसमाचार बांटने की जबाबदेही प्रेरितों के काम अध्याय 10, 16, और 18 के नमूने को अंदरुनी आंदोलन के लिये सरल कर देगा।

[10] वो इलाका जहॉ ''अंदरुनी लोग'' ने सुसमाचार की सेवकाई को अपनाया, वे लगातार सर्वाधिक फलदायी साबित हुए। विश्वासियों के द्वारा संचालित सेवकाई और कार्य करते हुए प्रशिक्षण के लिये देखें: Garrison, David. *Church Planting Movements*. Midlothian: WIGTake Resources, Bangalore, 2004.

कुछ अन्य सामान्य प्रवेश रणनीतियॉ

जब हम प्रचलित प्रवेश रणनीतियों पर ध्यान करते हैं, जिसे आज लागू किया गया है; तो वे कैसे उसे लूका 10 से तुलना करते हैं?

1. **द्वार से द्वार तक सुसमाचार प्रचार** – एक भौगोलिक क्षेत्र में प्रत्येक घर का कंबल–भ्रमण।
   बल – संतृप्ति/संतुष्टि
   कठिनाई – पवित्र आत्मा के निर्देशन की चिंता की कमी। समझ की जगह को कंबल–पहॅूच के सिद्धांत ने ले लिया है, जैसे कि सताव और प्रचार (गलत इरादों) को उजागर करने की संभावना के रुप में यह परमेश्वर का एक आंदोलन है।[11]

2. **क्रुसेड** – संदेश के साथ एक भीड़ को इकट्ठा करना या एक भीड़ से मिलना।
   बल – आकर्षक घटना, समूदाय के अनुकूल।
   कठिनाई –शिष्यपन में बदलना अस्वाभाविक, पहले से तय आधिकारिक ढांचा के अनुसार निर्णय नहीं। फॉलो–अप तार्किक व संबंधकारी रुप से कठिन। सीमा से बाहर के लोग अपना जीवन परिवर्तन कर सकते हैं, जिससे मूख्य धारा के समूदाय को और दूर तक धकेला जायेगा।

3. **बड़ी जनसंख्या के लिये कार्यक्रम** – रेडियो, दूरदर्शन आदि।
   बल – बड़ी जनसंख्या में सुसमाचार का खुलासा।
   कठिनाई – प्रतिक्रिया की कड़ी संकटकारी हो जाती है। भ्रम की संभावना रहती है क्योंकि यह तरीका मिश्रित प्रभाव वाले लोगों के लिये खुली होती हैं। निर्भरता तकनीकी पर होती है। रेडियो प्रसारण पर निर्भर होता है, और भरोसेमंद रेडियो महंगे होते हैं।

4. **सामाजिक कार्य** – आवश्यकता को समझते हुए बैठक/सभा करना।
   बल – देने के द्वारा प्रभु की आज्ञा को पूरा करना। यह नये क्षेत्र से आनेवाले झुठे धर्म–विज्ञान के प्रचार, और अंध–विश्वास की चट्टानों व ठूँठ को साफ कर सकता है।
   कठिनाई – गलत इरादों और वफादारी के लिये संभावित दया की सेवा को चर्च – अर्थात् परिवर्तन का मन रखने वाला प्रतिनिधि से अलग कर देता है। इस स्थानीय स्तरों पर बड़े पैमाने पर योजनाएं पुनरुत्पादनीय नहीं भी हो सकता है।

चंगाई पर एक टिप्पणी – हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि रोगियों को चंगा करना उनके लिये निर्देशों में से एक था, जिन्हें भेजा गया था। प्रवेश रणनीति के अन्तर्गत चंगाई एक उपकरण है, न कि आप रणनीति। जब इसे सही रीति से उपयोग किया जाता है, तो यह परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ का सटीक प्रदर्शन करता है। यह निश्चित करता है कि परमेश्वर अपने संदेश में आशिष देता है। ''इस घर का कल्याण हो'' एक इंजन है जो मसीह के द्वारा प्रवेश रणनीति के लिये संचालित किया जाता है।

---

[11]यह समझना जरुरी है कि जब एक बार कल्याण के घर के द्वारा प्रवेश कर लिया जाता है, तो ओइकोस ठीक द्वार से द्वार तक पहॅूच की तरह ही रुप ले सकता है, क्योंकि अंदरुनी लोग शुभ–संदेश फैलाते रहते हैं। यह तौभी द्वितीय चरण/दशा का क्रिया–कलाप है।

इन विधियों में से प्रत्येक गति आकर्षक हैं जिससे प्रवेश संभव है। प्रत्येक अपनी योग्यता का दावा करते हैं कि इसमें बड़ी ताकत है। हालांकि उनके सबसे अधिक प्रभावकारिता में, प्रत्येक फॉलो–अप के लिये सुसमाचार प्रचार की ''मुंह से कान'' प्रस्तुति में वे अब भी परस्पर निर्भर रहते हैं। [12]

अन्त–दर्शन – प्रवेश रणनीति

इससे क्या होने जा रहा है?

एक कलीसिया स्थाक के लिये नये खेतों में प्रवेश करने की योजना विकसित करना बहुत जरुरी होता है। ऐसा करने से यह अच्छा होता है कि आरम्भ से ही मन में अन्त की बात आ जाता है। जिस खेत के लिये परमेश्वर ने आपको ठहराया है, उन खेतों को जानने से आपकी सेवकाई की कई बातों को निर्धारण करने में आपको सहायता मिलेगी। यहॉ हम एक आसान सवाल पुछते हैं।

हमें कितने खेतों में प्रवेश करना चाहिये?

इस प्रयोजन के लिये हम "X" लोगों के समुह के एक काल्पनिक अध्ययन पर विचार करें। "X" लोगों की आबादी भारत में असम राज्य में 10 लाख की आबादी है। "X" लोगों को जानने के लिये बिखरे हुए समुदायों में रहनेवाले ग्रामीण लोग हैं, हमें एहसास है कि प्रवेश रणनीति को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

"X" लोग, जनसंख्या 10,000,00

जनगणना और उपलब्ध लोगों के समूह के अध्ययनों का उपयोग करके हम 5–7 लोगों के "X" परिवार के औसत आकार का सुरक्षित रुप से अनुमान लगा सकते हैं। इससे हम जान सकते हैं कि "X" के 2,00,000 परिवार मौजूद हैं।

जनसंख्या 10,00,000 (दस लाख)
विभाजित किया गया 5 से (प्रत्येक घराने में औसतन 5 सदस्य हैं)
घरानों की कुल संख्या 2,00,000 (दो लाख)

इन संख्याओं के आधार पर हम "X" लोगों के बीच के गांवों की संख्या का अनुमान लगा सकते हैं। एक स्थानीय सहायता संगठन द्वारा दिये गये आंकड़ों तक पहूँच का अनुमान लगाया जा सकता है कि औसतन "X" गॉव में पचास घर हैं।

2,00,000 घराने
प्रति गॉव 50 घराने से विभाजित किया गया
कुल 4,000 गॉव

इस आंकड़े की पुष्टि के लिये 20 ऐसे गांवों का दौरा करने के बाद, हम "X" गांवों की संख्या का अनुमान लगा सकते हैं।

[12] ''मुंह से कान'' का सामान्य अर्थ है कि एक व्यक्ति बताये और दूसरे लोग सुनें। ऐसा एक के साथ एक सुसमाचार प्रचार को किसी और संचारण तंत्र से बदला नहीं जा सकता है, क्योंकि प्रश्नों और गलतफहमियों की सफाई देना जरुरी होता है।

इस तरह प्रवेश की रणनीति की आवश्यकता का काफी मूल्यांकन किया जा सकता है। लोगों तक पहुंचने का कार्य कई क्षेत्रों में प्रवेश करना शामिल है। इस तरह की जानकारी से आंकलन करने के लिये कलीसिया स्थापक को प्रगति के लिये एक स्पष्ट माप–दण्ड प्रदान करता है। साल दर साल सुसमाचार को जवाब देने वाले गांवों की संख्या की वृद्धि प्रगति का एक स्पष्ट संकेतक है।

वे जो किसी भौगोलिक या महानगर में लोगों तक पहूॅच बनाना चाहते हैं, उन्हें वहॉ की आबादी के अन्तर्गत कथित समुदायों को ध्यान देना चाहिये। हमें यह नहीं मान लेना चाहिये कि विशेष ध्यान दिये बिना सुसमाचार एक जन–समूह से दूसरे तक स्वतंत्र रुप से प्रवाह होगा। इस कारण से कलीसिया स्थापक किसी शहर में उसी रीति से पहूॅच बना सकता है, मानो वह कई गॉवों में पहूॅच बनायेगा। पूरे क्षेत्र में जोखिम को सुनिश्चित करने के लिये जातीय, भाषाई, और आर्थिक कारकों पर विचार किया जाना चाहिये।

अपने लक्ष्य के लोगों (समुदाय) पर विचार करें

लोगों (समुदाय) के नाम ..... **इलाका**.....

जनसंख्या.....

जनसंख्या को 5 से विभाजित किया गया .....**घर/घराना**

कितने गॉव वर्तमान में शामिल हैं? .....

आपका लक्ष्य अगले केलेण्डर वर्ष के लिये क्या है? .....

प्रवेश रणनीति के लक्ष्य – कल्याण के लोग/ओइकोस

1. **लुका अध्याय 10 में, नये गॉवों को लक्ष्य में रखते हुए प्रार्थना योद्धाओं के एक दल को प्रशिक्षित किया गया था।**

   याद रखें, जैसे समय बितता जाता है और नये गॉव शामिल होते जाते हैं, तो इस दल को भी बढ़ते जाना चाहिये। इस कारण से ऐसे दल के संचालन के लिये आवश्यक संसाधनों पर विचार करना चाहिये, और शुरुआत से घातीय (अधिकताई से बढ़ोतरी में तेजी) वृद्धि के लिये योजना बनाना चाहिये। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सार्थक गतिविधि के लिये प्रतिबद्ध होने पर द्वि– व्यावसायिक/विश्वासी–सेवक का प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है।

2. **हर विश्वासी, आपके नेटवर्क के भीतर 100%, अपने स्वयं के ''ओकोस'' की सूची रखता है, और वह नये समूहों के साथ उनकी प्रतिक्रिया का फॉलो–अप कर रहा होता है।**

   हर विश्वासी का प्रभाव का चक्र होता है, जिसमें परिवार, मित्रगण, सहकर्मी, और पड़ोसी शामिल रहते हैं। जिसके माध्यम से परिवार समूहों को सुसमाचार के संपर्क में लक्षित किया जाना चाहिये।

विशिष्ट क्रियाएं

अगले तीन/छः/बारह महीनों में ..... (संख्या) गॉवों की विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करें, जिसमें प्रवेश करना है।

वर्तमान में आपके नेटवर्क के अन्तर्गत पाये जाने वाले ''ओइकोस'' समूह को चित्रांकित करें, ताकि उसके आस–पास के गॉवों के साथ संबंध की खोज की जा सके।

दल को प्रशिक्षित करें और भेजने का प्रयत्न करें! अपने दल के सदस्यों को पड़ोसी गॉवों में दो–दो करके भेजें। लुका 10 का अभ्यास करें और कल्याण के घर का पता लगायें। योजना पर काम करें!!!

मूल्यांकन – लुका 10 कल्याण का घर रणनीति

6–10 के दलों में समय लें, ताकि कलीसिया स्थापन की जानेवाली खेतो के लिये लुका 10 में यीशु का तरीका का मूल्यांकन कर सकें। विचार–विमर्श के लिये निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान दें। बल निर्माण करने की ताक में रहें, और यदि आपके प्रयासों में पहले ही से कोई कमजोरी पाई जाती है तो उसमें सुधार करने के लिये कदम उठायें।

ध्यान देने के लिये प्रश्नः

क्या यह आज्ञाकारिता पर आधारित है? जबाबदेही?

क्या यह जिम्मेवारी देती है?

क्या यह गुणात्मक बढ़ोतरी की योजना बनाती है?

क्या यह अंदरुनी लोगों को सरल बनाती है?

क्या यह स्वः–खोज पर निर्भर होता है?

क्या यह कलीसिया गठन के लिये अगुवाई करता है?

क्या यह पुनरुत्पादनीय है?

प्रत्येक 'हॉ' वाले उत्तर का विस्तार करें। क्यों ये महत्वपूर्ण हैं?

खेत # 2 – पुनरुत्पादन–योग्य सुसमाचार प्रस्तुति

उद्देश्यः

– सुसमाचार प्रस्तुति के लिये ''मुंह से कान'' उपकरण का परिचय

– सुसमाचार प्रचार के लिये बाईबलीय योग्य को परखना

– सुसमाचार प्रचार कार्य में पवित्र आत्मा के साथ भागीदारी को समझना

– सुसमाचार प्रचार प्रशिक्षण के माध्यम से विश्वासियों को इकट्ठा करने के लिये दर्शन

यहॉ हम सैनिक को उसका शस्त्र देते हैं। अंधकार में रहने वालों को सुसमाचार प्रचार प्रस्तुत करना ही महान आदेश का हृदय है। प्रत्येक कलीसिया स्थापक का लक्ष्य सरल उपकरणों को उपयोग करना और उसका गुरु होना है। जैसे कि हम दूसरों के लिये उन उपकरणों को ढांचा में ढालना व प्रशिक्षण देना भी फसल को बढ़ाने के लिये प्रमुख है। जैसे कि हम इस खेत पर ध्यान करते हैं, आईये हम फिर एक बार बोनेवाले के कार्य पर ध्यान करें।

खेत के हर कोने को संतृप्त किया जाना चाहिये। किसान इस बात से अनभिज्ञ होता है कि भूमि का कौन–सा भाग अधिक उपजाऊ है। इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि कौन बीच बढ़ेगा, और कौन नहीं। बोनेवाला केवल भरोसे से बोता है। यह बीज की प्रकृति होती है कि वह अंकुरित हो और बढ़े।

कुंजी प्रश्न – मैं क्या कहता हूँ?

कलीसिया स्थापक के दिमाग में चर्च के लिये इस सवाल का उत्तर देते हुए उन्हें कार्रवाई करने का निर्देश दिया जाता है। दूसरों को सीखाना कि क्या कहना है, का तात्पर्य गवहों में गुणात्मक बढ़ोतरी करना। इसका तर्क सरल है। खेत में जितना अधिक बोनेवाले होंगे, उतनी ही अधिक बीज बोई जायेगी।

हाल ही में मैंने एक व्यक्ति को कहते सुना कि इस संसार में केवल दो प्रकार के लोग होते हैंः

1. वे जिन्हें मेरे उद्धार की कहानी सुनने की जरुरत है।
2. वे जिन्हें अपनी गवाही बताने के लिये प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

यह सच्चाई हमारी सेवकाई से प्रश्न पुछता हैः

कौन गवाही बताने के योग्य है?

हम सभों ने हमारे नेटवर्क में शिष्यों की उम्मीद के अनुसार इस सवाल का जवाब दिया है। जो प्रशिक्षित होने के लिये समय लेते हैं, और गवाही बताने की जिम्मेवारी थामे रहते हैं; वे ही वास्तव में योग्य होने के काबिल समझते हैं। यह सत्य हमारे शिष्यों की भी पूर्व–धारणा हैं। जो अलग खड़े रहते या प्रशिक्षित नहीं हैं, उन्हें यह मान लेना चाहिये कि वे इस प्रकार की सेवकाई में भागीदार होने के योग्य नहीं हैं। समस्या तब आती है, जब हमारी उम्मीदें मसीह के विरोध में खड़ी होती है।

मत्ती 28:18–20 सभी विश्वासियों को दिया गया था! यह एक आदेश है! कोई भी विश्वासी, यदि वह बीज नहीं छींट रहा है, तो वह इस आज्ञा का उल्लंघन कर रहा है। इस पर जय पाने का एकमात्र तरीका अपने पापों से मुड़कर पश्चाताप करना और परमेश्वर की ओर लौट आना है।

आईये हम देखें कि कैसे यीशु ने इस प्रश्न का उत्तर दिया था।

प्रशिक्षक के लिये उपकरण

निम्नलिखित कहानी को पवित्रशास्त्र से अपनी स्मरण में लेने के लिये समय लें। अपने शब्दों का उपयोग करें। इस गद्यांश के पाठों को उतना विस्तार करें, जितना जरुरी है। निम्नलिखित पाठों को सीखाने के लिये इसे उपयोग करें।

यूहन्ना 4:4—42

और उस (यीशु) को सामरिया से होकर जाना अवश्य था। सो वह सूखार नाम सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्रा यूसुफ को दिया था। और याकूब का कूआं भी वहीं था; सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर योंही बैठ गया, और यह बात छठे घंटे के लगभग हुई।

इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला। क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे। उस सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)।

यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।

स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआं गहिरा है: तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहा से आया? क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिस ने हमें यह कूआं दिया; और आपही अपने सन्तान, और अपने ढोरों समेत उस में से पीया?

यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर पियासा होगा। परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक पियासा न होगा: बरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।

स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने को इतनी दूर आऊं।

यीशु ने उस से कहा, जा, अपने पति को यहां बुला ला।

स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हूं: यीशु ने उस से कहा, तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूं। क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है।

स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है।

हमारे बापदादों ने उसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।

यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में। तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। परन्तु वह समय आता है, बरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

स्त्री ने उस से कहा, मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।

यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूं, वही हूं।।

इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे, कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न कहा, कि तू क्या चाहता है? या किस लिये उस से बातें करता है।

पद 28–30 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी। आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दियाः कहीं यह तो मसीह नहीं है? सो वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।

इतने में उसके चेले यीशु से यह बिनती करने लगे, कि हे रब्बी, कुछ खा ले।

परन्तु उस ने उन से कहा, मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।

तब चेलों ने आपस में कहा, क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है?

यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं। क्या तुम नहीं कहते, कि कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूं, अपनी आंखे उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं। और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है; ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें। क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है कि बोनेवाला ओर है और काटनेवाला ओर। मैं ने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं कियाः औरों ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए।।

और उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने से, जिस ने यह गवाही दी थी, कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया, विश्वास किया। और उसके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया।

और उस स्त्री से कहा, अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।।

कुंजी प्रश्न – *कौन बोने के लिये योग्य है?*

यदि पुछाह जाये तो हमारे समय में कौन सबसे बड़ा सुसमाचार प्रचारक है? कौन आपका उत्तर होगा? हमने इस प्रश्न को सैकड़ों सुसमाचार प्रचार प्रशिक्षणों में पुछा है। हमने 90 प्रतिशत समय में एक ही प्रत्युत्तर पाया है, अपवाद केवल दूर–दराज के नये विश्वासियों के बीच से आ रहे हैं। बिली ग्राहम को विश्व–स्तर पर 20 वीं शदी का सुसमाचार प्रचार के रुप में जाना गया है। आईये, हम बिली ग्राहम की योग्यता पर ध्यान करें।

बिली ग्राहम

1. क्या बिली ग्राहम पुरुष है, या स्त्री? उत्तर– पुरुष
2. बिली ग्राहम का शैक्षणिक स्तर क्या है उत्तर – अनेक डीग्रीयॉ
3. बिली ग्राहम कब से विश्वासी था उत्तर – उसके बचपन से
4. बिली ग्राहम की प्रसिद्धि क्या थी उत्तर – भला/अच्छा, राष्ट्रपतिगणों का सलाहकार
5. बिली ग्राहम के बारे में आप कैसा व्याख्या देंगे? उत्तर – धर्मी

इस प्रश्न के जवाब में अन्य प्रचारकों की पेशकश की जाने की संभावना इसी योग्यता के अनुसार होगी। सामूहिक रुप से इस सूची का इस्तेमाल हमारे मन में किसी भी सुसमाचार प्रचारक के दक्षता का वर्णन करने के लिये किया जा सकता है। जब हमारे मुख्य प्रश्न पर लागू होता है, तो ये योग्यता बुवाई के संभावित उम्मीदवारों को सीमित करता है।

इसी कारण से, परमेश्वर ने हमें यूहन्ना 4 में दिये गये रिकॉर्ड को सुनिश्चित किया है। इस गद्यांश में सुसमाचार प्रचारक कौन थे? सुसमाचार को साझा करने के लिये किसने परमेश्वर से सहभागिता की?

उत्तर – सामरी स्त्री

यीशु ने पहले उसे जीत लिया, और तब वह उसे अपने ''ओइकोस''' को विश्वास में लाने के लिये भेजा। वह एक अनोखी और प्रभावकारी सुसमाचार प्रचारिका थी! एक ही अध्याय में उसने अपने सम्पूर्ण गॉव में सुसमाचार फैला दी थी, और अनेकों ने जगत का उद्धारकर्त्ता के रुप में विश्वास किया था।

अब उसकी योग्यता पर ध्यान करें:

सामरी स्त्री

1. क्या सामरी स्त्री पुरुष है, या स्त्री? उत्तर– स्त्री
2. सामरी स्त्री का शैक्षणिक स्तर क्या है उत्तर – अशिक्षित
3. सामरी स्त्री कब से विश्वासी थी उत्तर – नयी विश्वासी, एक दिन से
4. सामरी स्त्री की प्रसिद्धि क्या थी उत्तर – बुरी प्रसिद्धि
5. सामरी स्त्री के बारे में आप कैसा व्याख्या देंगे? उत्तर – पापी, 5 पति

यह व्यक्ति नहीं है जिसे हमने प्रतिनिधित्व करने के लिये चुना है। तौभी पतरस को भेजने का चुनाव दिया गया था। जिसने पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोगों की अगुवाई की थी, या यूहन्ना, जिसने सुसमाचार लिखा, या यहॉ तक कि थोमा, जिसे अधिकांश लोग मानते हैं कि वह सुसमाचार के साथ बहुत दूर अर्थात् भारत तक सफर किया था। यीशु सब बातों को अलग कर देता है और उसके साथ भागीदार होता है। वह परमप्रधान परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के लिये चुनी गयी थी। यह हमें क्या सीखाता है?

यूहन्ना अध्याय चार में, यीशु अपने शिष्यों और उन हरेक को जो यह कहानी सुनते हैं; सीखाते हैं कि परमेश्वर की योग्यता हमारी योग्यताओं से भिन्न है। कोई भी, जो यीशु के नाम में आज्ञाकारिता के लिये समर्पित होते हैं, वे सुसमाचार में सहभागिता के लिये योग्य ठहरते हैं।

इस बात को मन में रखते हुए, कलीसिया स्थापक का लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिये:

सुसमाचार के फैलाव के लिये हरेक विश्वासी को भरपूरी व आदेश दें।
उनके स्वाभाविक कर्तव्य में याजकपद की जिम्मेवारी को थामें रहें![13]

सुसमाचार प्रचार में प्रभावशीलता को प्रमाणित नहीं किया जा सकता। एक भीड़ को देखते हुए और संभावित प्रचारकों की पहचान करना गलत है।

---

[13] कलीसिया स्थापन की इस नींव को यूँ ही मान नहीं लेना चाहिये। पवित्रशास्त्र ने स्पष्ट रुप से नये नियम की कलीसिया को याजक कहकर बुलाया है। इसमें शामिल हैं! (1 पतरस 2:9–10)। पतरस के श्रोताओं के समरुपता के लिये देखें 1 पतरस 1:1।

सुसमाचार प्रचार में वरदान की खोज करने का एकमात्र तरीका है कि हर किसी को प्रशिक्षित करना
और विश्वासयोग्यता को फलदायी होने की अनुमति देना।

प्रायः हम इस बात से अचम्भित रह जाते हैं कि जिसे हम सबसे पीछे (पंक्ति/सेवकाई में) होने की उम्मीद रखते थे, वही सबसे अधिक फलदायी हो चुका है। हमारे सबसे बड़े उद्भवों (अचानक महत्वपूर्ण विकास/सफलता) में से कई हमारे लिये आश्चर्य की बात रही है। विश्वासियों को प्रशिक्षण देना और परमेश्वर को उन विश्वासयोग्य लोगों को उपयोग करने की अनुमति देना, ताकि सरल उपकरणों को उपयोग किया जा सके, फलदायी लोग प्रगट हो सकेंगे। हम पर्याप्त व्याख्यान नहीं कर सकते, विश्वासी लोगों को भरपूरी देना वह जगह है, जहॉ फल हैं। हर विश्वासियों से युद्ध करने की उम्मीद रखें। हरेक विश्वासियों से महान आदेश के प्रति जवाबदेही की मांग रखें, और तभी फल आयेंगे।

जब शिष्यों को प्रशिक्षित कर दिया जाता है, तो कलीसिया स्थापक को उसी समानता में परिणाम की उम्मीद रखना चाहिये। नीचे लिखित उदाहरण को ध्यान दें।

जब 20 सुसमाचार प्रचारकों को प्रशिक्षित किया जाता है, तो निम्नलिखित की उम्मीद रखनी चाहिये।

12–15 निष्क्रिय	3–5 सक्रिय परन्तु निष्फल	1–2 महा उत्पादक

सामरी स्त्री एक ''महा–उत्पादक'' थी। महा–उत्पादक विश्वासयोग्य, और उच्च–प्रभावशाली का बीज बोनेवाला होता ह। उदाहरणों में मरकुस 5 के शैतान–संबंधी बातें भी शामिल हैं, जो दिकापुलिस में था, मनुष्य अंधा जन्मा था, पतरस जो मछुआ था, और जिसके प्रचार ने पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोगों को जीत लिया था, या इपफ्रास जो पौलुस की अनुपस्थिति में कुलुस्सियों की कलीसिया का स्थापन किया था। ऐसे व्यक्तियों की खोज करना और उन्हें परिपूर्ण करने से आपकी सेवकाई की गुणवत्ता बढ़ती है।

क्यों सामरी स्त्री इतनी प्रभावशाली थी?

सामरी स्त्री अपनी क्रियाओं के द्वारा हमें सुसमाचार के चार प्रमुख बातों को दर्शाती है।

फिर से पद 28–30 को ध्यान करें:

> *पद 28–30 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी। आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया: कहीं यह तो मसीह नहीं है? सो वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।*

सामरी स्त्री की चार प्रमुख बातें

1. मसीह के लिये तुरन्त आज्ञाकारिता

जैसे ही उस सामरी स्त्री ने यीशु को मसीह के रुप में पहचान ली, उसने सबकुछ छोड़ दी और उसके निर्देशों का पालन की। वह शहर को गयी और लोगों को बुलाई। वचन 28 हमें बताती है कि यहॉ तक कि उसने अपना घड़ा भी छोड़ दी। आज्ञाकारिता से बढ़कर और कुछ नहीं था। आज्ञा पालन के लिये, उसने अपनी नियमित कार्यों, जरुरतों और प्रश्नों को उस दिन के लिये रोक दी थी।

सुसमाचार प्रचार में आज्ञाकारिता का ''डी.एन.ए'' होना जरुरी है। हमें बोने के लिये हर अवसर का उपयोग करना चाहिये। प्रत्येक विश्वासी पवित्र आत्मा के तय समय पर सुसमाचार सुनाने के लिये तत्पर किया जाता है। हमारे प्रत्युत्तर की चाहत जीवन या मृत्यु का मामला है। यह प्रभुत्व का भी मामला है।

1 पतरस 3:15 *पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ।*

सुसमाचार बताने के मामले में, 1 पतरस 3:15 बताती है कि हमारी तैयारी प्रभुत्व के मामले के लिये होना चाहिये। हमें अवश्य ही अवसर आने से पहले विश्वासयोग्य बन जाना चाहिये।

प्रशिक्षक के लिये उपकरण

गैर–मसीही मित्रों और परिवारों के लिये जिस प्रकार की रणनीति प्रयोग की गयी, ठीक उसी प्रकार की सूची सुसमाचार प्रयासों को तत्पर बनाने के लिये उपयोग में लाया जाता है। अपने शिष्यों को अगले अवसर का लाभ उठाने का आदेश दें, ताकि वे उन्हें सुसमाचार बतायें जो उनकी सूची में हैं। इसे प्रार्थना का मामला और मसीह के प्रभुत्व की आज्ञाकारिता का मामला बनायें।

2. विश्वासियों की व्यक्तिगत गवाही

पद 29 में, उस स्त्री नें लोगों से दो बातें कही। इन दोनों में से एक उसकी व्यक्तिगत गवाही थी। ''*आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया*''।

पद 39 उसकी बात की पुष्टि यह कहते हुए करता है, '' *और उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने से, जिस ने यह गवाही दी थी, कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया, विश्वास किया।*''

उस स्त्री नें प्रचार नही की। उसने लोगों की खामियां नहीं बतायी, और न ही किसी पर उंगली उठाई। बजाय इसके उसने उस अनुभव को बताई, जिसे उसने अभी–अभी मसीह के बारे में पाई थी। यह उसकी व्यक्तिगत कहानी थी, जिसमें वह अपने बीते जीवन में शामिल रही थी। एक बार फिर 1 पतरस 3:15 यहॉ सटिक है। ''*पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ।*''

प्रायः हमनें पाया है कि नये विश्वासियों की गवाही सुसमाचार प्रचार के लिये बिल्कुल धारदार औजार है। उनके जीवन का बदलाव बिल्कुल ताजा है, और वे जिन्हें भी जानते हैं, वे गैर–विश्वासी होते हैं।

प्रशिक्षक के लिये उपकरण

प्रत्येक विश्वासी अपनी व्यक्तिगत गवाही दे सके, इसके लिये प्रशिक्षण देने के लिये समय लें। प्रेरितों के काम 22:1–21 में पौलुस हमारे लिये नमूना ठहरता है, यदि हम पढ़े ंतो इसके लिये केवल तीन मिनट लगेंगे, और इसमे ंतीन भाग पाये जाते हैं।

1). मसीह के सम्मुख पौलुस का जीवन – पद 1–5

2). कैसे पौलुस की मुलाकात मसीह से होती है – पद 6–16

3). मसीह से मिलने के बाद, कैसे पौलुस का जीवन बदल गया – पद 17–21

अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करें ताकि वे भी ठीक ऐसी ही तीन भागों में अपनी गवाही बताये। तीन मिनट में अन्त करने का अभ्यास करें। यह भी ध्यान रखें कि जब भी हम अपनी गवाही बताते हैं तो मुख्य बातें बताई गयी है। मुठभेड़ की बातों पर अधिक जोर दें ताकि इससे विश्वास उत्पन्न हो, और फिर पश्चाताप, और उसके बाद मसीह को प्रभु मानते हुए के साथ एक नयी चाल (प्रेरितों के काम 20:21)।

3. सुसमाचार प्रस्तुति

दूसरी बात जो उस स्त्री नें कही, वह सुसमाचार प्रस्तुति था। पद 29, ''कहीं यह तो मसीह नहीं है?''

सुसमाचार प्रस्तुति का एक उद्देश्य होता है। जरुरी है कि हम लोगों को निर्णय में लायें। सामरी स्त्री ने विश्वास की मांग नहीं की; बल्कि ये उसने मामला लोगों के सम्मुख रख दी। इससे निर्णय उन लोगों पर छोड़ दिया गया था।

क्या आप विश्वास करते हैं कि वह उद्धारकर्त्ता है, या नहीं? क्या यीशु आपको बचा सकता है, या नहीं? चुनाव उन पर छोड़ा गया था।

1 पतरस यह कहते हुए अन्त करता है – *''परन्तु ऐसा नम्रता और भय के साथ करो।''* एक उद्धारकर्त्ता के रुप में यीशु को प्रस्तुत करना और निर्णय के लिये बुलावा देना ही वह कार्य है, जिसके लिये हमें कहा गया है। बाकी कार्य पवित्र आत्मा का है।

आपके सुसमाचार प्रस्तुति का कोई भी रुप/तरीका क्यों न हो, यह जितना संभव हो, सरल होना चाहिये। लोगों की भाषा का उपयोग करते हुए अपने सुसमाचार प्रस्तुति को शुद्ध करें। शास्त्रीय और धार्मिक शब्दों का उपयोग करने से बचें। इस रीति से, यह न केवल खोये हुए लोगों के द्वारा समझा जाता है; बल्कि इससे आपके शिष्य का भी पुनरुत्पादन होगा।[14]

स्व–अनुसंधान कार्य

प्रेरितों के काम की पुस्तक के उदाहरण हमारे लिये कुंजी तत्व प्रदान किये गये हैं, जिसे हम अपनी प्रस्तुति में शाि कर सकते हैं। यहॉ प्रेरितों के काम अध्याय 17 में पौलुस की प्रस्तुति को पूरा कर दिया गया है। प्रेरितों के व अध्याय 2 को परिक्षण करने के लिये समय लें, और पतरस के कुंजी तत्वों का पता लगायें।

प्रेरितों के काम 17:22–31	**रितों के काम 2:14–39**
* परमेश्वर को ऐसा बताया गया है: * सृष्टिकर्त्ता और सब का प्रभु (पद 24–26) * जीवित और जीवन देनेवाला (पद 27–29) * मसीह के द्वारा सब का न्यायी (पद 30–31) * मसीह के मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उद्धारकर्त्ता (पद 31) * पश्चाताप की मांग करनेवाला (पद 30)	

अन्त में हम देखते हैं कि उस स्त्री ने लोगों को यीशु के चरण में ले आई (पद 30)। यद्यपि हम लोगों को सामरिया के सुखार के कुंए के पास नहीं ला सकते, तौभी हम एक परिचय तो कर सकते हैं।

यदि आप किसी दो गैर–परिचितो को आपस में परिचय कराना चाहें, तो आप उन्हें एक–दूसरे के पास लायेंगे और उन्हें आपस में बात करने को कहेंगे। यदि दोनों के लिये केवल आप ही बात करें तो संबंध की शुरुआत कभी नहीं होगी। संबंध का निर्माण सम्पर्क में आने से होता है। जब हम परमेश्वर से बातचीत करते हैं, तो हम इसे प्रार्थना कहते हैं। गुणकारी विश्वासियों के लिये सरल प्रार्थना बनाने से संबंध का मार्ग खुल जाता है। जब खोजी भविष्य की समस्याओं का सामना करता है, तब वे वैसा ही फल लायेंगे जैसे कि उन्हें रुप दिया गया है। खोजियों के साथ पवित्रशास्त्र को खोलने से उन्हें परमेश्वर के प्रत्युत्तर को सुनने का अवसर प्राप्त हो जाता है। जब कठिनाई आ खड़ी होती है, तो वे खोजी आप उन कठिनाईयों को परमेश्वर के पास ला सकेंगे। ऐसा करने से वार्तालाप आरम्भ हो जाता है।

[14] खेतों में नये प्रचारकों को लॉच करने के लिये डिज़ाइन किये गये एक सरलीकृत सुसमाचार की प्रस्तुति का उदाहरण जॉर्ज पैटरसन के ''मसीह के सात कमान'' के अनुकूलन के भीतर पाया जा सकता है। यह रोमियों के चार छंदो पर बुलावा देता है, और छंदों के आवश्यक तत्वों को स्पष्ट करने के लिये एक सरल आरेख।

पद 42 इस खास बात को दिखाता है:

''और उस स्त्री से कहा, अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।।''

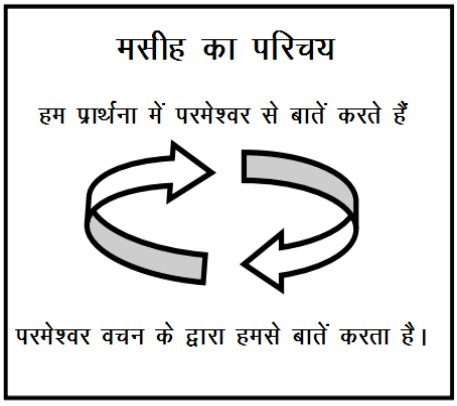

हरेक विश्वासियों से महान आदेश को लेने की उम्मीद की जाती है। इन चारों प्रमुख बातों को लागू करने की उम्मीद में आपके पास हर विश्वासी होते हैं, जिनमें विश्वासयोग्यता प्रगट हों, और वे किसी भी नेटवर्क में फलदायी प्रचारक बनें। इन प्रमुख बातों को संगठित करने के लिये इस सरल आकृति को इस्तेमाल करें:

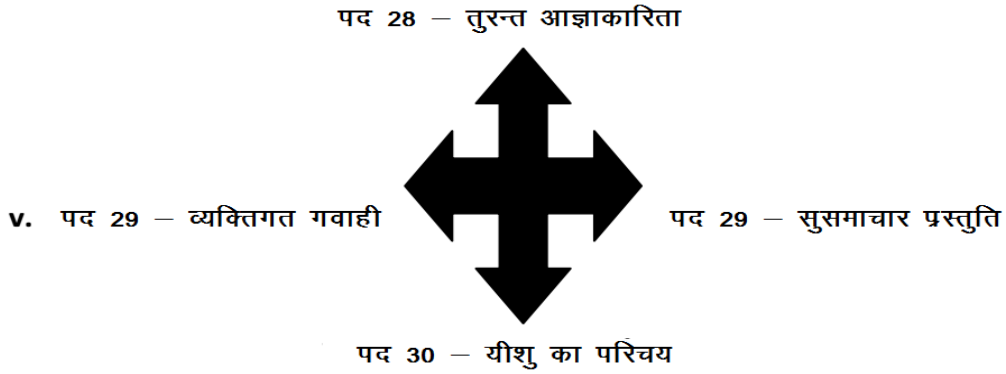

प्रशिक्षक के लिये उपकरण

जब नये विश्वासियों को ये चार प्रमुख बातें सीखायी जाती हैं, तो नीचे लिखित कथन को याद करने के लिये ध्यान में रखें।

(सिर पर हाथ रखते हुए)

''हम प्रभु परमेश्वर को तुरन्त आज्ञाकारिता का वचन देते हैं।''

(हाथ बाहर की ओर फैलाते हुए)

''हम व्यक्तिगत गवाही और सरल सुसमाचार प्रस्तुति के साथ लोगों तक पहूँचते हैं।''

(हाथ नीचे की ओर करते हुए)

''हम उन्हें मसीह का परिचय देते हुए एक नींव डालते हैं।''

योजना पर काम करना

अब जबकि हमने हरेक विश्वासियों को सक्षम व आदेशयुक्त प्रचारक के रुप में ठहरा दिया है, तो अब कलीसिया स्थापक के सामने सेना को जुटाने का कार्य रह जाता है। सेना को प्रशिक्षण देना और खेत में भेजना उच्च प्राथमिकता होतली है। आपके नेटवर्क में कुछ भी 100 प्रतिशत से कम बुवाई करना महान आदेश के समक्ष कम पड़ जाता है। इस कारण, अवश्य ही जवाबदेही की पद्धति ठहराया जाना चाहिये। पूर्व–स्थित नेटवर्कों के लिये यह कष्टदायक प्रक्रिया हो सकता है। आश्चर्य की अपेक्षा करें क्योंकि कई अनपेक्षित सुपर–उत्पादक –नेटवर्क के भीतर से उभरते हैं। उसी समय जवाबदेही के कारण कुछ लंबे समय के सुसमाचार प्रचारकों का नकाब उतर सकता है। 'ऐसे लोगों का खुलासा शीघ्र होगा, और या तो उसमें सुधार आयेगा, या बेदखल हो जायेगा।

जितना अधिक संभव हो सके, प्रार्थना के रुप में साप्ताहिक सहायता और व्योरा देने की पद्धति को स्थापित किया जाना चाहिये। चर्च के प्रत्येक सदस्यों से प्रतिदिन व साप्ताहिक अवसरों का लाभ लेने की उम्मीद रखना चाहिये। इस तरह से सच्चे विश्वासयोग्य और फलदायी विश्वासियों की पहचान करते हुए नयी कलीसिया शुरुआत के लिये अधिकार दिया जा सकेगा।

फल को पेड़ के स्वास्थ्य को निर्धारण करने की अनुमति दें!

व्यक्तिगत गवाही देने और सरल सुसमाचार प्रचार करने के बारे में एक दिन में सीखा जा सकता है। गैर–विश्वासियों की सूची को लेकर अब सेना आगे बढ़ने को तैयार है। उन्हें बाहर भेज दें, जैसे यीशु ने किया था, उन्हें वापस बुलायें ताकि वे अपने परिश्रम के फल का व्योरा दे।

स्मरण रहे, कि मूंह से कान तक की कुंजी प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार है। यहॉ तक कि जब बड़ी आबादी में सुसमाचार प्रचार उपकरण काम में लाया जाता है, तब भी सुसमाचार एक–एक करके फॉलो–अप पर रहता है। बोनेवाले की बढ़ोतरी से बीज में बढ़ोतरी होती है।

अन्त–दर्शन – सुसमाचार प्रस्तुति

इससे क्या होने जा रहा है?

एक बार फिर मान लें कि ''X'' जन समूदाय हैं जिनकी आबादी 10 लाख हैं। परमेश्वर की इच्छा को मन में रखते हुए (2 पतरस 3:9), कि कोई नाश न हो; इसलिये हमें अपने आप से पुछना चाहिये।

कितने बोनेवालों की जरुरत है ताकि हर कोई सुसमाचार सुन सके?

जैसे कि हम ''X'' जन समूदाय से मिलते हैं, तो हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने लुका 10 की प्रार्थना को सुन लिया है, और खेत में मजदूरों के लिये प्रत्युत्तर दे रहा है। इस कार्य का आकार निर्धारण कर लेने के बाद, कलीसिया स्थापक को परमेश्वर के द्वारा तय लक्ष्य का आकार का निर्धारण करने में मदद मिलता है, जिसके अन्तर्गत वह उसकी इच्छा को पूरी करने में योग्य ठहरता है।

हम यह मान सकते हैं कि एक विश्वासयोग्य सुसमाचार प्रचार या बीज बोनेवाला 8–10 घरानों के बीच सुसमाचार की गवाही बताने में, निरंतरता में बने रहने में सक्षम होता है। ये घराने औसतन 5 सदस्य प्रति परिवार, जो एक छतरी के नीचे कुल 50 लोग आते हैं।

एक विश्वासी सुसमाचार प्रचारक = 10 घरों तक सुसमाचार बांटता है।
प्रति घर 5 लोग = 50 लोगों तक सुसमाचार पहूँचता है
बीज बोनेवाले की छतरी के तले।

इसी बात को मन में रखते हुए, ''X'' जन समूह तक सुसमाचार तक पहूँचने के लिये कितने सुसमाचार प्रचारकों की जरुरत होगी?

''X'' जन समूह की आबादी = 10,00,000

1 विश्वासी बोनेवाला = 50 लोग

10 लाख को 50 से विभाजित किया गया = 20,000

10 लाख लोगों तक पहूँचने के लिये 20,000 बोनेवालों की जरुरत

''X'' जन समूह की आबादी का 10 प्रतिशत तक पहूँचने के लिये
2000 विश्वासयोग्य बोनेवालों की जरुरत।

लक्ष्य – सुसमाचार प्रस्तुति

मूंह से कान और सुसमाचार संतृप्ति

1. अस्तित्व में रहे नेटवर्क को शत–प्रतिशत प्रशिक्षित किया गया और अपनी कहानी (व्यक्तिगत गवाही) और उसकी कहानी (सुसमाचार प्रस्तुति) बताने के लिये जिम्मेदार ठहराया गया। इस तारीख तक .....।

   जैसे–जैसे नये विश्वासियों को जोड़ दिया जाता है, बपतिस्मा की खुशी मनाने में गवाही प्रशिक्षण को शामिल करने पर विचार करें। इससे आश्वासन मिलता है कि नये विश्वासी प्रशिक्षित हो चुके हैं, जैसे कि आप आगे बढ़ते जाते हैं।

2. जवाबदेही की जिम्मेदारी, सामूहिक प्रोत्साहन, और प्रत्येक विश्वासियों से साप्ताहिक व्योरा लेना। प्रत्येक विश्वासी को प्रति सप्ताह पॉच लोंगों को सुसमाचार बताने के लिये चुनौती देना।

   प्रत्येक नेटवर्क के अन्तर्गत विश्वासयोग्य बोनेवालों के लिये जैसे उचित समय हो, हर समूह प्रति सप्ताह मिला करे। यह कोई प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि कटनी के लिये प्रार्थना व प्रोत्साहन की बात हो।

खास क्रियाएं

विशिष्ट कार्रवाइयों का उत्तरदायित्व समूहों को मॉडल बनाती है, और अपने नेटवर्क के अंदर घर के प्रमुखों या ऐसे समूहों के अनुमानित नेताओं के साथ मिलकर कार्य करती है। निर्णय लेने से पहले कई संभावित सुसमाचार प्रस्तुतियों पर विचार करें।

यदि आवश्यक हो तो विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रस्तुतियों को उपयोग में लायें। विश्वासयोग्य व फलदायी लोगों को विविध प्रस्तुतियों का प्रयोग करने की स्वतंत्रता दें। बड़े समूहों में जो प्रभावकारी हो, उसी का उपयोग करें।

मूल्यांकन – यूहन्ना और चार प्रमुख बातें

6–10 के समूह में समय लें, और बोनेवालों को एक जुट करने से संबंध में यूहन्ना अध्याय 4 की यीशु की पद्धति का मूल्यांकन करें। विचार–विमर्श के लिये निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान करें। बल का निर्माण करने की ताक में रहें, और आपके प्रयासों में यदि कोई पूर्व–निर्धारित कमजोरी है तो उसे सुधारने के लिये कदम उठायें।

ध्यान देने के लिये प्रश्न

1. क्या यह आज्ञाकारिता पर आधारित है? जवाबदेही?

2. क्या यह जिम्मेदारी प्रदान करता है?

3. क्या यह गुणात्मक बढ़ोतरी की योजना बनाता है?

4. क्या इसमें अंदरुनी लोगों से मदद दिया गया है?

5. क्या यह स्व–अनुसंधान/खोज पर निर्भर करता है?

6. क्या इसका नेतृत्व कलीसिया गठन के लिये किया गया है?

7. क्या यह पुनरुत्पादनीय है?

प्रति "हाँ" वाले उत्तर का व्याख्यान करें। ये क्यों महत्वपूर्ण हैं?

खेत #3 – पुनरुत्पादनीय शिष्यपन

नयी बढ़ोतरी के खेत

उद्देश्यः

– विद्यमान व गुणवत्ता शिष्यपन उपकरणों का मूल्यांकन करना

– शिष्यपन प्रक्रिया और परामर्श देने के अभिनय को समझना

– हर नेटवर्क में शिष्यपन को विकास करना।

शिष्यपन की प्रस्तुति नयी बढ़ोतरी के खेत के द्वारा की जाती है। एक बार जब कल्याण/शांति के घर की पहचान कर ली जाती है, और सुसमाचार प्रचार कर दिया जाता है, तो यह सोचना स्वाभाविक हो जाता है कि घर में शिष्यपन की शुरुआत हो रही है। इससे अनेक लोग लाभान्वित हुए हैं। जैसे कि पहले बताया गया है, परिवार पर आधारित शिष्यपन विद्यमान अधिकार ढांचाओं को उपयोग करती हे। इस प्रकार के हमारे प्रवेश से, सुसमाचार और शिष्यपन की रणनीतियॉ उस घर से बेजोड़ बहती है जिसे परमेश्वर ने तैयार किया है।

इन नये विश्वासियों के लिये कलीसिया स्थापक की उम्मीदें गुणात्मक बढ़ोतरी की गुणवत्ता का निर्धारण करेगी। कलीसियाओं के नेटवर्क में जब–जब नये विश्वासीगण जोड़े जाते हैं, तब–तब एक नया निर्णय लेना जरुरी है। इसके लिये दो विकल्प विद्यमान हैंः

1. उन्हें पहले से ही अस्तित्व में रहे चर्च में इकट्ठा करें।
2. नये विश्वासीगण नई कलीसिया आरम्भ करे।

जबकि इन विकल्पों में से पहला में 90 प्रतिशत समय लगता है, तो दूसरा विकल्प बहूतायत से एक बड़े गुणवत्ता को प्रस्तुत करता है। जिन्होंने लुका 10 की प्रवेश रणनीति का अभ्यास कर लिया है, तो परमेश्वर के द्वारा प्रगट कल्याण का घर को ''गुणवत्ता कलीसिया आरम्भ'' के रुप में देखा जाना चाहिये।

खेत # 3 मांग करता है कि हम शिष्यपन के नमूने और हमारी पद्धति पर एक निकट दृष्टि डालें।

कुंजी प्रश्न – कैसे मैं शिष्य बनाता हूँ?

अल्पकालीन व दीर्घकालीन शिष्यपन को समझना

जब शिष्यपन पर ध्यान किया जात है, तो एक कलीसिया स्थापक दो वर्गों पर ध्यान करने में बुद्धिमान होता है अल्प–कालीन और दीर्घ–कालीन शिष्यपन। यदि इन दोनों को समझना है, तो इन दो प्रश्नों पर ध्यान करेंः

1. वह क्या है जो उन्हें शुरु करायेगा? – अल्प–कालीन
2. वह क्या है जो उन्हें चलायेगा? – दीर्घ–कालीन

अल्प–कालीन शिष्यपन – 1 से 3 माह तक का समय के लिये सोचें।

इस समय के अन्तर्गत जो पाठ सीखायी जाती है, वह एक नींव डालता है, या तो मजबुत या कमजोर, जिस पर मसीह में शिष्य के जीवन का निर्माण होता है।

आम तौर पर, अल्प–कालीन शिष्यत्व में पुनरुत्पादकता के सामग्रियों के आकार के 6–8 पाठ होते हैं। यदि बढ़ोतरी लक्ष्य है तो जिम्मेदारी, जवाबदेही, और पुनरुत्पादन आवश्यक है। इसका मतलब है कि मापनीय कार्य और लक्ष्यों को सामग्री को आगे बढ़ाना चाहिये। शिक्षण के ऊपर प्रशिक्षण को चुनें। कुछ भी सीखाया नहीं जाता, बल्कि सबकुछ अभ्यास कराया जाता है।

अल्प–कालीन शिष्यपन नये विश्वासियों के लिये डी़ एन. ए निर्धारित करता है। कलीसिया स्थापक को यह सच्चाई स्वीकारना चाहियेः

> एक शिष्य अपने विश्वास के प्रथम तीन महिनों में जो करता है, वह अपनी पूरी चाल में पुनरुत्पादन करता रहेगा। यदि शिष्य को चर्च के काम का निष्कपट पालन करने के लिये कहा जाता है, तो डी़ एन. ए निष्क्रियता हो सकती है। यदि शिष्य से आक्रामक रुप से दोस्तों और प्रियजनों को आगे बढ़ाने की उम्मीद किया जाता है, तो जो सीखाया गया है उससे पुनरुत्पादन होगा, और बढ़ोतरी अपनी गति निर्धारित करेगा।

दीर्घ–कालीन शिष्यपन – 1–3 वर्ष के लिये सोचें

चुंकि माता के द्वारा दुध का प्रबन्ध किया जाता है, तौभी परिपक्वता इस बात पर निर्भर करती है कि खुद को खिलाने की योग्यता हो। उसी प्रकार, दीर्घ–कालीन शिष्यपन का संचालन शिष्य के खुद की अनुसरण करने की योग्ता पर होना चाहिये। कलीसिया स्थापक को चाहिये कि वह ऐसी सामग्री चुनें जो परमेश्वर के साथ स्वस्थ चाल को बढ़ावा दे, और इसके साथ–साथ परिवार व समूदाय को बदलने की भी योग्यता पाई जाये।

जो सामग्रियां चुनी या विकसित की गयी, जरुरी है कि वो शिष्य के पूरे जीवन में सलाहकार बने रहने के लिये परमेश्वर के वचन की निर्भरता को प्रगट करे। परमेश्वर के वचन से नये विश्वासियों के लिये उसकी आवाज का खुलासा किया जाना अत्यन्त जरुरी है। पवित्र आत्मा एक शिक्षक है, आगे चलकर वह शिष्यों के व्यवहार व आचरण को मसीह के स्वरुप में बदल देता है।

इसी कारण दीर्घ–कालीन शिष्यपन में उन बदलाव लानेवाली उपकरणों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये, जो शिष्यों को जीवन भर मार्ग–निर्देशन करने में काबिल हो। जो शिष्य ऐसे उपकरणों को संभाल रखने में योग्य बन जाता है, वह वचन पर खड़ा होने के लिये स्वतंत्र हो जाता है। [15]

अल्प–कालीन शिष्यपन	दीर्घ–कालीन शिष्यपन
1–3 महीनों के लिये	1–3 वर्ष के लिये
आज्ञाकारिता का नमूना	आत्मिक मांस
आत्मिक दुध	खुद से खानेवाला
परामर्शदाता पर निर्भर	ढांचा को खड़ा करता है।
नींव डालता है।	

[15] जब कलीसियाएं बढ़ती जाती है तो आगे चलकर दीर्घ–कालीन शिष्यपन में थियॉलोजी के प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है। ऐसे प्रशिक्षण को ''विस्तार'' (Extention) कार्यक्रमों का बल माना जाता है, जिसमें आने–जाने की गति को धीमा तो करते हैं, तौभी वे अपने खेत के अगुवों से संबंध–विच्छेद नहीं होते। बल और संभावित कमजोरियों के लिये इस गुणकारी पद्धतियों का मूल्यांकन करें और प्राथमिक पद्धति के रुप में ''स्व–अनुसंधान'' को शामिल करने के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

अल्प–कालीन शिष्यपन के औजार

कोई भी अनुभवी कलीसिया स्थापक नें शिष्यपन पैकेज़/गठरी के मुल्य का खोज किया होगा।ऐसा पैकेज न केवल नये विश्वासियों की सही डी.एन.ए का आश्वासन देता है, बल्कि यह एक साथ मिलने की अभ्यास को भी सरल करता है। हो सकता है कि यह आदत ऐसी संस्कृति में स्वाभाविक न हो, जहॉ आराधना नीजी होती है। ऐसा दिख पड़ता है कि प्रेरित पौलुस ने आरम्भिक शिष्यपन के पैकेज को कार्य में लाया था। उसके पत्रियों में से अधिकांश में ''ठोस शिक्षा का नमूना'' पाया जाता है, जिसे उसने ''हर जगह के हर कलीसिया''[16] में सीखाया था। निःसंदेह यह मौखिक था, इसलिये हमारे पास पौलुस के नमूना का लिखित रुपरेखा नहीं है। तौभी हमारे पास हर जरुरी उपकरण हैं जिससे ठोस डी.एन.ए का पैकेज पुणः तैयार किया जा सके, ताकि विश्वासीगण मसीह के साथ अपनी चाल पुणः शुरु कर सके।

आरम्भिक शिष्यपन पैकेज सृजन करनाः

मत्ती 28:19–20 – *''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्रा और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।*

महान आदेश के अन्तर्गत, हमें सब जातियों के लोगों को चेला बनाने का आदेश दिया गया है। हम इसे बपतिस्मा देने और सीखाने के द्वारा करते हैं। ऊपर लिखित मत्ती के इन वचनों में, हमारी शिक्षा का बिषय और लक्ष्य क्या होगा?

उत्तर – हमारे प्रभु के आदेश के प्रति आज्ञाकारिता

कई बार, जैसे कि हम इस आदेश को पढ़ते हैं तो हम मान लेते हैं कि हमारा काम मसीह की सारी आज्ञाओं को लोगों के साथ जोड़ना है। हम में से हरेक अपने दैनिक जीवन में मसीह की आज्ञाओं की खोज व लागू करने में लगे रहते हैं। मुट्ठी–भर शिष्यों को लेकर सभी आज्ञाओं को सीखाने के प्रयास में जीवन भर का समय लग जायेगा। इस प्रकार के शिष्यपन के लिये कार्य बहुत बड़ा है, वास्तव में यीशु भी हमसे शिक्षण की उम्मीद नहीं रखते हैं। यह आदेश हमें आज्ञाकारिता सीखाने की जिम्मेदारी देता है। आज्ञा को सीखाने के विपरीत, आज्ञाकारिता का प्रशिक्षण को अल्प–काल में पूरा किया जा सकता है। एक शिष्य बनाने वाले के लिये आज्ञाकारिता की आदत या नमूना ही लक्ष्य होना चाहिये। इस रीति से, शिक्षक के चले जाने के बाद भी शिष्यता एक सीखुआ के रुप में बने रहता है, और आदत के दबाव से मसीह की आज्ञा का पालन करता है।

इसी कारण यह विचार करने का समय है कि हम कौन सी आज्ञाओं को आज्ञाकारिता के नमूने के रुप में उपयोग करने के लिये उपयोग करेंगे।

स्व–अनुसंधान कार्य

6–10 के समूह में, प्रेरितों के काम अध्याय 2:28–47 के अन्तर्गत प्रथम कलीसिया को ध्यान करने के लिये समय लें। कलीसियाई क्रिया–कलाप पर एक नोट लें। उन कार्यों को लिखें जिसे आपके शिष्य यीशु के प्रत्यक्ष आज्ञा में पूरा कर रहे हैं।

यहॉ उनकी सूची बनायें, और उन पदों को दोहरायें जहॉ वे पाये जाते हैं।

[16]पौलुस यहॉ ''हुपरटाइपोसिस'' शब्द का इस्तेमाल करता है, जो 2 तीमुथियुस 1:13, 1 कुरिन्थियों 4:17, और रोमियों 6:17 के नमूने को बताने के लिये है। ऐसा सलाह दिया गया है कि यही शब्द ''सुपर–स्टाईल'' के लिये सही–सही अनुवाद किया गया है। इन पदों में पौलुस ने तीमुथियुस के माध्यम से इफिसुस मे इस नमूने को बढ़ाया है, इसके साथ–साथ अक्विला और प्रिस्किला के द्वारा रोमियों की कलीसिया में, जहॉ उसने अपनी पत्री लिखे जाने तक दौरा नहीं किया था।

प्राचीन कलीसिया जिसका अभ्यास आरम्भ से किया करती थी, और हमारे शिष्यपन में इन तत्वों को प्राथमिकता देने से नये विश्वासियों को संचालन में सहायता मिलेगी, और यह नये विश्वासियों को बाइबलीय मिशाल बनने के लिये खड़ा करेगा। यीशु की आज्ञा के बारे में सीखाना कोई एक समय की बात नहीं है, बल्कि यह सदा चलनेवाली अभ्यास है, जिसे परमेश्वर के साथ उनके प्रेम से संचालित होता है (यूहन्ना 14:15, 14:21, 15:10)।[17]

प्राथमिक कलीसिया की आज्ञाकारिता से संबंधित बातों पर ध्यान करें।

हम देखते हैं कि कलीसिया इस अध्याय में मसीह की आज्ञाओं की सात बातों को पूरा करता है। वे हैं:

1. पश्चाताप और विश्वास – पद 38
2. बपतिस्मा – पद 39
3. प्रेम (सेवा, संगति और आराधना),
4. प्रभु का पालन करना – पद 42, 46
5. दान देना – पद 45
6. प्रार्थना – पद 42
7. महान आदेश – पद 38,47

यद्यपि यह सूची मसीह के आदेशों के लिये व्यापक नहीं है, यह हमें एक प्रारम्भिक बिंदु देता है, जो हमें आज्ञाकारिता का अभ्यास करना सीखाता है।[18] इस हस्तपुस्तिका में जो ''मसीह की सात आज्ञाएं'' हैं, उसे परखने के लिये समय लें।

ऐसा सुझाव दिया जाता है कि इन सातों आज्ञाओं में से एक का पालन करना नयी कलीसिया के द्वारा सामना की जानेवाली समस्या पर जय पाने के लिये उत्तर है। इन आज्ञाओं को ''दुध'' के रुप में देने से शिष्यपन आज्ञाकारिता के नमूने को आश्वस्त करता है कि उसमें नये विश्वासियों को तेजी से परिपक्व करने में सक्षम है।

दूसरों से बीनना/संग्रह करना

इससे कोई लाभ नहीं, कलीसिया स्थापक को यह नहीं कहा गया है कि वह फिर से पहिये का अविष्कार करे। शिष्यपन के आरम्भ में कई गुणवत्ता विद्यमान रहते हैं। ऐसी सामग्री का खुलासा हमारे प्रयासों को तेज करकने और बढ़ाने के लिये कार्य करता है। उपरोक्त वर्णित क्षेत्रों में अपनी ताकत के आधार पर इन सामग्रियों को अपने संदर्भ में अपनाने या अनुकूल करने के लिये विचार करें।[19]

Universal Disciple, Thom Wolf copyright 2004, University Institute available for download at www.universaldisciple.com.

Seven Commands of Christ, George Patterson to order extensive materials visit www.trainandmultiply.info.

New Life in Christ, Thomas Wade Akins available for download at: www.pioneerevangelism.org.

Teach them to Obey, R. Bruce Carlton, Acts 29, to order materials visit: www.go2southasia.org/authors.html.

Training for Trainers, "John Chin" – T4T – (Web publication forthcoming)

New Believers Study – Contact the National Resource Center a branch of "Operation Agape" India see also the "*Beginning With Christ Series*" from the same publisher.

[17] यह ध्यान दिया जाना चाहिये कि पहली पीढ़ी के विश्वासियों में पिछली रचना पर आधारित प्रणाली को मसीह के उद्धार की अनुचित समझ से बदलने की प्रवृति पाई जाती है। यही हमारा आशय है जो मसीह की भक्ति व आज्ञाकारिता को कर्म पर आधारित पद्धतियों से अलग करती है। हम उद्धार से कर्म करते हैं, न कि उद्धार की ओर कर्म। प्रभुत्व उद्धार का प्रत्युत्तर है, न कि तपस्या। अपने शिष्यपन में जो मकसद है, उस पर जोर दें।

[18] जॉर्ज पैटरसन द्वारा सात आदेशों के एक मुद्रण–योग्य संदर्भ, जो हमारे अनुकूल हैं; एक प्रतिलिपि प्रस्तुत करने योग्य बाईबल अध्ययन विधि और एक कहानी दृष्टिकोण को एकीकृति करता है, इस हस्त–पुस्तिका के परिशिष्ट को देखें।

[19] जवाबदेही को बढ़ाने के लिये ''मसीह के 7 आदेशों के अनुकूलन'' के लिये परिशिष्ट देखें।

प्रशिक्षकों के लिये अभ्यास

– इस हस्त–पुस्तिका के परिशिष्ट में दी गयी ''सात आज्ञाओं की पुस्तिका'' की जॉच करें। इसकी कमजोरी और बल को मूल्यांकन के लिये ऊपर दिये गये प्रश्नों पर ध्यान करें।

–अपने प्रशिक्षण समूहों के लिये नियुक्त करें ताकि वे सप्ताह भर इस पुस्तिका से विभिन्न पाठों की शिक्षा का अभ्यास करें। इन नमूनों का अभ्यास किया जाना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि इन सामग्रियों को सीखना। जब वे सीखाते हैं तो उनके लिये निम्नलिखित मार्गदर्शन दें।

प्रशिक्षण नमूने की सात आज्ञाएं – इन पाठों को सीखाने के लिये मार्गदर्शन।

निम्नलिखित मार्गदर्शन आश्वस्त करती है कि हरेक विश्वासी वह पुनरुत्पादन कर सकते हैं, जो उन्हें सीखाया गया है। यह हमारा लक्ष्य है, पाठों के पुनरुत्पादन से शिष्यों में बढ़ोतरी।

1. कहानी बतायें – एशिया में दो में से एक व्यक्ति पढ़ नहीं सकते हैं। इस कारण से हम एक नमूने का पालन करें जिसे हर कोई अनुशरण कर सके। जब आपने कहानी बता दिया है, तो प्रश्न पुछते हुए इसे दोहरायें ताकि उनकी समझ को परखा जा सके। यह सृजनात्मक विधि है जिससे प्रशिक्षकों को कहानी दोहराने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। आप इसे अपने संगी को बता सकते हैं, नाटक करके दिखा सकते हैं, या फिर से पूरे समूह को बता सकते हैं। इस तरह से प्रशिक्षकों के द्वारा कई बार पूरी कहानी कहा और सुना जाता है।

2. बाईबल से वचन के अंश और इसके सीखाने के बिंदु स्वयं प्रशिक्षकों के द्वारा ही किया जाना है – ''तलवार'' अर्थात् बाईबल अध्ययन के प्रश्नों का उपयोग करें ताकि कहानी का अर्थ स्पष्ट किया जा सके। प्रचार न करें! विचार–विमर्श करें ताकि इसके अर्थ को समझा जा सके।

3. दिये गये कार्य पर जोर दें – शिष्यपन वह नहीं है जो हम जानते हैं, परन्तु जो हम करते हैं।

प्रशिक्षक के लिये उपकरण – दीर्घ–कालीन शिष्यपन

1. बाईबल अध्ययन की पद्धति

एक सरल पुनरुत्पादनीय बाईबल अध्ययन पद्धति का संचालन दीर्घ–कालीन शिष्यपन के लिये किया जा सकता है। इसका स्थान और कुछ नहीं ले सकता। इन्हें परिवार की शक्ति के अनुकूल बाईबल अध्ययन मानें।

1). घर या परिवार समूह नये विश्वासियों में परस्पर जवाबदेही और प्रोत्साहन सृजन करती है। यह सामूहिक पहचान को मसीह की देह के रुप में एक करती है।

2). परिवार के अनुकूल बाईबल अध्ययन लिखित और मौखिक शैली प्रदान करता है। सामूहिक अध्ययन प्रति घर केवल एक पढ़नेवाले की मांग करता है।

3). तरीकाबद्ध अध्ययन का मतलब सामग्रियों को संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है। बाहरी सामग्रियां केवल बाहरी मुद्दों के लिये प्रस्तुत की जाती है। यहॉ बाईबल को शिष्यपन के श्रोत के रुप में देखा जाता है।

4). यह तुरन्त परामर्शदाता के बिना भी विभिन्न इलाकों में अनेक शिष्यपन के समूहों का संचालन में योग्य बनाता है। एक कलीसिया स्थापक को विभिन्न इलाकों के लिये यह जरुरी होता है।

5). भागीदारी अध्ययन/विचार–विमर्श आत्मिक वरदानों को व्यक्त करने की अनुमति देता है, जो उस समूह में पाया जाता है।

शिष्यों को ''पढ़ने के निर्धारित समय'' प्रदान करने से जवाबदेही का एक सामान्य रुप सृजन होता है। सीखाये गये पाठ से प्रतिक्रिया लेने से, प्रश्न और मुश्किलें इस पद्धति में स्वाभाविक रीति से प्रगति करता है। ऐसा निर्देशित अध्ययन के एक पुस्तिका को रखकर और दिये गये प्रश्नों के उत्तर से किया जा सकता है। उन परामर्शदाताओं के लिये, जो एक ही बार में कई समूहों का देखभाल करते हैं, शीघ्र ही प्रत्युत्तर परामर्शदाता को इस योग्य बना देता है कि वो चिंता या भ्रम के क्षेत्र की बात बताये।

यहॉ बाईबल अध्ययन पद्धति से दो उदाहरण हैं, जो प्रत्युत्तर (फीडबैक) को शामिल करते हैं। प्रत्येक सरल प्रश्न के नमूने का इस्तेमाल करता है, जिसे इस रीति से रचा गया है कि वो बाईबल के सिद्धांत और इसकी उपयोगिता को प्रगट करे।

तलवार

विवरण – इब्रानियों 4:12 में बाईबल कहती है:

''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।''

परमेश्वर और मनुष्य के बारे में वो सभी बातें जो हमें जानने की जरुरत है, बाईबल में प्रगट की गयी है। परमेश्वर दृष्टांतों के माध्यम से हमें अपनी इच्छा प्रगट करता है, और आदेश देता है कि हम उसका पालन करें। जो कोई भी परमेश्वर को जानना चाहता हो, और यीशु के पीछे चलना चाहता हो; उसे जरुर ही बाईबल की बात सुनना चाहिये और इसके पाठों को पालन करने की ताक में रहना चाहिये। जब बाईबल की बात सुन ली गयी है, तो इन प्रश्नों को पुछने के द्वारा इसका अर्थ समझ सकते हैं:

1. ऊपर की ओर तलवार परमेश्वर को दिखाती है। इससे हम यह प्रश्न पुछते हैं: **हम परमेश्वर से क्या सीखते हैं?**

2. नीचे की ओर की तलवार मनुष्य को दिखाती है। इससे हम यह प्रश्न पुछते हैं: **हम मनुष्य से क्या सीखते हैं?**

3. दो–धारी तलवार हमारे जीवन को छेदता है और बदलाव लाता है। वे हमें ये प्रश्न पुछने के लिये अगुवाई करते हैं: **क्या कोई आज्ञा या उदाहण हैं जिसका अनुशरण किया जाना चाहिये?**

4. अगल–बगल के तीर हमें उन वचन–खण्ड को दिखाते हैं जो हमारे कार्य के आगे–पीछे हैं। वे हमें ये प्रश्न पुछने का कारण बनाते हैं: **हमनें जो सीखा है, वो कैसे संदर्भ के लायक होता है?**

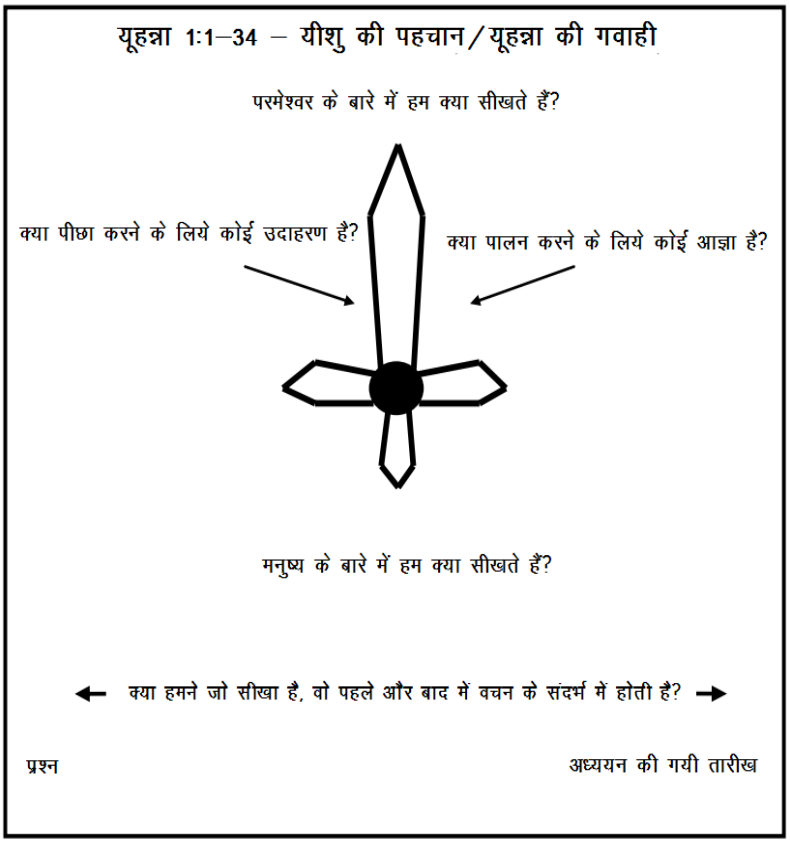

जब हम बाईबल से सुनते और ये प्रश्न पुछते हैं, तो परमेश्वर हमारे लिये खुद को और खुद की इच्छा को प्रगट करेगा। बाईबल एक तलवार की मानिन्द हो जायेगा, जो हमारे जीवन के उस किसी भी भाग को काट डालेगा जिससे वह प्रसन्न नहीं है। हम इन गलत विचारों को उस सत्य से बदल सकते हैं जो हम परमेश्वर के बारे में पढ़ते हैं, और हम वचन से जो पाते है और उदाहरण व आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी हो जाते हैं।

हमें प्रतिदिन बाईबल से सुनना चाहिये। आपको आपके परिवार के साथ परमेश्वर का वचन सुनना और एक साथ ये चारों प्रश्न पुछना चाहिये। प्रत्येक कहानी में परमेश्वर जो उत्तर देता है, उस पर विचार–विमर्श करें। यदि कोई उत्तर आप पाते हैं, तो उसे उस प्रश्न के बगल में लिख लें। यदि कोई बात आपको समझ में न आये तो उस बात को पृष्ट के नीचे लिखा जा सकता है, ताकि आप उसे बाद में पुछ सकें।

उदाहरण – बाईबल के अध्ययन पुस्तकों के लिये तलवार का उपयोग करना एक सरल काम है। यहॉ यूहन्ना की पुस्तक की श्रृंखला से पहला पाठ दिया जा रहा है। बाईबल के पुस्तकें आसानी से कहानी के अन्तर्गत स्वाभाविक प्रभागों के आधार पर दैनिक अध्ययन के लिये निर्दिष्ट की जा सकती है।

वचन की चार उपयोगिता

विवरण – 2 तीमुथियुस 3:16–17 में बाईबल कहती है:

> *हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।।*

2 तीमुथियुस के ये पद वह प्रगट करता है जो परमेश्वर अपने वचन को हमारे जीवन मे उपयोग करता है। परमेश्वर के वचन की चार उपयोगिताएं हैं।[20] वे हैं, शिक्षा देने, फटकारने, सुधारने, और शिक्षा देने के लिये। वे एक साथ मिलकर हर भले कार्य के लिये भरपूरी के उद्देश्य को पूरा करते हैं। जब हम खुद को परमेश्वर के वचन के प्रति खोल देते हैं, तो पवित्र आत्मा वचन को इन्हीं तरह से उपयोग करता है। जब हम वचन के इन चार उपयोगिताओं पर ध्यान करते है, तो ये चार प्रश्न हमारे मन में आता है:

शिक्षा देने – क्या सही है?	फटकार लगाने – क्या सही नहीं है?
सुधारने – कैसे हम सही हो सकते है?	सीखाने – कैसे हम सही रह सकते हैं?

जैसे कि हम परमेश्वर के वचन से पढ़ते या सुनते हैं, तो हमें ये चार प्रश्न पुछना चाहिये। वे एक साथ मिलकर हमें परमेश्वर की आवाज सुनने को मदद कर सकते हैं। यह उसकी इच्छा के अनुकूल होने के लिये हमारे जीवन को बदलता है। सभी वचन–अंश इन चारो प्रश्नों का उत्तर नहीं देता, परन्तु एक वचन–अंश कम से कम किसी एक प्रश्न का उत्तर देगा। जैसे कि आप बाईबल की पुस्तकों को पढ़ते जायेंगे, अपने साथ एक दैनिक नोट–बुक रखे और उसमे उन उत्तरों को लिखें। इसके साथ–साथ उन बातों को भी लिखें जो वचन के कारण प्रभु ने आपके जीवन में बदलाव किये हैं।

उदाहरण– 2 तीमुथियुस के प्रश्न चिन्हित रुप से अच्छी तरह से काम करते हैं, अन्यथा पत्रियों, भजनों, और नीतिवचन में कठिन सामग्रियां प्रस्तुत की गयी है। जिन गद्यांशों में कहानियां नहीं हैं, वे नये विश्वासियों के लिये चुनौतियां खड़ी करती है। इन सरल प्रश्नों को पुछने से इसके अर्थ प्रगट होने में सहायता मिलती है।

[20] ये चारों अंग्रेजी बाईबल एन.आई.वी के अनुवाद पर आधारित है (हिन्दी में बाईबल सोसायटी ऑफ इंडिया से लिया गया है)। विभिन्न भाषाओं में विभिन्न अनुवादों व शिक्षाओं की उपयोगिता में इन शब्दों के लिये सामान्य समायोजन की मांग की जाती है, जो इस नमूने में उपयोग की गयी है।

कुलुस्सियों 1:1–29 – पौलुस का कार्य/मसीह की प्रधानता

इस वचन–अंश को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

1). क्या सही है?

2). क्या सही नहीं है?

3). कैसे हम सही होते हैं?

4). कैसे हम सही रह सकते हैं?

प्रश्न **अध्ययन की गयी तारीख**

पाठों की कढ़ाई करना

जैसे बाईबल अध्ययन पद्धतियां तरीके से शिष्यों को बाईबल की पुस्तकों में से होकर आगे लिये चलती है, तो जो विश्वासयोग्य हैं, उन्हें जो सत्य प्रगट की गयी है उसे स्वाभाविक तौर पर सीखाना शुरु कर देंगे। इन उगते शिक्षकों को एक–जुट करना वैसे ही आसान होता है जैसे कि एक सरल उपकरण प्रदान करना।

वचन के एक छात्रों के हाथों में नीचे दिये गये एक चार्ट या तालिका के समान शिष्यता सामग्री का एक अंतहीन प्रवाह बनाता है। परमेश्वर या मनुष्य के बारे में कोई भी सच्चाई किसी भी उदाहरण या आज्ञा का पालन करने के लिये बाईबल अध्ययन विधियों का इस्तेमाल करके समूह के सबक बनाने के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है।

नीचे सामूहिक पाठों के समूच्य का एक उदाहरण है जो यूहन्ना अध्याय 1 से लिया गया है:

बाईबलीय सच्चाई – ये वे सत्य हैं जिन्हें बाईबल अध्ययन पद्धति में पुछे गये सरल प्रश्नों से खोजा गया है। इन पदों को व्याख्या करना ही प्रत्येक पाठ का उद्देश्य है।

उदाहरण/कहानियां – यहॉ एक शिक्षक ने क्रियान्वय बाईबलीय सत्य का पता लगा लिया है। यह उपकरण खासकर उन समूच्य में सहायक होता है जहॉ कहानी बताना ही सीखाने का प्राथमिक अवस्था होता है।

निर्देशन – यहॉ एक शिक्षक ने उक्त वचन की व्याख्या के लिये एक अन्य वचन पा लिया है, जो बाईबलीय सत्य को समझने में सहायक होगा। इसे कहा जाता है: वचन ही वचन को अनुवाद करता है।

क्रिया/अनुशासन – यहॉ श्रोताओं के अभ्यास के लिये, एक शिक्षक ने बाईबलीय सत्य की खास उपयोगिता को सूचीबद्ध किया है। इस पर काम करने के लिये जवाबदेही अगले सप्ताह के लिये छोड़ दिया जाना चाहिये।

गृहकार्य – यूहन्ना 1:40–42 में सत्य का निर्माण करते हुए तीसरे पाठ को पूरा करने के लिये समय लें।

पाठ कढ़ाई की तालिका			
बाईबल सत्य	**उदाहरण/कहानियॉ**	**निर्देशन**	**कार्य/अनुशासन**
यूहन्ना 1:1–3 सबकुछ यीशु/परमेश्वर के द्वारा सृष्टि की गयी।	उत्पति अध्याय 1 और 2 परमेश्वर ने अपने सामर्थी वचन से सबकुछ की सृष्टि की।	प्रेरितों के काम 17/ निर्गमन 20 सृजनहार आराधना चाहता है। किसी और के पीछे न चलें।	निर्गमन 20:2–3 केवल परमेश्वर ही स्तुति के योग्य है। मूरतों/झुठी आराधना को निकाल दें।
यूहन्ना 1:14 सत्य और अनुग्रह यीशु के द्वारा आया	लुका 23:26–43 यीशु का क्रुसीकरण/डाकू ने अनुग्रह पाया।	इफिसियों 1:3–14 परमेश्वर के अनुग्रह तक पहूॅचना यीशु के लहू के द्वारा होती है।	2 कुरिन्थियों 9:8 परमेश्वर के अनुग्रह से इस सप्ताह किसी की जरुरत को पूरा करें।
यूहन्ना 1:40–42 –			

नमूना के लिये सामग्री उत्पादन करना एक आवश्यकता है। एक या दो दिल की कार्यशालाओं के लिये अपने नेटवर्क से उपयोगी शिष्य बनानेवालों को इकट्ठा करना, ऐसी सामग्री के लिये प्रारंभिक बिंदु के रुप में काम कर सकता है। जब तक प्रत्येक अगुवे स्वतंत्र सामग्री उत्पादन का दर्शन न पकड़ ले, ऐसी तालिका उत्पादन की आवश्यकता के लिये समय लें।

मासिक या तिमाही सभा इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते रह सकता है। जब कभी वे इकट्ठा होते हैं, उन्हें इस प्रकार के पाठों का उत्पादन करते रहना चाहिये। उसी तरह से, किसी तय जगह में इकट्ठा होने (रीट्रिट) भी अगुवों के लिये जरुरी जवाबदेही प्रदान करता है, जिन्हें खेत के लिये ऐसी सामग्री पुनरुत्पादन तैयार करने को कहा जाता है।

कार्य योजना बनाना

इफिसियों 4:11–12 सीखाती है कि परमेश्वर अपनी कलीसियाओं के लिये शिक्षक प्रदान करता है। इस बात को जानने का मतलब एक कलीसिया स्थापक भरोसे के साथ शिक्षा देने के कार्य को नये विश्वासियों के हाथों सौंप देना चाहिये, जिन्हें परमेश्वर ने हर नयी कलीसिया के अन्तर्गत चुना है। पौलुस का नयी कलीसिया आरम्भ करने का उदाहरण और उन्हें अगले कार्य के लिये जल्द ही स्वतंत्र कर देना इस बात की पुष्टि करता है कि परमेश्वर कटनी ही से ऐसे अगुवों को प्रदान करता है। कलीसिया स्थापक, जो विश्वासयोग्य लोगों की पहचान करता है, उन्हें उन शिक्षाओं को देने के लिये प्रोत्साहन करता है जो उन्होंने सीखा है।

एक शिष्य, जिसने एक आज्ञा को सुना और उसका पालन करता है, वह दूसरों को सीखाने के लिये तैयार है।

ऐसे अगुवों को विकसित करने के लिये हमारे पास जो सबसे बड़ा संसाधन होता है, वह है हमारा समय। हम अवश्य ही अपने समय का सही प्रबन्ध करें, और विश्वासयोग्य लोगों के लिये समय की प्राथमिकता दें। जो उन आदर्शों को लेकर दूसरों को सीखाने के काबिल होंगे। अब प्रार्थना के लिये समय लें, और उनके लिये प्रार्थना करें जो आपके नेटवर्क के अन्तर्गत गुणकारी शिष्य बनाने वाले हैं। नीचे उनके नाम की सूची बनायें।

गुणकारी शिष्य बनाने वाले

उन लोगों के नाम लिखें जिन्हें परमेश्वर ने आपको नये विश्वासियों को शिष्य बनाने के लिये दिया है।

1.	6.
2.	7.
3.	8.
4.	9.
5.	10.

अब गुणकारी शिष्य बनानेवालों की पहचान कर ली गयी है, अब कैसे आप उन्हें एक–जुट करेंगे? किसी तय स्थान में मिलने या प्रशिक्षण देने के समय, जो कि सरल आरम्भिक सामग्रियों और प्रणालियों को ढांचा देता है; जो कि समूह को संगठित करने के लिये कार्य करता है, सहायक हो सकता है। उन क्षेत्रों में, जहॉ यह वित्त या दूरी के कारण संभव नहीं है, एक पर एक परामर्शदाता जरुरी हो जाता है। स्मरण रहे कि विश्वासयोग्य लोग हमारे समय के हकदार होते हैं। एक के साथ एक की सेवकाई एक नीजी सेवकाई है, जो हमारी दूनिया को बदल देगी।

शिष्यों का पुनरुत्पादन करने का तात्पर्य सामान्य आरम्भिक शिष्यपन से है। जैसे कि नये विश्वासियों को बीज बोने के द्वारा शामिल किया जाता है, तो कैसे आप उन्हें समूहों में इकट्ठा करेंगे?

क्या आप घर के आधिकारिक ढांचा का उपयोग करेंगे, या उन्हें पहले से अस्तित्व में रहे कलीसिया में इकट्ठा करेंगे?

सबसे पहले आप उन्हें क्या सीखायेंगे?

कैसे आप उन्हें आज्ञाकारिता के प्रति जवाबदेह बनायेंगे?

ये सभी प्रश्न शिष्यपन की योजना बनाने के भाग हैं। जब आपके नेटवर्क में शिष्य बनानेवालों का दल गठन कर लिया जाता है, तो उन्हें अवश्य ही सरल उपकरणों के हस्तांतरण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये, ताकि बढ़ोतरी हो सके।

शिष्यपन और शिष्य बनानेवाले दोनों को हमेशा आपके नेटवर्क की छोर तक धकेलना चाहिये।

जो विश्वासी पहले ही से हैं, उनके साथ बाईबल अध्ययन पद्धति को उपयोग करना आरम्भ कर दें। जब वे अपने ''ओइकोस'' तक पहूॅचते हैं, तो उन्हें प्रोत्साहित करें ताकि वे नये विश्वासियों के लिये इन नमूनों की पद्धति को आगे बढ़ाने में सक्रिय रुप से भाग लें। जो परिवार एक साथ बैठकर वचन का अध्ययन करते हैं, वे अपने समूदायों पर प्रभाव डालेंगे।

अन्त–दर्शन – शिष्यपन

इससे क्या होने जा रहा है?

एक बार फिर मान लें कि ''X'' जन समूदाय हैं जिनकी आबादी 10 लाख हैं। मन में परमेश्वर के बताये गये इच्छा (2 पतरस 3:9), कि कोई भी नाश न हो, को याद रखते हुए अवश्य ही यह प्रश्न पुछें:

उनमें मत्ती 28:19–20 को पूरा करने के लिये कितने शिष्य बनानेवालों की जरुरत पड़ेगी?

जैसे कि हम ''X'' के बीच में बढ़ती फसल को इकट्ठा करते हैं, तो हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने स्त्रीयों और पुरुषों को चुना है, और उन्हें सीखाने के कार्य के लिये नियुक्त किया है (इफिसियों 4:12)। शिष्य बनानेवालों की खोज करना और उन्हें सरल व पुनरुत्पादनीय उपकरणों से भरपूर करना ही हमारा मुख्य ध्यान–केन्द्र होना चाहिये। इस कार्य के आकार को निर्धारण कर लेने से कलीसिया स्थापक परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिये परमेश्वर के आकार का लक्ष्य निर्धारित करने में सक्षम हो जाता है।

हम यह मान सकते हैं कि एक विश्वासयोग्य शिक्षक पॉच घरों में शिष्यपन को बनाये रखने और इसके प्रति जवाबदेही में सक्षम है। ये घराने, प्रति घर औसतन पॉच शिष्य हैं, जो 25 शिष्यों की एक छतरी बनाता है।

एक विश्वासी शिक्षक = 5 घरों में शिष्यपन

5 शिष्य प्रति घर 25 लोगों के बराबर

शिक्षक की छतरी के अन्तर्गत

इसे मन में रखते हुए, ''X'' के 10 प्रतिशत लोगों को शिष्य बनाने के लिये कितने शिष्य बनानेवालों की जरुरत होगी?

''X'' की जनसंख्या 10,00,000 – 10 प्रतिशत = 1,00,000

1 विश्वासी शिष्य बनानेवाला = 25 लोग

10,00,00 ÷ 25 = 4,000 शिष्य बनानेवाला

लक्ष्य – शिष्यपन

अल्प–कालीन समय को सरल बनाना

1. **मैं तीन माह के अन्दर संख्या ..... के गुणकारी शिष्य बनानेवाले की पहचान करुंगा।**

   जैसे ही हर इलाके में नये विश्वासियों को जोड़ा जाता है, तो जरुरी है कि इस लक्ष्य को उन में दिया जाये। नेटवर्क के छोर तक शिष्यपन निरंतर और अधिक शिष्य बनानेवालों की आवश्यकता का नवीकरण करता है।

2. **हम हर महीने अपने इलाके में सीखाये गये शिष्यपन कार्यशालाओं को नमूने के लिये सीखायेंगे, और परामर्शदाता शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे।**

परामर्श देने/लेने वाले समूहों को नित्य मिलना चाहिये ताकि आरम्भिक शिष्यपन पद्धतियों और सामग्रियों को नमूने में ढाला जाये, दीर्घ–कालीन पाठों का सृजन किया जाये, और पहले के गृह–कार्यों की जवाबदेही दिया जा सके।

3. **हम प्रधान शिक्षक की सूची बनायेंगे जो खेतों का विस्तार करने में परामर्श देने की प्रक्रिया का पुनरुत्पादन करने में काबिल हो।**

   इन प्रशिक्षकों को आपके नेटवर्क में से विश्वासयोग्य व फलदायी लोगों में से पहचान कर लेना है। इन पुरुषों व स्त्रीयों पर ध्यान केन्द्रित करने से शिष्यपन समूहों में बढ़ोतरी होगी।

विशेष कार्य/कार्रवाही

1. **ऊपर से नीचे तक नमूने की जवाबदेही शुरु करें। आपके नेटवर्क के हर स्तर के अगुवापन के जीवन में पौलुस और तीमुथियुस दोनों का जीवन होना चाहिये।**

2. **अपने तय समय का मूल्यांकन करें ताकि आप अपने अंदरुनी चक्र में जो समय गुजारते है, उसमें समय की प्राथमिकता का निश्चय हो सके।**

3. **आरम्भिक शिष्यपन के पाठों के समूच्य को दृढ़ करें। इससे आपके नेटवर्क में समरुपता आयेगी, और एक स्वस्थ डी.एन.ए को बढ़ावा मिलेगा।**

4. **जितना संभव हो सके, अपने अंदरुनी चक्र में शिष्यों के पुनरुत्पादन के लिये अपने दर्शन में ''बड़ा दृश्य'' रखें। आपके द्वारा स्वतंत्र रुप से दिये गये अधिकार से वे आदर्श/नमूना बनेंगे।**

मूल्यांकन – मसीह की सात आज्ञाएं/तलवार

6–10 के समूहों में नये विश्वासियों के लिये मसीह की सात आज्ञाओं का मूल्यांकन करने के लिये समय लें। विचार–विमर्श के लिये निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान दें। मजबुती का निर्माण की ताक में रहें, और आपके प्रयासों में जो पूर्व–निर्धारित है, उसे सुधारने के लिये कदम उठायें। इसके लिये परिशिष्ट को देखें।

ध्यान करने के लिये प्रश्नः

क्या यह आज्ञाकारिता/जवाबदेही पर आधारित है?

क्या यह जिम्मेवारी देती है?

क्या यह गुणात्मक बढ़ोतरी की योजना बनाती है?

क्या यह अंदरुनी लोगों के द्वारा चलाये जाते हैं?

क्या यह आत्म–खोज पर आधारित है?

क्या यह कलीसिया गठन के लिये अगुवाई करता है?

क्या यह पुनरुत्पादनीय है?

प्रत्येक ''हॉ'' उत्तर की व्याख्या करें। क्यों ये महत्वपूर्ण है?

खेत #4 – पुनरुत्पादन योग्य कलीसिया गठन

पके खेत

उद्देश्यः

– बाईबलीय कलीसिया के कार्य व उद्देश्य को समझना।

– कलीसिया के स्वास्थ्य के लिये बाईबलीय मार्गदर्शन को जॉचना।

– अपने नेटवर्क के अधीन विद्यमान कलीसियाओं को ईमानदारी से मूल्यांकन करना।

– कलीसिया गठन में अगले कदमों को रुप देने के लिये उपकरणों का परिचय करना।

कलीसिया गठन से हम सामान्य भाव से समझते हैं कि यह कटनी को बांधना और मसीह की देह की सामूहिक पहचान में बदल देना है। यह कार्य केवल कलीसिया स्थापक पर निर्भर नहीं है। यह परमेश्वर ही है जो अपने समय में अपनी कलीसिया को स्थापित करता है। कलीसिया स्थापक के लिये इस कार्य में परमेश्वर के साथ हो लेने का मतलब दूसरों की प्रतिनिधित्व करते हुए इस कार्य को पूरा करना है। कलीसिया स्थापक के लिये प्रश्न यह हैः

कुंजी प्रश्न – कैसे हम कलीसिया का गठन करते हैं?

आईये हम अन्त को ध्यान में रखते हुए शुरु करें। कलीसिया स्थापक के लिये इन दो स्तरों पर कलीसिया के लिये सोचना सहायक होगा।

1. एक कलीसिया क्या होता है?
2. एक कलीसिया क्या करता है?

अपने नेटवर्क के अगुवों के साथ इन सवालों के जवाब देने के लिये समय लेते हुए सामान्य दर्शन को मजबूत कर सकते हैं, और स्वस्थ कलीसिया में आने के लिये आवश्यक चरणों के मूल्यांकन को बढ़ावा दिया जा सकता है। चर्चों को बढ़ावा देने के लिये निम्नलिखित अध्ययनों का उपयोग करें । स्वस्थ कलीसिया की अपनी परिभाषा को विकसित करने के लिये समय निकालें।[21]

स्व–अनुसंधान अध्ययन – स्वस्थ कलीसिया की पहचान

निम्नलिखित पदों को पढ़ें और कलीसिया पहचान के विवरण पर विचार–विमर्श करें।

1. 1 पतरस 2:9–10 –
2. 2 पतरस 2:5 –
3. 1 कुरिन्थियों 12:12–13 –
4. 2 कुरिन्थियों 5:17 –
5. 1 तीमुथियुस 3:15 –

[21] कलीसिया की पहचान और कार्य से संबंधित पवित्रशास्त्रीय वचन के साथ सहायता पाने के लिये इस पुस्तक के संकलन को देखें: *"The Baptist Faith and Message 2000"*. Available for download at: www.sbc.org.

बाईबलीय कलीसिया के कार्यों को समझना आवश्यक है। बाईबलीय लेख कलीसियाई क्रिया–कलापों के लिये उदाहरण प्रदान करता है। स्रोत ही से कलीसियाई गतिविधियों को जॉच लेने से हमें बाद में मौजूदा कलीसियाई परम्परा का मूल्यांकन करने में मदद मिलेगी, जो स्वस्थ अग्रिमों को बढ़ावा देगी कि नहीं।

स्व–अनुसंधान अध्ययन – स्वस्थ कलीसिया की गतिविधि

पढ़े, प्रेरितों के काम 2:41–47 और प्रेरितों के काम 11:19–26 और 13:1–1। एक स्वस्थ कलीसिया क्या करती है? नीचे अपना उत्तर लिखें।

1. **5.**

2. **6.**

3. **7.**

4. **8.**

स्वस्थ कलीसिया की सुविधा

स्वस्थ कलीसिया की शिक्षण की चुनौतियों में से एक नये नियम में उपलब्ध सामग्री की विशाल मात्रा का आयोजन करना है। इस कारण से, बाईबल सामग्री के आयोजन के साथ–साथ कलीसिया के गठन में अगले चरण के मूल्यांकन के लिये इन सरल उपकरणों पर विचार करें।

प्रशिक्षक के लिये उपकरण

कलीसिया गठन के लिये हस्त–दर्शिका[22]

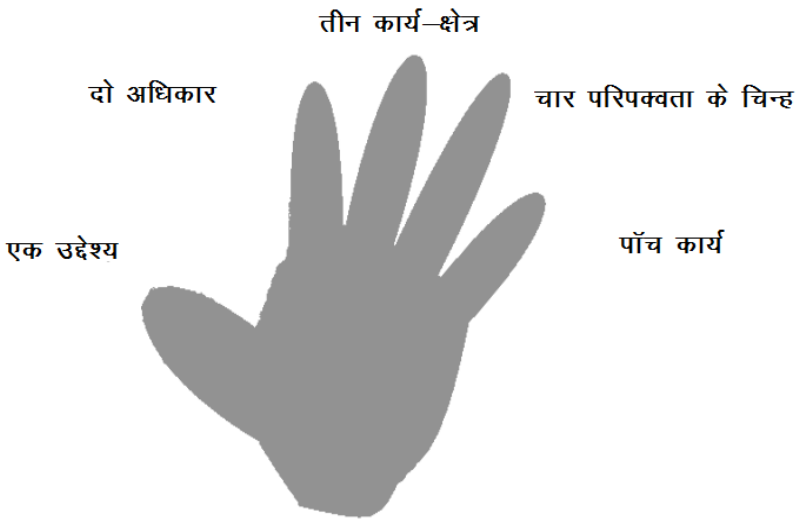

[22] सर्वप्रथम ''हस्त–दर्शिका'' का परामर्श सन् 2005 में डॉ डेविड गैरीसन के द्वारा कलीसिया स्थापन की शिक्षा के अन्तर्गत दिया गया था।

''हस्त–दर्शिका'' एक कलीसिया स्थापक को स्वस्थ कलीसिया के संबंध में बड़ी मात्रा में बाईबलीय निर्देश सूचीबद्ध करने के लिये एक आसान तरीका प्रदान करती है।

कलीसिया का **एक सिर और एक उद्देश्य** हैः

मसीह और उसकी महिमा

इफिसियों 1:22–23 कहता हैः

''और सब कुछ उसके पांवों तले कर दियाः और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।।''

मसीह कलीसिया का सिर है। और कोई नहीं। परमेश्वर ने केवल एक ही को नियुक्त किया है *''प्रधान रखवाला''* (1 पतरस 5:1–4)। मसीह की देह के अन्तर्गत कोई *''पदानुक्रम''* (hierarchy) अधिकारी नहीं है। ''आंख हाथ से नहीं कह सकती, कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं, और न सिर पांवों से कह सकता है, कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं'' (1 कुरिन्थियों 12:21)। बल्कि सब अंग देह की भलाई के लिये मिलकर काम करती है। हर विश्वासी देह का एक अंग है, और इसके सदस्यता में पारस्परिक जवाबदेही शामिल रहती है (1 कुरिन्थियों 12:27)। कलीसिया मसीह की परिपूर्णता है जो सहकारिता से इस जगत में उसकी सेवकाई को प्रगट करती है। अन्ततः हर सदस्य किसी भी कार्य या नीति के मामले से बढ़कर मसीह के प्रति जिम्मेदार है। जैसे कि पहले कहा जा चुका है कि कलीसिया का अस्तित्व केवल एक कारण से है। 1 कुरिन्थियों 10:13 कहता हैः

''सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महीमा के लिये करो।''

कलीसिया के लिये यह एक सरल निर्देश है। कलीसिया जिस किसी गतिविधियों में हिस्सा लेती है, उसे 1 कुरिन्थियों 10:13 की परीक्षा में सफल होना चाहिये। जो कुछ भी परमेश्वर की महिमा के लिये समर्पित नहीं है, वो स्वस्थ कलीसियाई गतिविधि के बाहर की बात होती है। यह सरल निर्देश का भार हर विश्वासी को दिया गया है। इस आज्ञा के प्रति पारस्परिक जवाबदेही हमारी कलीसियाओं के लिये डी.एन.ए होना चाहिये।

कलीसिया में दो अधिकारी होते हैंः

परमेश्वर का वचन और परमेश्वर की आत्मा

परमेश्वर का वचन – कलीसिया का मार्ग–दर्शन करने के लिये, परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अपनी योजना व निर्देश का लिखित आश्वासन दिया है। यह त्रुटिहीन है, और यह हर विश्वास की बातों व अभ्यासों की समझ के लिये पर्याप्त उपकरण है। पवित्रशास्त्र कलीसिया के संबंध में हर मामलों पर बातचीत करता है, और इसीलिये यह मसीह की देह की निर्णय लेनेवाली प्रक्रिया का केन्द्र होना चाहिये।

2 तीमुथियुस 3:16–17 कहता हैः

> '' हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।।''

परमेश्वर की आत्मा – परमेश्वर ने हर विश्वासी को सलाहकार के रुप में अपनी आत्मा दी है। आत्मा हमारे जीवन के बदले जाने के समय से ही हममें वास करता है और हमे सही विचार व कार्यों के लिये मार्गदर्शन करता है। जब हम पाप करते हैं, तो आत्मा निश्चय दिलाता है और परमेश्वर के सन्मुख पश्चाताप व पापों को स्वीकार कराता है। अवश्य ही उसकी आवाज को समझा जाना चाहिये, जैसे कि वह विश्वासियों को परमेश्वर की इच्छा के लिये अगुवाई करता है।

यूहन्ना 14:26 में यीशु ने अपने चेलों से प्रतिज्ञा की, ''परन्तु सहायक अर्थात् पवित्रा आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।''

परमेश्वर की आत्मा और परमेश्वर का वचन दोनों मिलकर कलीसिया की अगुवाई करता है। परमेश्वर का आत्मा वचन को निर्देश देने के औजार के रुप में उपयोग करता है, तो कभी–कभी विश्वासियों को फटकार लगाने के लिये। वचन आत्मा का औजार है –कलीसिया को धार करने और दिशा–निर्देश के लिये। ये दोनों मिलकर कलीसिया को वो सबकुछ प्रदान करता है जिससे कलीसिया परमेश्वर की इच्छा के आश्वासन में होकर आगे बढ़े।

आत्मा और वचन कभी भी परस्पर विरोधी नहीं होते हैं। वे रेल की पटरी की तरह सामानान्तर चलते हैं। वे कभी भी किसी भी भाग को काटते नहीं हैं। केवल वचन पर ही जोर देने से कलीसिया नीतिवाद (अधिकाधिक रुप से केवल वचन को श्रद्धा व मान देना) की ओर आगे बढ़ायेगा। ठीक वैसे ही, केवल आत्मा पर जोर देने का परिणाम भावनात्मवाद होगा।

किसी भी प्रकाशन या अनुवाद को इन दो अधिकारियों से परखा जाना चाहिये। जब कोई आत्मा से संदेश होने का दावा करता है, तो इसे वचन से परखा जाना चाहिये। जब एक वचन का अनुवाद किया जाता है तो विश्वासियों के मन में आत्मा इसकी सत्यता की पूष्टि करता है। इस प्रक्रिया से कलीसिया त्रुटियों से बच जाता है।

कलीसिया में **तीन कार्य–क्षेत्र** होते हैः

पासबान, डीकन और खजांची/कोषाध्यक्ष/भंडारी

पासबान – इस कार्य–क्षेत्र के लिये नये नियम के तीन शब्द उपयोग किये गये हैंः

1. पासबान/रखवाला – इफिसियों 4:11 – ''पोइमेनोस'' – मूल में रखवाला को पासबान अनुवाद किया गया है।
2. प्राचीन – तीतुस 1:6 – ''प्रेसबुटेरोस''
3. भंडारी – तीतुस 1:7 – ''एपिस्कोपोन'' – इसे पर्याय के रुप में बिशप अनुवाद किया गया है।

1 पतरस 5:1–2 एक ही कार्यालय को बताने के लिये इन तीनों शब्दों का उपयोग करता है। एक पासबान को रखवाला, प्राचीन, और भंडारी होना है।

''तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उन की नाईं प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं। कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; (भंडारी की तरह)। और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर।''

यहॉ पतरस कलीसिया को यह दावा करते हुए *''पदानुक्रम''* (hierarchy) अधिकारी प्रणाली से दूर रखता है, कि इस कार्य के लिये सभों के समान स्तर हैं। केवल एक प्रधान रखवाला है, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह (1 पतरस 5:4)।

जैसे कि नाम संकेत देता है, एक पासबान सामान्य रुप से वह होता है जो अपनी भेड़ों को चराता है। भेड़ों के लिये उनकी जिम्मेवारी सुरक्षा व पौष्टिकता की ओर अगुवाई के लिये होती है। हरेक भेड़ को चरवाहे की जरुरत होती है। अपनी नियुक्ति को आश्वस्त करने के संबंध में एक कलीसिया स्थापक का यही एक योग्य लक्ष्य होता है। कलीसिया स्थापक को यह ध्यान में रखना चाहिये कि पवित्रशास्त्र में कहीं भी पौलुस या उसके चर्च के किसी भी सदस्य को पासबान करके नहीं कहा गया है। नये नियम में एक कलीसिया स्थापक नें कभी भी इस काम को पूरा नहीं किया है। बल्कि, जैसे कि पौलुस तीतुस को निर्देश देता है, कलीसिया के अन्तर्गत इस कार्य की पहचान करना कलीसिया गठन का कुंजी था (तीतुस 1:5)।

भूमिका – हमें इफिसियों 4:11–12 में पासबान का कार्य दिया गया है।

और उस ने कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को

रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।

एक पासबान का काम क्या होता है?

अधिकांश लोग यह मानते हैं कि एक पासबान को अवश्य ही सेवा का काम करना चाहिये। इन वचनों को ध्यान से पढ़ने के बाद यह प्रगट होता है कि सेवा का कार्य हर विश्वासियों का है। एक पासबान सेवा के बजाय भरपूरी देनेवाला होता है। प्रायः

ऐसा कहा जाता है कि 80 प्रतिशत कार्य 20 लोगों के द्वारा किया जाता है। यदि यह चर्च के लिये सच्चाई है, तो दोष लगाने के लिये पासबान ही हैं। एक भरपूरी देनेवाला के रुप में, यह उसका कार्य है कि वह सरल उपकरण के द्वारा कलीसिया को एकजुट करे और जवाबदेही के साथ उच्च–स्तरीय सेवा करे।

योग्यता – पासबानों की योग्यताएं तीतुस 1 और 1 तीमुथियुस 3 में पाया जाता है। इन सूची को पढ़ने के लिये समय निकालें। हर योग्यता को वर्गीकृत करने के लिये निम्नलिखित तालिका का उपयोग करें।

स्व–अनुसंधान बाईबल अध्ययन

निम्नलिखित वचनों को पढ़ें और हर वर्ग के लिये एक–एक योग्यता नियुक्त करें। नीचे उनकी सूची बनायें।

1 तीमुथियुस 3:1–7

स्वभाव	वरदान / कला	शिक्षा

इन सूचियों को सावधानीपूर्वक पढ़ने से इस भूमिका के लिये आवश्यक योग्यता के रुप में ईश्वरीय चरित्र का पता चलता है। बाईबल की कितनी भी शिक्षा या वरदान चरित्र का स्थान नहीं ले सकता है।

इसका अर्थ है कि जिस मनुष्य पर परमेश्वर अपना चरित्र को प्रगट करता है, वो कितना भी सरल क्यों न हो; वह सेवकाई के योग्य ठहरता है।

डीकन – यह कलीसिया का दूसरा कार्य–क्षेत्र है।

भूमिका – प्रेरितों के काम 6:3 प्रथम डीकनों की भूमिका प्रदान करता है।

''इसलिये हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरूषों को जो पवित्रा आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।''

एक डीकन सामान्य रुप से कलीसिया का एक सेवक होता है। मंडली की किसी भी जरुरत को पूरा करना डीकन के कार्य के व्योरे के अन्तर्गत आता है। इससे कलीसिया के सदस्यगण वचन की सेवकाई में आगे बढ़ने के योग्य बन जाते हैं।

योग्यता – 1 तीमुथियुस अध्याय 3 में डीकन की योग्यता को पा सकते हैं। चिन्हित की जानेवाली सूची ठीक वैसी ही है, जैसे कि पासबान की सूची। एक बार फिर यह चरित्र ही होता है, जो किसी व्यक्ति को सेवकाई के लिये योग्य या अयोग्य ठहराता है।

भण्डारी/कोषाध्यक्ष – भण्डारी के कार्य–क्षेत्र का उपयोग हमारे प्रभु की अगुवाई के बाद आता है, क्योंकि वह अपने शिष्यों के साथ यात्रा करता था। यीशु पर कई बातों के लिये आरोप लगाया गया था। उस पर एक पियक्कड़ होने, पापियों के साथ उठने–बैठने, सब्त का उल्लंघन करने, दूष्टात्मा से ग्रस्त होने, और यहॉ तक कि निंदा करने का आरोप था। तौभी यीशु पर रुपया–पैसा का गलत इस्तेमाल का आरोप कभी नहीं लगा था। इसका क्या कारण था? उसका एक भंडारी था![23]

चूंकि पौलुस ने भंडारियों के बारे में कलीसियाओं को नहीं लिखा, तौभी उसने एक अकाल के कारण चंदा इकट्ठा किया था (देखें 2 कुरिन्थियों 8:19–21)।[24] एक भंडारी के कार्य में लगना, सेवकाई में कलीसियाई स्वामित्व और सामूहिक निर्णय लेने के काम को बढ़ावा देता है। विश्वासियों से उम्मीद की जाती है कि कलीसिया के अगुवों को वित्तीय नीति स्थापित करने के लिये उत्तरदायी होना चाहिये।

कोषाध्यक्ष चर्च को आरोप से सुरक्षा प्रदान करता है। कोषाध्यक्ष को सभी लेन–देन में पारदर्शी होना चाहिये। गवाह या बहीखाता पद्धति के माध्यम से लेखा–जोखा रखना एक स्पष्ट उदाहरण है, और ऐसा निश्चय ही कलीसियाओं में होना चाहिये।

चूंकि कोई विशिष्ट सूची नहीं पेश की गयी है, इसलिये कोई भी डीकन या पासबान के जैसा योग्यता ग्रहण कर सकता है।

कलीसिया में **परिपक्वता के चार चिन्ह** पाये जाते हैं:

स्व–संचालन, स्व–सहायता,

स्व–पुनरुत्पादन, और स्व–सुधार

मिशिओलॉजी का अध्ययन करने वाले लोगों के लिये, इन तीनों को जल्दी ही ''नेवियस सिद्धांत'' के सरल अनुकूलन के रुप में पहचाना जायेगा।[25] बाद में चर्च के लिये पेश की जाने वाली चौथी ''स्व'' चर्चों को अपने स्वयं के सांस्कृतिक लेंस के माध्यम से धार्मिक मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता है। यहॉ हमने स्व–धार्मिक ज्ञान हासिल करने की जगह स्व–सुधार को रखा है। इस शब्दावली में बदलाव का कारण पवित्रशास्त्र से अपनी स्वयं की संस्कृति को छानने या सुधारने पर प्रकाश डालता है। विश्वास के समुदाय को धार्मिक पहल फिर से अविष्कार करने के लिये नहीं कहा गया है। बल्कि पौलुस के उदाहरणों का पालन करने को कहा गया है कि उन्हें ''सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खंडन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं'' (2 कुरिन्थियों 10:5)। यह नये नियम में देखा जा सकता है क्योंकि यूनानी पृष्टभूमि के धार्मिक विश्वासियों ने यहूदी परंपराओं व रीतियों के आसपास के मुद्दों का सामना किये। प्रेरितों के काम अध्याय 15 इस मुद्दे की चरमोत्कर्श में पवित्र आत्मा में एक अंतर्निहित विश्वास का पता चलता है, ताकि प्रत्येक नये लोगों को बाइबल पर आधारित शुद्धता और उनकी संस्कृति के मोचन में मार्गदर्शन दिया जा सके।

---

[23] बैपटिष्ट ने ऐतिहासिक रुप से दो कार्य–क्षेत्रों का प्रस्ताव रखा है। इस अभिव्यक्ति को कोषाध्यक्ष से इनकार नहीं किया गया है, बल्कि पासबान, प्राचीन, और भण्डारी की भूमिका में विभाजन के विरुद्ध सुरक्षा के रुप में प्रेरित किया गया था। इस प्रकार का विभाजन ने बार–बार चर्च के भीतर अंततः पदानुक्रम के लिये द्वार खोला है। ऐसा सुझाव दिया जाता है कि इस तरह के भेद से सावधानीपूर्वक बचा जाना चाहिये।

[24] पौलुस की सेवकाई को समारोह की विशिष्ट गुंजाइश के बाहर ''एक खास कार्य'' के रुप में तर्क दिया जा सकता है। हालांकि, इसके लिये मूलभूत आदेश देने के लिये आज्ञाकारिता के भीतर जवाबदेही का एक उदाहरण निर्धारित किया जाता है।

[25] नेवियस जॉन ने अपनी क्लासिक पुस्तक में तीसरा 'स्व' स्वाधीन मिशन के लिये लिखा था। *Planting and Development of Missionary Churches*. The Presbyterian and Reformed Publishing Company, New Jersey, 1958.

स्व–संचालित

स्व–संचालित का मतलब हम सरल भाव से यह समझते हैं कि एक परिपक्व कलीसिया में खुद के लिये निर्णय लेने की क्षमता पाई जाती है। ऐसा करने का मतलब कलीसिया के लिये दी गयी दो अधिकारी का उचित अभ्यास है। जरुरी है कि ऐसी कलीसिया परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की आत्मा के निर्देशन को समझने के योग्य होते हैं।

स्व–अनुसंधान अध्ययन – स्व–संचालित

पढ़ें प्रेरितों के काम 6:1–7 और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें

प्रथम डीकनों का चुनाव किसने किया था?

उत्तर – वहॉ इकट्ठा हुए ''सभी शिष्यगण'', और उन्हें प्रथम डीकनों को चुनने का निर्देश दिया। जब निर्णय लिया गया, तो कोई तर्क–वितर्क नहीं था। बल्कि बारहों ने हाथ रखकर और पहचान कर डीकनों को चुनां

कैसे बारहों ने जान लिया था कि विश्वासी लोग सही व्यक्तियों का चुनाव करेंगे?

उन बारहों ने मार्ग–निर्देशन का भार पवित्र आत्मा पर छोड़ दिया था! अब कलीसिया सताव के कारण बिखरने वाली थी। क्या अब भी कलीसिया को उन बारहों के निर्देशन पर निर्भर रहना था? यदि ऐसा होता तो कलीसिया का पतन हो जाता। इसलिये उन्होंने अपने याजकपद का अभ्यास करने के द्वारा परमेश्वर की आवाज को सुना और सीखा।[26]

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

''विश्वासियों का याजकपद''। जब कलीसियाओं का निर्णय उन्हीं के लिये लिया जाता है, तो वे उनके जन्मसिद्ध अधिकार से लुट जाते हैं। लहु के द्वारा शुद्ध किये जाने और पवित्र आत्मा का निवास के द्वारा परमेश्वर तक पहूँच ही उद्धार के सिद्धांत की कुंजी है। उद्धार के सिद्धांत को याजकपद के लागू किये जाने के बिना प्रचार करना एक अधूरा सुसमाचार है। हर विश्वासी सिंहासन तक पहुँच सकते हैं (इब्रानियों 4:16)। हर विश्वासी परमेश्वर का मार्ग–निर्देशन पा सकते हैं (इब्रानियों 4:16)। यह सच है कि परमेश्वर की आवाज को सुनना और समझना एक सीखी हुई अनुशासन है। यहॉ हमारे कहने का मुख्य बात यह है कि कलीसिया स्थापक के लिये जरुरी है कि वह निर्णय लेने की प्रक्रिया के स्वामित्व के द्वारा इस पाठ को सीखने की अनुमति दें।[27]

स्व–सहायता

कलीसिया को अपने कार्य में स्वामित्व होना चाहिये। स्व–सहायता का तात्पर्य है कि जो सेवकाई व प्रचार सेवा कलीसिया करती है, उसकी जरुरत को अपने श्रोतों व संसाधनों से पूरा करे।

---

[26] मंडली से संबंधित इस प्रकार के नियम के लिये चार अन्य नये नियम के विवरणों के विवरण के लिये देखें: McRay, John. Paul: His Teaching and Practice. Baker Academic, Grand Rapids. 2003. p. 383-386. (इसमें मत्तियाह की नियुक्ति, 2 कुरिन्थियों 8:18–19, प्रेरितों के काम 14:23 और तीतुस 1:5 में नियुक्ति के लिये युनानी शब्द ''चेइरोटोनेओ'' और ''काटेसेसेस'' उपयोग किया गया है। मैक रे ने मूल अर्थ – ''सभा में वोट देने के उद्देश्य से किसी के द्वारा हाथ उठाने'' का प्रदर्शन किया था)।

[27] स्वतंत्र, असफल भी, निर्णय लेना परमेश्वर के अनुग्रह के ज्ञान में बढ़ने की स्वतंत्रता है। इस स्वतंत्रता के विषय में मजबूत तर्क के लिये चार्ल्स ब्रॉक के लेख देखें: Brock, C. 1981. Indigenous Church Planting.Broadman Press, Nashville Tenn.

स्व–अनुसंधान अध्ययन – स्व–सहायता

दान देने के बिषय में खोज करने के लिये निम्नलिखित पदों को पढ़ें।

प्रेरितों के काम 2:44–45; 4:34–36; 11:29; 2कुरिन्थियों 9:10–15 फिलिप्पियों 4:14–19 1थिस्सलुनीकियों 2:8–9; कुछ और?

प्रेरितों के काम 11 और 2 कुरिन्थियों 9 में कलीसियाओं के चंदा देने के बारे में लिखा गया है। आधुनिक परम्परा के विपरीत, ये बेटी कलीसियाएं हैं जो यरुशलेम में अपनी ''माता कलीसिया'' को चंदा देती है। इससे भी बढ़कर, थिस्सलुनीकियों और अन्य कलीसियाओं को उदारण देते हुए कहता है, कि वास्तव में वे अपनी स्वतंत्रता के प्रति एक आदर्श थे (1 थिस्सलुनीकियों 2:6–10; 5:12–14)।

यह क्यों महत्वपूर्ण है? – इसके कई कारण हैं।

जब कोई व्यक्ति अपनी सेवकाई के स्वामित्व को मानता है तो एक आंतरिक प्रेरणा होती है। जैसे सदस्यों के द्वारा दान का दिया जाना सेवकाई में ईंधन भरना होता है, जिसके परिणाम में आनन्द अनिवार्य होता है। इससे दान देने का माहौल तैयार होता है, जिससे कलीसिया की गतिविधियां बढ़ जाती है।[28]

यह मुद्दा चर्च के बाहर के लोगों के द्वारा भी स्वीकारा जाता है। जैसे कि जो लोग सुसमाचार के द्वारा बदल जाते हैं, वे प्रेम के साथ दूसरों तक पहूँचने लगते हैं। उनके पड़ोसियों की ईर्ष्या और आरोपों का स्थान आभार व खुलापन ले लेता है, जो बदलाव के श्रोत के कारण होता है।

तीसरा कारण सरल गणित है। बाहरी धन कभी भी राष्ट्र को नहीं बदलेगा। जब तक कि कलीसिया अनुशासित रुप से देने का अभ्यास न करे, तब तक दूसरों पर निर्भरता सुसमाचार के फैलाव को सीमित रखेगी।

स्व–उत्पादन

स्वस्थ कलीसिया बढ़ती जायेगी। परिपक्वता का मतलब कलीसिया अपने क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार करने के लिये जिम्मेवारी वहन करेगी। कलीसिया स्थापक के लिये, इसका अर्थ हरेक विश्वासी को महान आदेश स्वीकार करना है। पौलुस ने जिन कलीसियाओं को भी लिखा, उनकी ऐसी स्वामित्व के लिये सराहना भी की।

1 थिस्सलुनीकियों 1:7–8 *''यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने। क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।''*

यहॉ यह स्मरण रखना जरुरी है कि पौलुस ने यहॉ कम से कम तीन सप्ताह बिताते हुए इस कलीसिया की स्थापना की थी (प्रेरितों के काम 17:2)।

अरखिप्पुस के घर कलीसिया के नाम वह लिखता है, *''कि तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में मसीह के लिये प्रभावशाली हो''* (फिलेमोन 1:6)।

यहॉ पौलुस कहता है कि यदि कोई अपने विश्वास की गवाही दूसरों को नहीं बताते हैं, तो उसके मसीही चाल में परमेश्वर के प्रयोजन/प्रबंध की समझ की कमी पाई जाती है।

[28] 2 कुरिन्थियों 9:6–15

यह क्यों जरुरी है? – एक सेना को युद्ध के लिये गठन किया जाता है। कटनी के लिये अंदरुनी लोगों को एकजुट करना ही बढ़ोतरी का एकमात्र उपाय है। जैसे कि नये विश्वासी खेतों का स्वामित्व लेते हैं, तो विश्वासियों की पीढ़ी से कलीसिया भर जायेगी।

स्व–सुधार

हमने ''ईश्वरीय ज्ञान से भरना'' में सुधार करते हुए इसकी जगह ''चौथा स्व'' रख कर सरल बनाने का प्रयत्न किया है। हम नये विश्वासियों को पुणः ईश्वरीय ज्ञान से भरकर चक्र का निर्माण करने को नहीं कहते। विश्वव्यापी कलीसिया के ईश्वरीय ज्ञान के खुलासे से लाभ प्राप्त करने के लिये बहुत कुछ है। बल्कि हम उन नये विश्वासियों से उम्मीद करते हैं जो पहले ना–पहूंचे थे; अपने खुद के विश्वास और रीति रीवाजों को इस उद्देश्य से परखे कि हर बातें मसीह के लिये कैद करती थी। ऐसा करने का मतलब उन्होंने अपने मार्ग–दर्शन के लिये पवित्रशास्त्र में एक दृढ़ पकड़ बना लिया है।

2 तीमुथियुस 3:16–17 कहता है: *''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।।''*

पवित्रशास्त्र का सही उपयोग ही परिपक्वता की पहचान है। अवश्य ही यह शिक्षा देने और सीखाने का श्रोत होना चाहिये; और इसके साथ–साथ फटकारने और सुधारने के लिये भरोसा किया जा सकता है।

क्यों यह महत्वपूर्ण है? जो मेजबानी करते हैं उन्हें अपनी खुद की संस्कृति को शुद्ध करने की जरुरत है। इस उदाहरण पर ध्यान करें:

भारत के हिंदुओं में मूर्तिपूजा फैली हुई है। इस संदर्भ में कलीसिया स्थापकों को संस्कृति के मोचन (छुटकारे) के माध्यम से नये विश्वासियों को मार्गदर्शन करने के कठिन कार्य का सामना करना पड़ता है। बाहरी लोगों को, संस्कृति के कुछ पहलुओं को स्पष्ट रुप से मसीह के साथ उनके रिश्ते के लिये हानिकारक हैं। सतह के नीचे, हालांकि संस्कृति के अनगिनत अन्य परत हैं, जो कलीसिया स्थापक अनुभव नहीं करता है। यह इन कुछ सतहों को कलीसिया स्थापन के लिये कुंजी मुद्दा बना देता है। वे पवित्रशास्त्र के माध्यम से संस्कृति को छानने की प्रक्रिया में संभावित शिक्षण बिंदुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

कलीसिया स्थापक के पास दो विकल्प होते हैं:

1. **मेजबानी संस्कृति के स्पष्ट पापी पहलुओं के अभ्यास को रोकें।**

   मेजबान संस्कृति से संबंधित त्वरित निर्देश देते हुए कई तत्काल अड़चनों को हल कर सकते हैं। लेकिन इसमें भी एक और अधिक अदृश्य प्रभाव होता है।

   सर्वप्रथम्, हिंदू धर्म अन्य सीाी झूठे धर्मों की तरह कर्म पर आधारित है। हिन्दु पृष्टभूमि के विश्वासी में जन्म से ही यह सोच होता है कि उन्हें मोक्ष प्राप्ति करना है। इस बात को शीघ्र जोड़ते हुए कि ''करो'' और ''न करो'' से उनकी निर्भरता परमेश्वर से हटकर खुद पर आ टिकती है। आत्मा, जो उनके जीवन से बात करना चाहती है,; वो ऐसी सूची के द्वारा तकलीफ!/दुविधा में पड़ जाते हैं।

   द्वितीय, कलीसिया स्थापक को, जो इन मुद्दों को नये विश्वासियों के लिये हल करता है, वे उन संस्कृति के पहलुओं को समाप्त करता जाता है जिसके लिये वे खुले होते हैं। अब परिशुद्ध होने की प्रक्रिया के कारण, वे उनके साथ चलने के अवसर को खो चुके होते हैं। अब प्रवेश के लिये कोई बिंदु बाकी नहीं रह जाता है, जिससे वे उन्हें परमेश्वर की आवाज सुनने के लिये मार्गदर्शन कर सके। उनकी जटिलता, उनकी संस्कृति की छिपी बिन्दुएं, और छिपे हुए दिल के मुद्दों का विश्लेषण ही संभावित परिणाम है। [29]

[29] इस बिषय पर और अधिक तर्क के लिये देखें : Roland Allen. *Spontaneous Expansion of the Church* , Eadmans. 1949. Chapter 4-6.

2. **आत्म–सुधार की खोज और कार्यान्वयन के लिये नये विश्वासी को याजकपद पर विश्वास के साथ पवित्रशास्त्र में सावधानीपूर्वक खोज करना चाहिये।**[30]

इस विकल्प का उपयोग करने से आत्मा और पवित्रशास्त्र को शुरु से ही बदलने के प्रतिनिधि के रुप में देखा जाता है। कभी भी निर्भरता और जीवन भर के लिये सुक्ष्म बातों को छानने की प्रक्रिया कलीसिया स्थापक के निर्देश पर अस्तित्व में नहीं आता है, और संस्कृति की छुपी बिन्दुएं गति में आ जाती हैं।

चौथा स्वः

एक शिशु पर ध्यान करें। हम में से हरेक ने इसी तरह से अपना जीवन आरम्भ किया है हमलोग पूर्ण रुपेण अपने माता–पिता पर भोजन, दिशा–निर्देशन, प्रेम, और प्रतिदिन की देखभाल के लिये आश्रित थें। ये बातें स्वाभाविक हैं। परमेश्वर ने इसी रीति से हमारे जीवन को क्रम में ढाला है।

जैसे कि बालक बढ़ता है, हालांकि, उसे इन हर क्षेत्रों में स्वामित्व लेना चाहिये। वह खुद अपना भोजन खाता, अपने कपड़े पसंद करता और खरीदता, अपने मित्रों का चुनाव करता, और आप ही अपने स्कूल के कार्यों को करता है। घटनाक्रमानुसार, वह अपना जीवन जीता, स्वयं अपनी जरुरतों को पूरा करता, और फिर पुनरुत्पादन करता है।

कल्पना करें कि एक वयस्क व्यक्ति, जो अभी भी अपनी माता पर खिलाने के लिये निर्भर रहता है। ऐसा सोच हॅसने के जैसा है। हम एक व्यक्ति को बढ़ने के लिये निर्देश देंगे। परिपक्वता एक निश्चित स्तर की स्वायत्त शासन की मांग करती है। तौभी मैं आपको सलाह देता हूँ कि माता पर भी पुत्र के जैसा ही दोषी ठहराया जायेगा। परिपक्वता संबंधी जिम्मेदारी सौंपने की चाहत न होना ही अगले वंश की बढ़ोतरी को ठप कर दिया है।

प्रायः ऐसी ही बात कलीसिया के लिये भी सही है। एक कलीसिया जो बाहरी लोगों पर निर्णय लेने, सहायता करने, और अपनी भुल को सुधारने के लिये आश्रित रहती है, वह परिपक्व नहीं है।

कलीसिया के **पॉच कार्य** हैंः

आराधना, संगति, सेवकाई
मिशन और शिष्यपन [31]

मत्ती 22:37–39 में, यीशु ने हमें सबसे बड़ी आज्ञा दिया हैः

''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।''

इस आज्ञा के पालन से कलीसिया की प्रथम तीन कार्य बाहर आती है।

आराधना – परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम का प्रगटीकरण

कलीसिया जो कुछ भी करता है, वह परमेश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति के रुप में उसकी आराधना है। इसमें भजन करना, दान देना, प्रार्थना करना और उसके वचन की आज्ञारिता के अनुसार कार्य करना होता है।

---

[30] संकीर्णता एक खतरा नहीं है, यह वास्तविकता है। हर नये विश्वासियों ने अनुग्रह से मसीह को समझ लिया और स्वीकार किया है, और मसीह को उनके बिना जांच–पड़ताल वाले विश्व–परिदृश्य के बीच से देखता है। यह शिष्यपन का काम है कि वह एक ऐसा स्थान बनाये जहॉ विश्व–परिदृश्य के मुद्दे को जांचा–परखा जा सके। इस अर्थ में सभी शिष्यगण इस संकीर्णता से दूर जा रहे हैं। संकीर्णता से डरने के बजाय, कलीसिया स्थापक की सेवा स्वीकारने और उम्मीद करने की है ताकि इससे सीधे तौर पर निपटा जा सके।

[31] यहॉ सूची में दी गयी पांच कार्य रिक वैरन की पुस्तक की शिक्षा ''महान आदेश और महान आज्ञा'' से ली गयी है। The Purpose Driven Church. Zondervan, Grand Rapids, 1995. p. 103-109.

संगति – मसीह की देह से प्रेम करना।

हर विश्वासी के दो प्रकार के पड़ोसी होते हैं, खोये हुए विश्वासी और उद्धार पाये हुए विश्वासी। मसीह में अपने भाईयों और बहनों से प्रेम रखना संगति है। अपने आत्मिक परिवार के प्रति किसी भी प्रकार के प्रेम से संगति निर्धारण होता है। दूसरों के लिये प्रार्थना करना, दान देना, और दूसरों के बोझ उठाना, ये सभी कार्य संगति होते हैं।

सेवा – खोये हुओं से प्रेम करना

दूसरे प्रकार के पड़ोसी खोये हुए लोग हैं। हमारे आचरण और कार्यों के द्वारा मसीह के प्रेम का बीज बोना सेवा है। कलीसिया को अपनी गतिविधियों में प्रेम को एक रणनीतिक बात समझना चाहिये। कलीसिया की कोई भी जिसमें ऐसे प्रेम की अभिव्यक्ति होती है, सेवकाई है।

महान आज्ञा कलीसिया की गतिविधियों का बाकी आदेश देता है। यीशु ने कहा, ''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो'' (मत्ती 28:19)।

मिशन – जाओ!

मिशन का तात्पर्य मसीह के उद्धार का संदेश उन लोगों तक लेकर जाना है, जो खोये हुए हैं। प्रेरितों के काम 1:8 के अनुसार, यह स्थानीय और दूर इलाकों तक पूरा किया जा सकता है। कलीसिया के लिये मिशन में भागीदारी दैनिक जीवन का हिस्सा होना चाहिये।

शिष्यपन – दूसरों को वो बातें पालन करने सीखाना, जो मसीह ने आज्ञा दी है। हमारी शिष्यता का ध्यान इस बात पर होना चाहिये कि विश्वासीगण मसीह के साथ अपने संबंध में आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें उपकरण व जवाबदेही देने की योजना बनायें।

ये बातें क्यों महत्वपूर्ण हैं? – किसी भी चर्च के स्वस्थ की पहचान उसके गतिविधि से किया जाता है। उसके आकार या स्थान को अन्देखा करते हुए, उसकी गतिविधियां ही सफल होती हैं।

स्व–अनुसंधान अध्ययन – कलीसियाई गतिविधियां

प्रेरितों के काम 2:41–47 में प्रथम कलीसिया की जॉच करें। इस कलीसिया के कार्य में कौन सी पॉच गतिविधियां दिखाई देती है?

1). 4).

2). 4).

3). कोई अन्य?

प्रशिक्षक के लिये उपकरण

इन गतिविधियों को लागू करने संबंधी आश्वस्त होने के लिये इन्हें अभ्यास करने के लिये समय लें। 6–10 के छोटे समूह में, हर गतिविधि को दूसरे समूह के सदस्यों सुविधा प्रदान करें। इसकी अगुवाई के लिये किसी को नियुक्त करें।

आराधना – परमेश्वर से प्रेम करना

संगति – विश्वासियों से प्रेम करना

सेवकाई – खोये हुओं से प्रेम करना

मिशन – जाओ!

शिष्यपन – दूसरों को आज्ञा पालन करना सीखायें।

इन्हें समझने के लिये प्रत्युत्तर के अवसरों के साथ कई एक घंटे की अभ्यास सत्र की अनुमति दें, ताकि हर एक गतिविधियों के प्रति समझ तेज हा जाये। हर गतिविधि को छोटे समूह के समुच्य में पूरा होने के लिये अलग–अलग तरीके से समझायें।

पौलुस ने उन कलीसियाओं को अनेक पत्र लिखा जिन्हें शुरु करने में वह भागीदार था। यह रुचिकर बात है कि पौलुस नें कभी भी एक भी पत्र किसी संगति, प्रचार के बिन्दु, या किसी प्रार्थना समूह को नहीं लिखा। पौलुस ने सर्वसम्मति से कलीसियाओं को लिखा था।

पौलुस ने उनसे जो उम्मीद की वही उनसे कहा, और यही हमारी सलाह है।

जब हम इन कलीसियाओं को परखते है।, तो हम कई बार उनमें दिखाई देनेवाली परिपक्वता या नैतिकता की कमी से अचम्भित होते हैं। पौलुस की पत्रियों में पदाक्रम में संघर्ष, झुठी शिक्षा, नेतृत्व की कमी, और अध्यादेश का गलत उपयोग सामान्य बिषय हुआ करते थे। पौलुस के अनुसार, तौभी, ये संघर्ष उसे स्वतंत्र कलीसिया के रुप में सम्मान देने से रोक नहीं सकी।

इस बिंदु तक कलीसिया गठन को पेश करने में हमने आदर्श सुझाव दिया है। हमें विश्वास है कि ''आसान मार्गदर्शक'' कलीसिया के स्वास्थ को बढ़ावा देने और बनाये रखने के लिये आवश्यक सभी तत्वों को दर्शाता है।

एक जॉच करने की सूची से कलीसिया के स्वास्थ्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। यह एक प्रक्रिया है जिसे साथ–साथ बनाये रखा जाना चाहिये। इस कारण से स्वास्थ्य के तत्वों का मूल्यांकन एक उपयोगी व्यायाम है। अकसर ऐसे मूल्यांकन निर्भरता या नियंत्रण के तत्वों को उजागर कर सकते हैं, जो कलीसिया की शुरुआत को रोकते हैं।

कलीसिया के स्वास्थ्य के तत्वों के मूल्यांकन और कार्यान्वयन के लिये नीचे दो उपकरण हैं। दोनों उपकरण प्रेरितों के काम अध्याय 2 में पहली कलीसियाई गतिविधियों और प्राथमिकताओं पर आधारित हैं। अपनी कलीसिया के साथ इस कलीसिया की जांच करने के लिये समय लें। ये उपकरण नई चर्च की शुरुआत् में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निदान करने में मदद करते हैं, और जो कुछ कमी है उसके आधार पर स्पष्ट होने वाले विशिष्ट अगले चरण प्रगट करते हैं।

स्वस्थ्य कलीसिया को स्वतंत्र करने के लिये मील का पत्थर

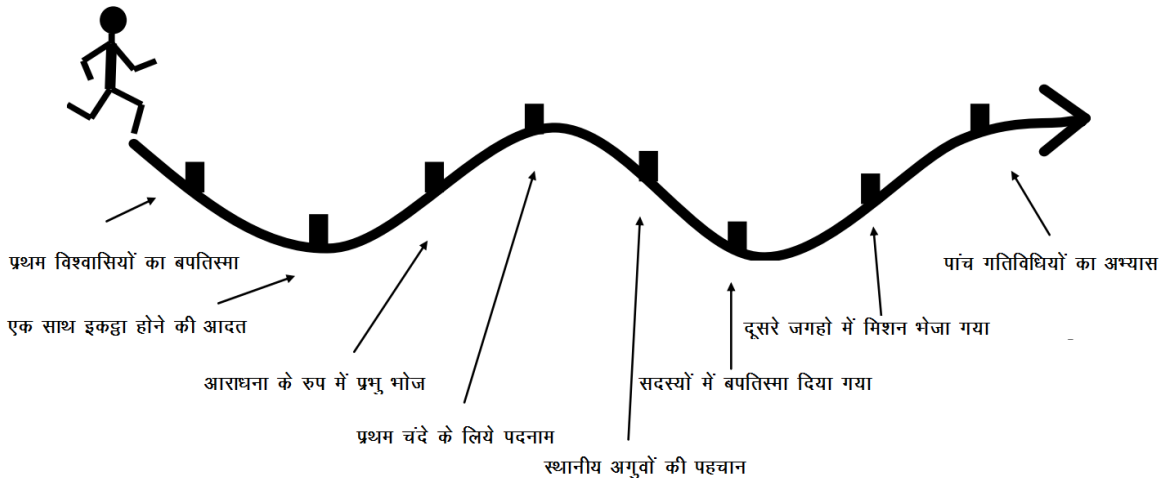

कलीसिया को स्वतंत्र करना उन्हें शुरु करने के जैसा ही महत्वपूर्ण है!

जब एक किसी मैराथन में दौड़ता है, तो वह मार्ग को चिन्हित करने वाले लोगों के द्वारा उत्साहित किया जाता है। ये मार्ग–चिन्हित करनेवाले लोग एक नियमित अंतराल में पाये जाते हैं, जो उनके आखिरी रेखा को की ओर प्रगति को प्रगट करते हैं। इसी तरह, कलीसिया स्थापक जिसके मन में स्वायत्त स्थानीय कलीसिया को स्वस्थ कार्य करने में सक्षम मानते हैं, वे उम्मीद कर सकते है, कि मार्ग को चिन्हित करने वाले लोगों की श्रृंखला पायी जाये, जैसे कि वह कलीसिया को स्वतंत्र करता है। मार्ग–चिन्हित करनेवाले लोग भी आखिरी रेखा की प्रगति को प्रगट करते हैं। हर एक परमेश्वर की योजना के तहत् याजकपद और कलीसिया के अदर दैहिक जीवन के अभ्यास के लिये एक विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करते हैं। ऐसे मार्ग–चिन्हित करनेवाले लोगों की कमी देह के अन्तर्गत परिपक्वता और निर्भरता की कमी को प्रगट करते हैं।

प्रशिक्षक के लिये उपकरण

आप जिस कलीसिया में शामिल हैं, उस पर ध्यान करने के लिये समय लें। नीचे दिये गये प्रश्न पुछें।

1. क्या आपकी कलीसिया के कोई ऐसे क्षेत्र हैं, जो शुरु होने के बाद अटक गयी है?
2. स्थानीय रीति–रिवाजों में क्या बाधाएं वर्तमान हैं, जो उन्हें आगे बढ़ने से रोकती है?
3. इनकी जड़ों को उखाड़ फेंकने के लिये किन बातों की जरुरत होगी?
4. आप मौजूदा नेटवर्कों को पिछली संकटदायी परम्पराओं से कैसे स्थानांतरित कर सकते हैं?
5. क्या इन अगुवों को आगे बढ़ने के लिये कथित अधिकार के साथ प्रमुख अगुवे रहे हैं?
6. क्या आवश्यक अधिकारियों ने चर्च में अपना समय दिया है, जिससे कि स्वस्थ समारोह संभव हो सके?

पीढ़ीगत मानचित्र – मकसद सहित कलीसिया संरचना

पीढ़ी 1 – जो कलीसिया नेटवर्क के प्रधान के द्वारा स्थापित की गयी, या फिर प्रशिक्षण में शामिल की गयी थी

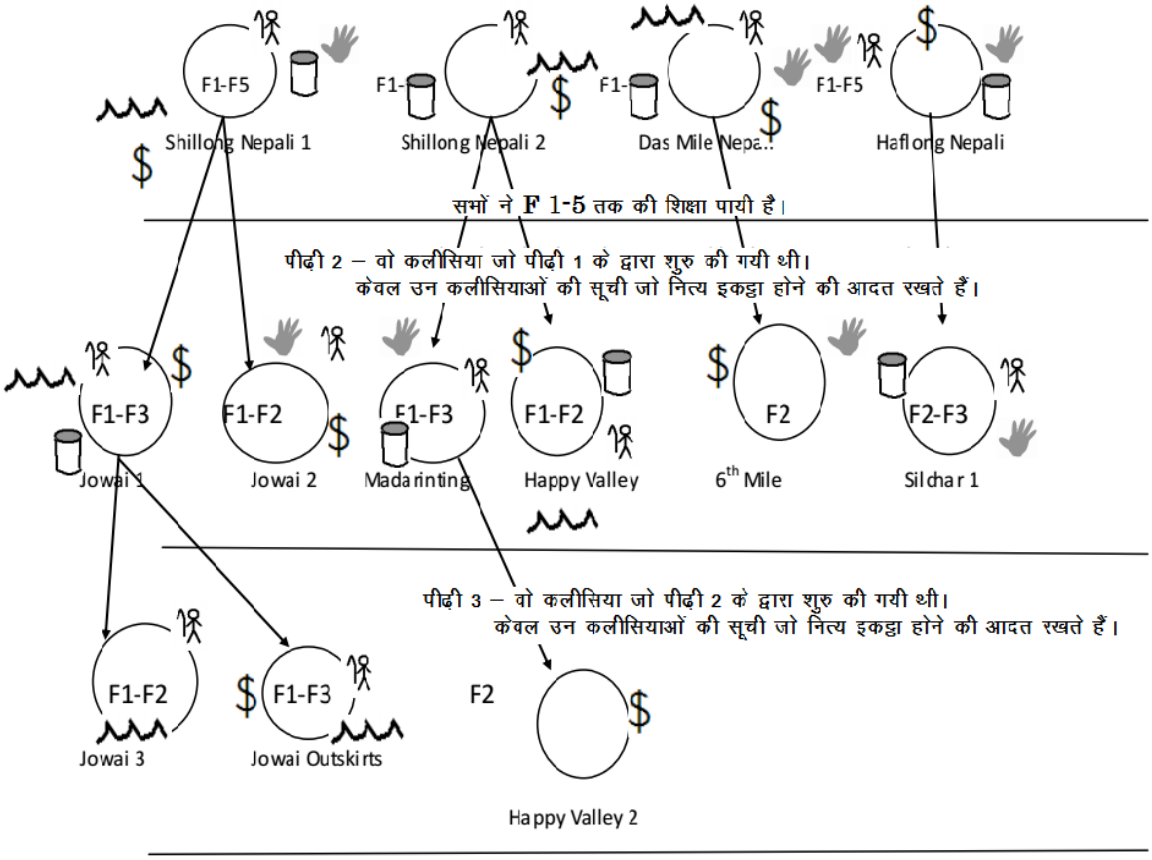

हर पासबानों के नाम शामिल करें, सभा–स्थल और स्थापना की तारीख भी अंकित करें।
यदि जरुरत पड़े, तो बढ़ती धाराओं को उनके मानचित्र में स्थानांतरित करें।

निर्देशिका मानचित्र

चरवाहा/प्राचीन/पासबान –
1 तीमुथियुस 3:1–7; 1 पतरस 5:1–2

पाँच गतिविधियाँ –
प्रेरितों के काम 2:38–47; मत्ती 22:36–40

कलीसिया में प्रभु भोज का अधिकार –
1 कुरिन्थियों 11

कलीसिया में बपतिस्मा का अधिकार –
मत्ती 28

चंदे का नियमित संग्रह/नियुक्त कोषाध्यक्ष – 1 कुरिन्थियों 9

लक्ष्यानुसार प्रशिक्षण

F1 – खेत 1 – दो–दो करके – लुका 10/ओइकोस

F2 – खेत 2 – व्यक्तिगत गवाही और सुसमाचार प्रस्तुति
गैर–विश्वासियों की सूची

F3 – खेत 3 – सात आज्ञाएं/तलवार

F4 – पाँच गतिविधियों की प्रस्तुति – बाइबलीय अगुवे

F5 – अगली पीढ़ी की सूची अनेक "तीमुथियुस"

अन्त–दर्शन – शिष्यपन

इससे क्या होने जा रहा है?

एक बार फिर मान लें कि ''X'' जन समूदाय हैं जिनकी आबादी 10 लाख हैं। मन में परमेश्वर के बताये गये इच्छा (2 पतरस 3:9), कि कोई भी नाश न हो, को याद रखते हुए अवश्य ही यह प्रश्न पुछें:

कितनी चर्च की जरुरत पड़ेगी?

जैसे कि हम ''X'' के बीच में बढ़ती फसल को इकट्ठा करते हैं, तो हम अनेक चर्चों की शुरुआत करने की चुनौतियों का सामना करते हैं। कार्य के आकार का निर्धारण करने से, एक कलीसिया स्थापक को परमेश्वर के आकार का लक्ष्य तय करने में सहायता मिलता है, जिससे वह उसकी इच्छा पूरी करने के योग्य ठहरता है।

विश्व–स्तर पर औसतन कलीसिया का आकार 50 लोगों का होता है। हमारे संदर्भ में, हम इस औसत को आवश्यक कलीसियाओं की संख्या के अनुमान के लिये उपयोग कर सकते है।

यदि एक कलीसिया = 50 लोग

तो ''X'' के 100 प्रतिशत के लिये

कितने चर्चों की जरुरत पड़ेगी?

इस बात को मन में रखते हुए, हम ''X'' जनसंख्या को 50 से विभाजित करते हैं, ताकि जरुरी चर्चों की संख्या निर्धारित की जा सके।

''X'' जनसंख्या = 10,00,000 लोग

1 कलीसिया = 50 लोग

10 लाख को 50 से विभाजित किया गया = 20,000

10 लाख ''X'' समूदाय के लोगों को को 20,000

चर्चों की शुरुआत की जरुरत पड़ेगी।

''X'' समूदाय के 10 प्रतिशत लोगों को के लिये 2,000

चर्च शुरु करने की जरुरत पड़ेगी।

लक्ष्य – कलीसिया गठन

नयी कलीसिया की शुरुआत् व स्वतंत्र करना

कलीसिया निर्माण के लिये लक्ष्य बनाने और गोद लेने के लिये प्रत्येक विशिष्ट समुच्य के अनुरुप होना चाहिये। अगले साल में 50 नये चर्च शुरु करने का लक्ष्य कुछ के लिये एक उपयुक्त लक्ष्य है। मौजूदा चर्चों को स्वस्थ समारोह की ओर बढ़ने के लिये एक पूर्वापेक्षा हो सकती है।

आपके नेटवर्क के अगुवों के साथ मिलकर उपयुक्त लंक्ष्यों पर विचार करें और अगले वर्ष के दौरान परमेश्वर के आंदोलन की अपनी उम्मीदों को तय करें। नीचे अपने लक्ष्यों को लिखें:

1).

2).

3).

विशिष्ट क्रियाएं

अपने नेटवर्क के लिये स्वस्थ चर्च समारोह के रुप में ढालना और नई कलीसिया शुरु करने की अनुमानित अगुवे होना अत्यन्त जरुरी है। तीन प्रशिक्षणों में से एक जिसमें ''हस्त–मार्गदर्शिका'' को लागू किया जाता है; ये आवश्यक रुप से नमूने के रुप में ढालने के कार्य को पूरा कर सकता है।

अपने गठन के अगले चरण निर्धारित करने के लिये प्रत्येक मंडली के भीतर अपने नेटवर्क का मूल्यांकन करें। ''मील का पत्थर'' उपकरण का प्रयोग करें, जिनके लिये पूर्व क्षेत्रों को स्थानांतरित करने का इरादा रखते है, जहॉ कलीसिया फंस सकती है।

हर भेड़ के लिये एक चरवाहा! हर चर्च में निहित अधिकार दिया गया!

मूल्यांकन – कलीसिया गठन के लिये हस्त–मार्गदर्शिका

6–10 के समूहों में समय लें, और नये विश्वासियों के प्रशिक्षण के लिये हस्त–मार्गदर्शिका का मूल्यांकन करें। विचार–विमर्श के लिये निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान करें। मजबुती लाने की ताक में रहें और यदि आपके प्रयासों में कोई कमजोरी हो तो उसमे सुधार करें।

विचार करने के लिये प्रश्नः

क्या यह आज्ञाकारिता पर आधारित है? जवाबदेही?

क्या यह जिम्मेवारी प्रदान करती है?

क्या यह गुणात्मक बढ़ोतरी की योजना बनाती है?

क्या ये अंदरुनी लोगों के द्वारा चलाये जाते हैं?

क्या यह स्व–अनुसंधान पर निर्भर होता है?

क्या यह कलीसिया गठन की ओर अगुवाई करता है?

क्या यह पुनरुत्पादनीय है?

प्रत्येक ''हॉ'' वाले उत्तर का विस्तार करें। ये क्यों जरुरी है?

नेतृत्व की बढ़ोतरी

अगुवे ही अगुवों को स्थापित करता है।

उद्देश्यः

– यीशु और पौलुस को एक परामर्शदाता के रुप में परखना, जिन्होंने गुणात्मक बढ़ोतरी किये।
– जिन अगुवों को हम उत्पन्न करते हैं, उनके द्वारा बढ़ोतरी का दर्शन देखना।
– अगुवे ही अगुवों को स्थापन करता है।
– हमारी सेवकाई के अन्तर्गत खास ''तीमुथियुस'' समुच्य के प्रति समर्पित होना।

तीमुथियुस समूहों का एक परिचय

जैसे कि खेत रु 3 में शिष्यपन के बिषय में लिखा गया है, राज्य के लिये ''222'' ही कुंजी है (2 कुरिन्थियों 2:2)। हर अगुवापन बढ़ोतरी का जड़ परामर्श देना होता है। एक शिष्य अपने परामर्श देनेवाले के जीवन में जो कुछ देखता है, वही उसके जीवन से प्रतिबिंबित होता है। नये विश्वासियों का परामर्श देने का कार्य कुछ ऐसा नहीं है, जिसे हम शुरु या अन्त करते हैं। यह भाग हमारे प्रयत्नों को संगठित करने में सहायता करेगा।

परामर्श देने के कार्य को समझना

इस धरती पर किसी भी समय किसी भी व्यक्ति के एक से अधिक सलाहकार होते हैं। इन सलाहकारों ने कार्यों और व्यवहारों का मॉडल तैयार किया जो सामाजिक मानदंडों के प्रजनन के लिये आगे बढ़ते हैं। हमलोग अपने माता–पिता की निगरानी में पले–बढ़े हैं, जैसे कि हम सामाजिक प्रतिक्रियाओं के नियम व कर्तव्य को समझते हैं। हमें हमारे शिक्षकों ने हमारी समझ, हमारे जीवन की दिशा, और समय की उपयोगिता के संबंध में अपने निगरानी में रखा है। यहॉ तक कि हमारी विश्व–दृष्टिकोण भी हमारी संस्कृति, या सामाजिक समुदाय के हाथों सामूहिक परामर्श के द्वारा निर्धारित की जाती है।

यह सत्य विश्वास करनेवाले समूदाय पर भी लागू होता है। हर नये विश्वासी को मसीह के पीछे चलने के कार्य के लिये परामर्श दिया जाता है। जैसे कि एक सामान्य मसीही व्यवहार में इसका पालन किया जाता है, तो इससे समूदाय के सामाजिक मानदंडों का गठन होता है। समय के साथ ये ''मानदंड'' एक संतुलन बनाता है, क्योंकि विश्वासियों ने अपने दैहिक जीवन के अन्तर्गत नियत भूमिकाओं और व्यवहारों पर ध्यान दिया है। दुख की बात है कि कई लोगों के लिये, इस प्रक्रिया में परमेश्वर के काम के लिये प्रारभिक उत्साह और उत्साह का ''ठंडा होना'' होता है।

इस वास्तविकता का फायदा उठाने से चल रही प्रक्रिया में जागरुकता आता है। विश्वासियों के समूदाय के अन्तर्गत परामर्श देने के कार्य को चलाना संभव है।

2 तीमुथियुस 2:2 कहता हैः ''और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

जैसे कि हमने पहले कहा है कि यह पद शिष्यपन या परामर्श देने की श्रृंखला प्रस्तुत करता है। यदि हम अपनी दृष्टिकोण इस वचन से बाहर निकल कर नये नियम के बड़े संदर्भ में जायें, तो हम देखते हैं कि यह श्रृंखला दोनों दिशा में बढ़ती है।

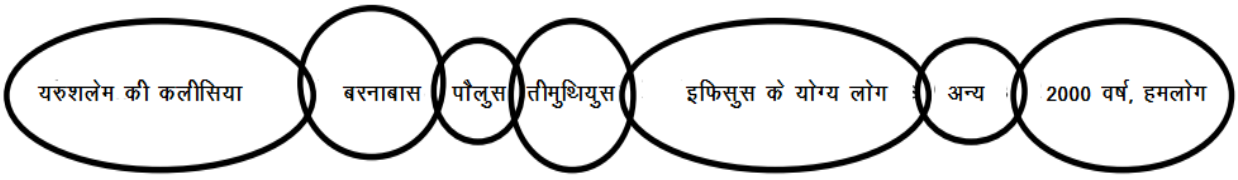

सभी कड़ियॉ एक से दिखाई नहीं देते, कुछ दूसरे से छोटे दिखते हैं। तौभी हर कड़ी के बिना श्रृंखला टुटी होती है। स्थानीय कलीसया के लिये भी यह सच है। चाहे हम माने या न मानें, शिष्यपन की श्रृंखला हर कलीसिया में मौजुद होती है! इस बात को जानने के लिये नीचे दिये गये तालिका पर गौर करें।

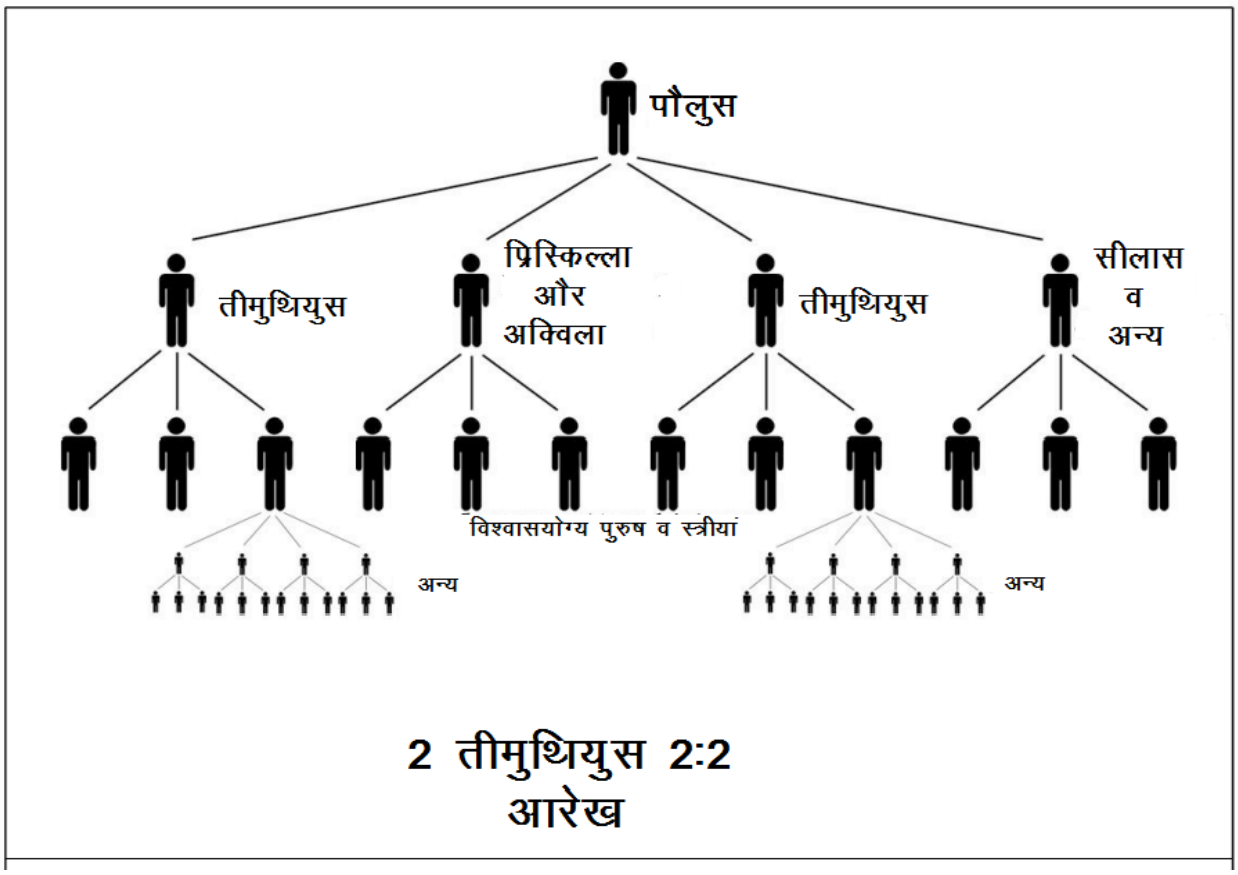

पौलुस की सेवकाई श्रृंखलाबद्ध था। इसी प्रकार, यहॉ तक कि उसकी अनुपस्थिति में, पौलुस का हजारों के साथ शिष्यपन का संबंध था।

यह आरेख हमारे लिये शिष्यपन श्रृंखला की खड़ी आयाम दर्शाती है। ''खड़ी आयाम'' अधिकार को प्रस्तुत नहीं करती है, बल्कि यह बढ़ी हुई कटनी है जो पूरे देश को शिष्य बनाने में सक्षम हैं।[32]

1. एक ही अगुवा के द्वारा कई श्रृंखला बनाया जा सकता है।
2. श्रृंखला में हर पीढ़ी या ''कड़ी'' बढ़ोतरी का स्तर लेकर चलता है। यह कलीसिया स्थापन आंदोलन के लिये सत्य है। वंशागत कड़ियां बहु–गुणित होती है, और आपके जोड़ में अनेक तीमुथियुस को जोड़ता जाता है।
3. श्रृंखला को बनाये रखने के लिये विश्वासयोग्य पुरुष और महिलाओं की जरुरत है।
4. अन्य?

परिवारों भी उसी ढंग से सजे होते हैं। माता–पिता –दादा–दादी बन जाते हैं, जब तीसरी पीढ़ी का जन्म होता है।

वंश की बढ़ोतरी ही बढ़ोतरी की कुंजी है।

[32]यह आरेख शिष्यपन के छोर तक अधिकार व जिम्मेदारी के बहाव को प्रस्तुत करता है।

परमेश्वर ने अपने राज्य को भी उसी तरीके से क्रम में रखा है। जैसे कि पौलुस ने तीमुथियुस को पुनरुत्पादन करने कर आदेश दिया था, तो उसके मन में *आत्मिक पोता–पोती* था, जो पुनरुत्पादन के काबिल हो। यह दर्शन नेतृत्व में बढ़ोतरी के लिये हमारी योजना को संचालित करना चाहिये।

परामर्श देने की सेवकाई को संगठित करना

परामर्श देने वाले के कार्य का स्वभाव मरकुस 4 योजना के हर स्तर पर अगुवों की पुनरुत्पादन की मांग करता है।

नये अन्यथा अन्पहूँचे क्षेत्रों में सेवकाई का विस्तार नये प्रवेश दल के विकास की मांग करता है, जो अंधकार को चीरने में सक्षम हो, और ऐसा विश्वासयोग्य बोनेवाला हो जो बीज से खेत को भर सके (खेत 1–2)।

सेवकाई में लंगर डालना शिष्यों बनाने वालों और कलीसिया स्थापकों में बढ़ोतरी की मांग करती है, जो नयी स्थापित कलीसियाओं में जड़ डाल सके (खेत 3–4)।

ऐसे अगुवों को परामर्श देने का कार्य एक समय–गहन–प्रक्रिया है जिसमें कई संपर्कों की आवश्यकता होती है, और ऐसा स्वभाव महिनों या वर्षों तक चलना चाहिये। गुणात्मक बढ़ोतरी की सेवकाई के अन्तर्गत इन कार्यों में शीघ्र ही ''पौलुस'' की परामर्श देनेवाली योग्तता बाहर की ओर बढ़ने लगती है। कैसे ''पौलुस'' की परामर्श छोटे समूहों को बढ़ोतरी को बनाये रखने के लिये जरुरी होगा?

तीमुथियुस समूह इसका उत्तर है।

परिभाषा – ''तीमुथियुस'' – एक अगुवा जो कलीसिया स्थापन रणनीति के मूल तत्व को ग्रहण करने और आगे बढ़ाने की इच्छा रखता हो, और इसके योग्य हो, और नेतृत्व श्रृंखला को विकसित करने में अगुवाई करता हो।

परिभाषा – ''तीमुथियुस दल'' – शिष्य बनाने वालों का एक दल, जो ''पौलुस और तीमुथियुस'' के संबंध के प्रति समर्पित हो, जिसमें नेटवर्क के छोर तक शिष्यपन की श्रृंखला की जिम्मेवारी आगे बढ़ायी जाती है।

तीमुथियुस दलों का सरलीकरण किया जाना

पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिया कि वह उन योग्य लोगों को ढुँढ़ ले, जो दूसरों को सीखाने के योग्य हो। लेकिन ऐसा करने में कई क्षेत्रों की बातें सामने आती है (2 तीमुथियुस 1:13; 2:2)।

1. कैसे हम गुणकारी तीमुथियुस (लोगों) को पहचान सकते हैं?
2. हम तीमुथियुस (लोगों) को क्या करना सीखाते हैं?
3. हम अपने तीमुथियुस (लोगों) को कैसे सीखाते हैं?

कुंजी प्रश्न #1 – कैसे हम गुणकारी तीमुथियुस (लोगों) को पहचान सकते हैं?

प्रभावकारी शिष्यपन के लिये उपयोग न की जानेवाली उपकरणों में से एक है – शुद्ध करना/छानना। आज हमारी कलीसियाओं में से अधिकांश जमे हुए शिष्यों से भरे हुए हैं। जमे हुए शिष्य जमी हुई सेवकाई की ओर नेतृत्व करती है। जिन्होंनें कलीसिया के गुणात्मक बढ़ोतरी का दर्शन पाया है, और अपनी योजनाओं व लक्ष्यों को देखा है, उनमें से अधिकांश निराश हो चुके हैं। और इस जमाव के कारण अपनी पटरी से उतर चुके हैं। इस असफलता का एक कारण हमारे नेतृत्व की पद्धति को बाइबलीय रीति पर छानने की विधि को लागू न करना है।

शुद्ध करने का मतलब यह नही होता है कि अविश्वासयोग्य या निष्फल लोगों को दूर कर दें। बल्कि यह कि यह जमें हुए विश्वासियों को उम्मीदें व जिम्मेवारियां देते हुए कार्य में लाकर झिंझोड़ देता है; जो मसीह के हर शिष्यों से मांग की जाती है। जब जिम्मेदारी दी गयी और पूरी भी हुई तो विश्वासयोग्य और फलवन्त होने वाले स्पष्ट हो जाते हैं। एक प्रकार से बाईलीय आदेश क्रीम को ऊपर आने में मदद करती है।

इस प्रकार के शुद्ध किये जाने के लिये हमारा आदर्श मसीह है। तीन वर्षों में, यीशु एक आंदोलन को शुरु करने में कामयाब थे, जो विश्व–स्तर पर भड़क उठी और जगत के छोर तक विश्वासयोग्य लोगों के द्वारा जारी है। इसे अपनी गति में लाने के लिये उसके समय व बहुमूल्य उपकरणों को बहूतायत से उपयोग किये जाने की मांग करती है। भीड़ के मध्य यीशु के द्वारा विश्वासयोग्य लोगों की पहचान करने और उन्हें सामर्थ से भरने का तरीका पर ध्यान दें।

स्व–अनुसंधान अध्ययन – विश्वासयोग्य लोगों को छानकर निकालना

निम्नलिखित वचनों को पढ़ें और यीशु के द्वारा की गयी छानने की विधि की खोज करें, जो उसने विश्वासयोग्य लोगों की पहचान के लिये की थी। आप जो पाते हैं, उसे लिखें।

1. मरकुस 10:17–23 प्रभुत्व की मांग
2. मत्ती 10:32–38 / यूहन्ना 6:52–67 कठोर वचन
3. मत्ती 13:9–17 / मरकुस 4:1–12, 33–34 – दृष्टांत – आत्माओं को परखने की बातें शामिल
4. अन्य? –

विश्वासयोग्य लोगों की पहचान करने और उन्हें सांचे में ढालने में यीशु के समय व तपस्या की मोंग थी। सम्पूर्ण सुसमाचार में, यीशु को देखा जा सकता है कि वह उन लोगों के साथ संबंध बनाने में लगा रहा, जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिया था। जनसाधारण में प्रचार की सेवकाई के मध्य, यीशु का वास्तविक खर्च नीजी तौर पर कुछ लोगों के लिये था।

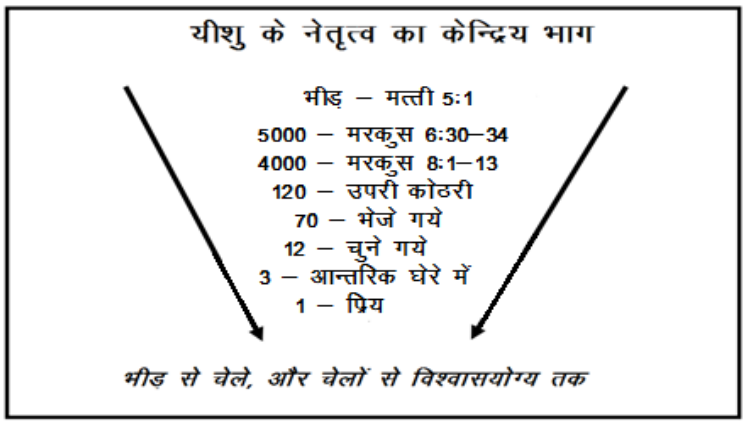

जबकि यह मान लिया गया है कि सेवकाई में सफलता को विस्तारित प्रभाव से परिभाषित किया गया है, सच्ची सफलता को पूरी रीति से इसकी गहराई से मापा जा सकता है। यह यीशु की जनसाधारण प्रचार नहीं थी जिससे यह जगत बदल गया। वास्तव में जो उसके पीछे आये, उनमें से अधिकांश उसे एक सांसारिक शासक समझने की गलती की। यह यीशु की नीजी सेवकाई ही थी जिसने इस जगत को उलट दिया था![33] यीशु के द्वारा छानने की प्रक्रिया के परिणाम को देखें।

[33] यीशु के नमूने में नीजी व जनसाधारण सेवकाई सरलीकरण हेतु उपकरण व विवरण के लिये देखें:
Akins, T. 1991. *Pioneer Evangelism*. Junta de Missoes Nacionais, Convencao Batista Brasileira, Brazil

यीशु के द्वारा भीड़ को छानने का अन्तः परिणाम शिष्यों को एक केन्द्रिय हिस्सा था, जिसमें उसने गहराई से खर्च किया था। भीड़ में से यीशु ने चेले बनने की बुलाहट दी। चेलों में से, यीशु ने शिष्य बनाये। शिष्यों में से, उसने प्रेरित ठहराये, जो जगत के छोर तक सेना की अगुवाई करेंगे।[34]

मरकुस 3:17 और 3:13–14 मे, यह नियुक्ति स्पष्ट रुप से देखी जा सकती है। यीशु के शिष्य होने के लिये उन लोगों को शामिल किया गया था, जो उसके पीछे चलते और उससे सीखते थे। बारहों को ''प्रेरित'' कहा गया गया था, ताकि वह उन्हें प्रचार के लिये बाहर भेज सके। यीशु का उदाहरण का अनुशरण करने से हम पाते हैं कि परामर्श देने का उद्देश्य शिष्यों को भेजना होता है।

क्यों शुद्ध किया जाना या छानना जरुरी है?

कलीसिया स्थापक के लिये सबसे बड़ा श्रोत उसका समय होता है।[35]

अपने सेवकाई भर में, हर कोई यीशु के समय के लिये वांछित था। बार–बार वह अधिकारियों के घरों को बुलाया गया था, एक सम्मानित अतिथि के रुप मे रात्रि–भोज और उत्सवों के लिये आमंत्रित किया गया था, और उससे वहीं ठहरे रहने की उम्मीद की गयी थी जहॉ उसी सेवकाई फलवन्त हो रहा था। लोगों की भीड़ जो उसके पीछे आयी, उसके पास रोग व जरुरतों की विविधता लायी गयी थी। कई लोग ''मसीह'' की अपनी जरुरत से ग्रस्त थे। अधिकांश लोग यह नहीं देख पाये कि उनकी दैनिक जीवन की जरुरतें अस्थायी हैं। तौभी यीशु अपने पिता के कार्यक्रम के द्वारा चलाये जा रहे थे। हाशिये से बाहर या अविश्वसनीय लोगों के साथ अत्याधिक समय गुजारना कोई विकल्प नहीं था।[36]

छानने के लिये समय उन शिष्यों को दिया जाता है जो आगे बढ़ रहे हैं। यह यीशु की सेवकाई के लिये एक महत्वपूर्ण बात थी। जहॉ कहीं भी यीशु गये, वहॉ भीड़ पहूॅच से बाहर थी, उनमें से विश्वासयोग्य लोगों को पीछे आने के लिये बुला लिया गया था। चाहे वो पहाड़ियों पर, या झील पर, या बाग में। यीशु के समय की तपस्या केन्द्रिय शिष्यों के लिये थी।

इसी तरह, एक पौलुस के प्रकार के परामर्शदाता को विकर्षण और कर्तव्यों की सेवकाई का सामना करना होगा। बाधाओं के बजाय, ये अन्य उभरते अगुवों के लिये उत्तरदायित्व की प्रतिनिधि के लिये परामर्श देने के अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार के प्रतिनिधि के बिना, परामर्शदाता की समय–सारणी आगे चलकर कलीसियाई बढ़ोतरी के लिये विभाजित हो जाती है। परामर्शदाता की बुलाहट और दिशा–निर्देशन पर दोबारा गौर किया जाना चाहिये, ताकि इसकी उच्च–प्राथमिकता तय की जाये। ऐसा करने से हम आश्वस्त हो जाते हैं कि हमारा समय उन लोगों के साथ बिताया गया है, जिन्हें परमेश्वर ने हमें अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिये दिया है।

---

[34] ये सामग्रियॉ सीधे इस पुस्तक से ली गयी है: Carlton, R. B. 2003. *Acts 29: Practical Training in Facilitating ChurchPlanting Movements*. Radical Obedience Publishing.

[35] Ibid

[36] देखें मरकुस 1:29–39; *3738.

यीशु के समय की उपयोगिता के लिये इस आरेख पर ध्यान करें।[37]

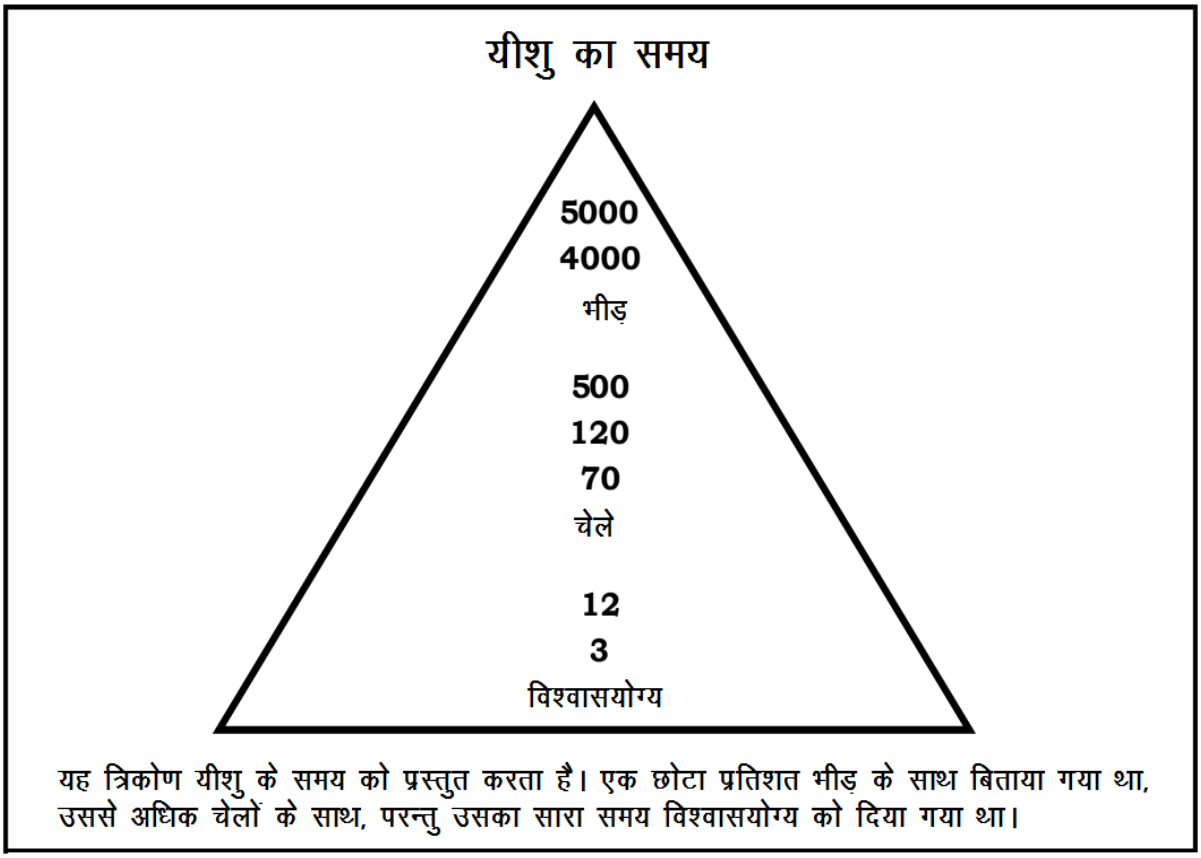

उपयोगिता के लिये गृह–कार्य

यीशु की सेवकाई से इन सत्यों को उपयोग करने का मतलब कुछ बातों को खोज निकालना है, जिसे हमें करने की शुरुआत् करना है, और दूसरे कामों को रोकने की ताकि हम उत्तम कर सकें। जरुरी है कि हममें अपनी नेतृत्व की प्रभावकारिता को धार करने व मूल्यांकन करने की इच्छा हो। अपनी सेवकाई के अन्तर्गत इन प्रश्नों पर ध्यान करने व उत्तर देने के लिये समय लें।

– एक विश्वासयोग्य व्यक्ति को पाने के लिये आप किस छननी का प्रयोग करेंगे?

– आप उन लोगों के साथ कितना समय बिताते हैं, जो फलदायी नहीं हैं?

– क्या आप फलदायीपन से विश्वासयोग्ता को परिभाषित करते हैं?

प्रार्थनापूर्वक 5–10 अगुवों को सूचीबद्ध करें, जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है, और जिन्हें और अधिक समय की जरुरत है? परमेश्वर के सामने समर्पित हों ताकि आपके समय–सारणी को इन कुछ लोगों के साथ गहराई से खर्च करने के लिये आश्वस्त हो सकें। आपने अभी अपना प्रथम ''तीमुथियुस दल'' की पहचान कर लिया है।[37]

[37] यह सामग्री सीधे इस पुस्तक से ली गयी है: R. Bruce Carlton, *Acts 29*.

कुंजी प्रश्न # 2 – हम तीमुथियुस (लोगों) को क्या करना सीखाते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर चार खेतों की योजना मरकुस अध्याय 4 है। हमारा लक्ष्य खुद की विश्वासयोग्य व फलदायी पुनरुत्पादन है। हमारे तीमुथियुस अगली पीढ़ी के कलीसिया स्थापक हैं। इसका अर्थ है कि हम अवश्य ही हमारी नेतृत्व योजना के सभी स्तरों में ''तीमुथियुस'' लोगों को तैयार करें।

हमारे नेटवर्क में अगुवों की बढ़ोतरी को मापने से हमें नेतृत्व के पांच स्तरों को अपनाने की अगुवाई मिली है।[38]

इस आरेख पर ध्यान करें:

नेतृत्व में बढ़ोतरी

नेतृत्व के पॉच प्रगतिशील स्तर

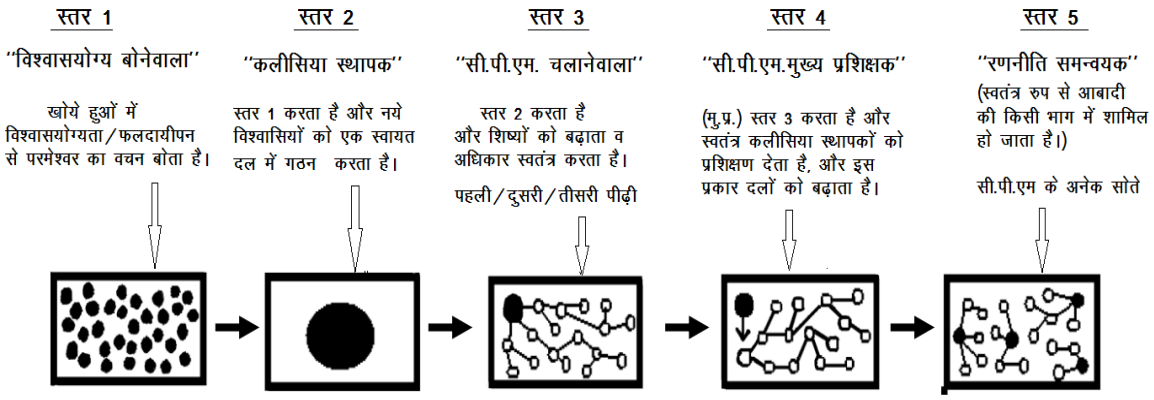

नेतृत्व विकास दो कुंजी प्रश्नों की मांग करती है।

मेरे अगुवे माप 1–5 में कहॉ पाये जाते हैं?

कैसे मैं उन लोगों को अगले स्तर के लिये आगे बढ़ाता हूँ?

इन प्रश्नों का उत्तर एक मकसद और केन्द्रियता प्रदान करेगा, जो आपके नये अगुवों के लिये सलाह देने के लिये होगा। उनकी वर्तमान स्तर को पहचान करना करना ही एकमात्र शुरुआत् है। उन्हें आगे बढ़ाने के लिये इससे भी अधिक जरुरी इसकी योजनाएं हैं।

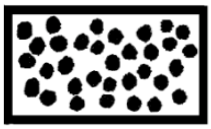

बीज बोनेवाला

स्तर एक का अगुआ

विवरण – *खेत 1–2 को आगे बढ़ानेवाले* – ये अगुवे सरल भाव से सुसमाचार प्रसार के लिये प्रभु की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी होते हैं। वे खोये हुओं से प्रेम करने के कारण अंध–विश्वास और भय पर जय पा लिये हैं, इस कारण वे बोने के लिये विवश होते हैं। ज्यादातर ये बोनेवाले सरल उपकरणों का उपयोग करते हैं। उन्हें उन उपकरणों को उपयोग करना सीखाया गया है, जो हर विश्वासी के पास उपलब्ध होता है, जो हैं – उनकी गवाही और सरल सुसमाचार प्रस्तुति। ज्यादातर

[38] इस नेतृतव का स्तर का तात्पर्य दर्शन और जिम्मेदारी की बढ़ोतरी का पीछा करने के लिये ''मापने की छड़ी'' से है। ये ''रणनीतिक समन्वयक'' बनने के लिये पॉच स्तर नहीं हैं, बल्कि यह हमारे संकल्प के लिये सहायक कुंजी के उपकरण हैं जो रुकावटों के योग्य व समीकरण के लिये है, यदि इसे पता नहीं लगाया गया तो जमाव हो सकता है। सामान्य उपकरणों की उनकी उपयोगिता दूसरों को पुनरुत्पादनीय तरीके से तैयार करने के योग्य बनाता है।

वे अपने ''ओइकोस'' से शुरु किये हैं, और कुछ एक को विश्वास में जीत लिये हैं। सामान्य उपकरणों की उनकी उपयोगिता दूसरों को पुनरुत्पादनीय तरीके से तैयार करने के योग्य बनाता है।

कैसे हम उन्हें आगे बढ़ाते हैं?

स्तर 1 के अगुवों को इस दर्शन की चुनौती दी जानी चाहिये कि वे विश्वासियों को **शिष्यपन समूहों में इकट्ठा** करें। कई बार इन अगुवों में एक पासबान होने की योग्यता की कमी पायी जाती है, तौभी इन्हें एकजुट किया जा सकता है कि वे नयी कलीसियाओं की शुरुआत करे।[39] उन इलाकों में जहॉ पारम्परिक कलीसियाऐं पहले ही से वर्तमान हैं, उनसे एक सीमा का पूर्वाभास रखें। एक पेशेवर सेवक स्वीकृत अगुवा का रुप होता है। **स्तर 1 के विश्वासियों को शिष्यपन की सरल सामग्रियों से परिपूर्ण करना** अत्यन्त जरुरी है। सामग्रियों की **प्रस्तुति में उनकी निर्भरता** ही उनके द्वारा अगला कदम उठाने की इच्छा निर्धारित करेगी। सामग्रियों की तैयारी में कथित आवश्यकता को दूर करने के लिये **सामूहिक बाईबल अध्ययन** प्रदान करने वाली सामग्रियों पर विचार करें।

इन अगुवों के लिये महत्वपूर्ण बाईबल अध्ययन में आज्ञाकारिता और **कलीसिया की गतिविधियों** पर जोर देते हुए प्रेरितों के काम अध्याय 2 और 13 को शामिल करें। इन अगुवों के साथ काम करने से ''डी.एन.ए'' निर्धारण करने का मौका मिलेगा, जो एक उदय होते कलीसिया के लिये होगा, जो स्वाधीन व पुनरुत्पादनीय हैं।

कौशलता – करने में योग्य. . .	**अगला कदम. . .**
1). बोने में आज्ञाकारी होना	1). शिष्यत्व समूहों का गठन करना
2). खोये हुओं से प्रेम करना	2). सरल शिष्यत्व सामग्रियों का पुनरुत्पादन करना
3). सरल उपकरण उपयोग करना	3). प्रस्तुति में भरोसा होना/रखना
4). दूसरों के लिये बाने का आदर्श बनना	4). सामूहिक बाईबल अध्ययन प्रणाली
5). अपने 'ओइकोस' तक पहूँचना	5). कलीसियाई गतिविधियों को समझना

कलीसिया स्थापक

स्तर दो अगुवा

विवरण – *खेत 3–4 को आगे बढ़ाने वाले* – स्तर 2 के अगुवों ने नई कलीसिया शुरु करने के लिये मजबूती से एक कदम आगे बढ़ाया है। उन्होंने शरीर के जीवन की आवश्यकता और स्थानीय कलीसिया के अनिवार्य काम को समझ लिया है। अपने तय कौशलता के अन्तर्गत ही वह योग्यता है, जिससे वे कलीसिया की उचित गतिविधियों से संबंधित जरुरी **वरदानों को पहचान सकते हैं।** वे इस योग्य बन गये हैं कि **प्रभावशाली आदर्श रुपी बीज बोने वालों** को तैयार कर सके, कारण उनके साथ जुड़े विश्वासियों में **शिष्यपन की शुरुआत** हो चुकी है। अब उनमें स्वस्थ कलीसिया के लिये एक स्पष्ट दर्शन पाया जाता है। वे **कलीसिया के नियमों/विधियों को पालन करने में अधिकार** रखते हैं, और नियमित रुप से कलीसिया में उसे चलाते हैं।[40] यह माना नहीं जाता है कि कलीसिया स्थापक एक पासबान बन जायेगा, बल्कि इफिसियों 4:11–12 के बारे में जागरुकता उन्हें विश्वासयोग्य लोगों में से **उदय होते अगुवों को पहचानने** के लिये आगे धकेलती है,

---

[39] नये नियम की रुपरेखा के अनुसार स्त्रीयां एक पासबान होने के लिये योग्य नहीं ठहरती है, तौभी उन्हें प्रेरितों के काम और पौलुस की पत्रियों में एक उत्प्रेरक के रुप में देखा जा सकता है (देखें, लुदिया, प्रिस्किल्ला आदि)। इस बात को मन में रखते हुए स्त्रीयों के लिये हर स्तर के नेतृत्व खुले होते हैं।

[40] यह जाहिर है कि कलीसिया स्थापन और कलीसिया के विकास को रुक जाता है जहां कलीसिया की विधियों का पालन करने का अधिकार अनुपस्थित रहता है। स्त्रीयों के द्वारा चलाई गयी कलीसिया स्थापन के कार्य में कठिनाई आती हैं। ऐसे मामलों में, इस अंतर को भरने के लिये जल्द ही उभरते पुरुष नेतृत्व को अधिकार के साथ मान्यता दी जानी चाहिये।

जिन्हें अगुवापन का भार सौंपा जायेगा। इस अर्थ में, वे कलीसिया के कार्यों व विधियों के मामले में जल्द ही **अधिकार जारी** करते हैं।

कैसे हम उन्हें आगे बढ़ाते हैं?

कलीसिया स्थापक के लिये कई चुनौतियां मौजूद होती हैं। उनकी भूमिका को परिभाषित करना और बनाये रखना कभी खत्म न होने वाला कार्य होता है। पारम्परिक मॉडल नयी मंडली में एक स्वामित्व का सुझाव देते हुए कलीसिया स्थापक को पासबानीय नेतृत्व की ओर धक्का देती है। इस मॉडल के अन्तर्गत कलीसियाओं की बढ़ोतरी करना संभव नहीं है। जरुरी है कि कलीसिया स्थापक **फल को स्वतंत्र करे।** शायद प्रार्थना का एक अवसर स्थापक के कार्य को स्पष्ट करे, और **नयी देह में नेतृत्व का प्रतिनिधित्व के लिये सहायता करे।** पौलुस ने शीघ्र ही इस प्रक्रिया को पूरा कर लिया था, जिससे वह नयी खेतों में शामिल होने में कामयाब हो सका था।[41]

इसी कारण कलीसिया स्थापक आत्मिक वरदानों का अध्ययन की सेवा के लिये माना जाता है। कलीसियाई जीवन में एक स्वस्थ ज्ञान नये विश्वासियों में याजकपद के प्रति सम्मान को बढ़ावा देगा।[42] जरुरी है कि एक कलीसिया स्थापन अपने दैनिक समय का सही उपयोग करना शुरु करना चाहिये। शिष्यों को प्रभावकारिता की ओर शुद्ध करने की योग्यता से उसके प्रयासों में पर्याप्तता की ओर ध्यान जायेगा और और उसका ध्यान चोखा होगा। यह समझ सीधे तौर पर **''222'' की बढ़ोतरी[43] की नीति ओर जाता है,** जो कलीसिया स्थापक को अन्य क्षेत्रों शामिल होने के लिये स्वतंत्र करता है।

यह जरुरी है कि एक कलीसिया स्थापक नयी मंडली की उन्नति को बाईबलीय कलीसिया की दिशा में पकड़ बनाये। **स्वस्थ कलीसिया** की ओर मील के पत्थर की समझ ही एक कलीसिया स्थापक को प्रगति को मापने और अगला कदम निर्धारण करने में सहायक होगा।

कौशलता – करने में योग्य. . .	**अगला कदम. . .**
1). आत्मिक वरदानों की पहचान करना	1). फल जारी/स्वतंत्र करना
2). मॉडल बीज बोने वाला बनना	2). नेतृत्व का प्रतिनिधि बनना
3). शिष्यपन शुरु करने की पहल करना	3). स्वस्थ शरीर के जीवन को जानना
4). कलीसियाई विधियों को चलाना	4). शुद्ध करने की योग्यता होना
5). उभरते अगुवों की पहचान करना	5). ''222'' बढ़ोतरी
6). अधिकार जारी करना	6). स्वस्थ कलीसियाओं को स्वतंत्र करना

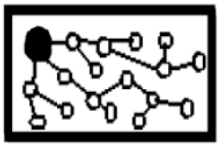

कलीसिया स्थापन आंदोलन को आगे बढ़ाने वाला

स्तर तीन अगुवा

विवरण – कलीसिया स्थापन आंदोलन (सी.पी.एम) को आगे बढ़ाने वाला मात्र एक कलीसिया स्थापक होता है, जिसने सफलतापूर्वक नयी कलीसियाओं के जन्म को बहु–गुणित किया है। ऐसा संभव **पहचान करने** में उसकी अपनी इच्छा से जुड़ा

---

[41] उसके थिस्सलुनीकियों में ठहरने पर गौर करें – संभवतः तीन सप्ताहों के जैसा (प्रेरितों के काम 17:2)। यह भी एक कारण है जिससे उसने क्रेते में तीतुस को झिड़का था। (देखें तीतुस 1:5)

[42] इस हस्त–पुस्तिका के अन्तर्गत (Motives for Church Planting) "कलीसिया स्थापन का अभिप्राय'' भाग में याजकपद के अध्ययन को देखें।

[43] ''222'' का तात्पर्य 2 तीमुथियुस 2:2 से है।

होता है, जिसके अन्तर्गत वह स्थानीय कलीसिया में **अधिकार को स्वतंत्र कर** देता है, प्रभावशाली रुप से बोने और काटने के लिये **विश्वासियों को एकजुट** करता है, और **''डी.एन.ए'' की बढ़ोतरी का पालन–पोषण** करता है। जब कलीसिया बढ़ने लगती है, तो वे पुनरुत्पादन भी करने लगती है। **दूसरी, तीसरी और चौथी पीढ़ी की कलीसिया** सी.पी.एम चलाने वाले का दर्शन होता है। कलीसिया स्थापन को आगे बढ़ानेवाला **जिम्मेदारी** का एक **मजबुत प्रतिनिधि** बन जाता है, जो प्रायः अपने नेटवर्क के अन्दर **विभिन्न स्तर के अगुवों** को जोड़ता जाता है। **वे कलीसिया के लिये शुन्य होते हैं,** और चार खेतों के लिये जाने जाते हैं, और अपनी खुद की नेटवर्क में **सीखाने योग्य कार्य** को ले लेते हैं। बड़े भाग में, उनके **प्रयासों को योग्यता से परे सेवकाई** की समझ के रुप में संक्षेपण किया जाता है।

कैसे हम उन्हें आगे बढ़ाते हैं?

यहॉ जो सवाल पुछा जा सकता है, वह हैः क्या हमें उन्हें आगे बढ़ाना चाहिये? सी.पी.एम को आगे बढ़ाने वाला परमेश्वर के आंदोलन के अन्तर्गत एक महान प्रभावशाली अगुवा होता है। ऐसे व्यक्ति को कटनी के कार्य से विचलित होने से बचे रहना चाहिये। तौभी जब सही समय होता है, तो ऐसे अुगुवों का गुण बहूतायत से अन्य नेटवर्कों पर प्रभाव डालता है।

सी.पी.एम को आगे बढ़ाने वाला सेवक को **अन्य फलदायी खेतों में जाकर देखने से** बड़ी सहायता मिल सकती है। इस प्रकार की देखने के कार्य से उसे अपने नेटवर्क के अन्तर्गत उन सीमाओं को तोड़ने में सहायता मिलता है, जिसका अनुभव उसे पहले से नहीं होता है। यह आगे चलकर उसको अपने उन **उपकरणों का मूल्यांकन करने** का मौका मिल जाता है, जिसे वह अपने व अन्य क्षेत्रों में उपयोग कर रहा होता है।[44] इस तरह के खुलासे से उसके लिये **वैश्विक कलीसिया और राज्य के विस्तार के लिये उसकी आंख खुल जाता है।** इससे उसे महान आदेश से संबंधित एक ताजा अवसर का अनुभव होता है, और इससे साथ–साथ वह **इस बात का भी बड़े पैमाने पर पुणः मूल्यांकन कर सकता है कि ''क्या होने जा रहा है''।**

कौशलता – करने में योग्य. . .	**अगला कदम. . .**
1). अधिकार की पहचान व मुक्त किया जाना	1). अन्य फलदायी खेतों को देखना/खुलासा होना
2). विश्वासियों को एकजुट करना	2). उपकरणों का मूल्यांकन करना
3). गुणात्मक बढ़ोतरी को बढ़ावा देना	3). वैश्विक चर्च में अपने अभिनय को महसुस करना
4). दूसरी, तीसरी, और चौथी पीढ़ी का दर्शन	4). पुणः मूल्यांकन करना
5). एक मजबुत प्रतिनिधि करनेवाला	5). अन्य नेटवर्कों के बल को बढ़ाना
6). नेतृत्व के स्तरों में बढ़ोतरी	6). उत्प्रेरक की सेवकाई को महसुस करना
7). कलीसिया के लिये शुन्य नमूना बनना	
8). नेटवर्क के अन्तर्गत प्रशिक्षण का कार्य/अभिनय	
9). अपनी योग्यता से बढ़कर दर्शन	

इस खुलासे का लक्ष्य ऐसे लोगों को एकजुट करना है कि उन्हें **अन्य नेटवर्कों को प्रभावकारिता के लिये सामर्थ** से भरा जा सके। कलीसिया स्थापन कार्य को आगे बढ़ाने वाले लोगों को चुनौती दी जानी चाहिये ताकि वे स्वतंत्र आंदोलन के **उत्प्रेरक के रुप में अपनी विशेषता** और संभावित कार्य की पहचान कर सके। जब समय सही होगा तो अपने नेटवर्क के बाहर दूसरों को प्रशिक्षण देने से उनकी प्रभावशीलता बढ़ जायेगी।

---

[44] यह ''क्रॉस–पोलिनेशन'' (अन्य इलाकों से खाद/ऊर्जा प्राप्त किया जाना) को एक चेतावनी के साथ संतुलित किया जाना चाहिये ताकि किसी मौजूदा आंदोलन को भ्रमित न करें, और उसे लुभाने न दें।

रणनीति समन्वयक

स्तर चार अगुवा

विवरण – एक सी.पी.एम मास्टर प्रशिक्षक वह होता है जो अपने **स्वायत/स्वतंत्र विद्यमान नेटवर्क** के अन्तर्गत कलीसियाओं की बढ़ोतरी की प्रणालियों की शिक्षा देता है। एक मास्टर प्रशिक्षक अपने परिश्रम का फल खुद नहीं लेता, बल्कि वह अपने से स्वतंत्र होते हुए **नेटवर्कों को प्रभावशाली होने के लिये बल देता** है। **मास्टर प्रशिक्षक 1–4 स्तर**, और स्तर 5 में कलीसिया स्थापन योजना के एक हिस्से को प्रशिक्षण देने में सक्षम होता है। मास्टर ट्रेनर ऐसी प्रशिक्षणों को चलाने के लिये जरुरी संसाधनों को जुटाने की योग्यता के साथ–साथ, एक **मजबुत नेटवर्क बनाने की कुशलता** भी रखता है। उसमें **प्रकाशितवाक्य 5 और 7 का उदय होता दर्शन** और हर जातियों के लिये बोझ पाया जाता है।

कैसे हम उन्हें आगे बढ़ाते हैं?

जबकि मास्टर ट्रेनर एक सिद्ध प्रभावी अगुवा है, उसकी सेवकाई में जन–समूह पर ध्यान करने की कमी हो सकती है। इस तरह, महान आदेश की रणनीतिक प्रकृति की कमी कभी–कभी होती है। जन–समूह पर केन्द्रित मिशियोलॉजी को पवित्रशास्त्र के अन्तर्गत महान आदेश ("panta ta ethne") में स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। सभी लोगों की परमेश्वर का पीछा स्पष्टतः महान आदेश को और प्रभु के आगमन को जातीय समूहों को सुसमाचार संदेश के साथ जोड़ता है।[45] इस क्षेत्र में केन्द्रित प्रार्थना नें कईयों के हृदयों में जनसंख्या के एक खास भाग के लिये स्पष्ट बोझ प्रकट किया है। मास्टर ट्रेनर को ऐसी बाइबलीय सामग्रियों से चुनौती देने से यह परिणाम आ सकता है कि वे पहले अन्–पहूँचे लोगों तक पहूँचने के लिये शामिल हों।

कौशलता – करने में योग्य. . .

1). विद्यमान नेटवर्कों में बल/प्रशिक्षण दे

2). स्तर 1–4 और 5 के सी.पी.एम योजना को प्रशिक्षण दें

3). दूसरों के साथ सफल नेटवर्क बनायें

4). संसाधनों को एकजुट करें

5). प्र.वाक्य 7 के दर्शन व बोझ को देखें

अगला कदम. . .

1). जन–समूह पर ध्यान करें

2). महान आदेश ("panta ta ethne") अध्ययन करें

3). लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रार्थना करें

4). जनसंख्या के एक खास भाग के लिये स्पष्ट बोझ रखें

5). पहले अन्–पहूँचे लोगों तक पहूँचें।

रणनीतिक समन्वयक

स्तर पॉच अगुवा

विवरण – एक रणनीतिक समन्वयक (एस.सी) वह होता है जिसने **स्तर 1–4 को प्रशिक्षण** देने के कार्य को स्वीकार किया है, और इसके साथ–साथ **मौजुदा नेटवर्कों और संसाधनों को एकजुट करने** की भी; जिसे वह किसी खास आबादी वाले हिस्से मे लगा सके। आबादी का यह हिस्सा रणनीतिक समन्वयक के लिये इस उद्देश्य से एक ध्यान–केन्द्र का बिषय बन जाता है, कि वह वहॉ पर **पुनरुत्पादनीय कलीसिया स्थापन रणनीति को लागू कर सके।** रणनीतिक समन्वयक **असम्मिलित और अन्–पहूँचे लोगों के लिये एक अधिवक्ता बन जाता है।** इस तरह से, रणनीतिक समन्वयक की भूमिका महान आदेश और प्रभु के आगमन के बीच एक रणनीतिक जोड़ बनाते हुए चलती है। रणनीतिक समन्वयक का लक्ष्य आबादी के उस भाग में **कलीसिया स्थापन की धाराओं को बढ़ाना है** जो हर लोगों के बीच सुसमाचार का खुलासा कर सके। रणनीतिक समन्वयक अवश्य ही बोने वालों, कलीसिया स्थापकों, कलीसिया स्थापन आंदोलन को आगे बढ़ाने वालों, और मास्टर ट्रेनर जैसे लोगों को जोड़ेंगे।

---

[45] इस हस्त–पुस्तिका में ''कलीसिया स्थापन का कलीसिया स्थापन का अभिप्राय'' देखें।

कैसे हम उन्हें आगे बढ़ाते हैं?

एक रणनीतिक समन्यवक उस खास पद पर होता है जहॉ वे वह महान आदेश के अन्त की पहचान करने लगता है। रणनीतिक समन्वयक को चुनौती दी जानी चाहिये ताकि वह सौंपे गये कार्य से परे खाली स्थान को भर सके। कौन अगला रणनीतिक समन्वयक होगा? अभी कौन सा समूह वर्तमान है जिसमें शामिल होना चाहिये?

कौशलता – करने में योग्य. . .

1). स्तर 1–4 के अगुवों को प्रशिक्षण दें।

2). संसाधनों/नेटवर्कों को एकजुट करें।

3). पुनरुत्पादनीय कलीसिया स्थापन रणनीति लागू करें।

4). अन्–पहॅूचे लोगों के लिये अधिवक्ता बनें।

5). कलीसिया स्थापन के कई सोताओं को बढ़ावा दें।

अगला कदम. . .

प्रभु के आगमन की उम्मीद रखें।

इन भुमिकाओं में सुक्ष्म अंतरों पर विचार करें।

- **स्तर 3 कलीसिया स्थापन आंदोलन सुत्रधार** – अपने नेटवर्क के अन्तर्गत प्रशिक्षण व एकजुट करता है।
- **स्तर 4 कलीसिया स्थापन आंदोलन मास्टर ट्रेनर** – बढ़ोतरी के लिये विद्यमान नेटवर्कों को एकजुट करता है।
- **स्तर 5 रणनीतिक समन्वयक** – खास आबादी के हिस्से को लक्ष्य बनाने के लिये विद्यमान उन नेटवर्कों को एकजुट करता है, जिससे वह जुड़ा नहीं है।

उपयोगिता के लिये कार्य

अगुवों को अपनी पहली संभावित ''तीमुथियुस समूह'' में पुनः ध्यान दें।[46] जैसे कि आप प्रार्थना करते हैं और अपनी सूची के लिये सोचते हैं; और आगे आनेवाली प्रश्नों का उत्तर दें।

- सेवकाई में उनकी वर्तमान भूमिका पर विचार करने के लिये समय लें।
- अभी वे किस प्रकार की जिम्मेवारी निभा रहे हैं?
- ''चार खेतों'' में से किसे वे आगे बढ़ा रहे हैं?
- उनके सम्पूर्ण सेवकाई का लेखा लेने के बाद, आज आप उन्हें अपनी नेतृत्व की सूची में क्या स्थान देंगे?
- सबसे जरुरी बात है, कि वे वर्तमान में जहॉ कहीं भी हो, कैसे आप उन्हें आगे बढ़ायेंगे?

आप जिन अगुवों को बड़ी जिम्मेदारियों के साथ आगे बढ़ाना चाहते हैं, उन हरेक के लिये विशिष्ट कार्यों का लेखा रखने के लिये समय लें। इस प्रकार का इरादा आपके लिये इन अगुवों के साथ हर सम्पर्क का पूर्ण लाभ उठाने में मददगार होगा।

[46]कुंजी प्रश्न # 1 पूरा होने के बाद इस भाग को तैयार किया गया था।

तीमुथियुस दल कार्य योजना

तीमुथियुस	*वर्तमान स्तर (स्तर 1–5)*	*उन्हें आगे बढ़ाने के लिये खास कार्य इस माह*
विकास	स्तर 2 कलीसिया स्थापक	इस माह वह उसे दो लोगों को बपतिस्मा देने के साथ स्वतंत्र करेगा

जब एक रणनीति समन्वयक किसी विद्यमान नेटवर्क के साथ संबंध साधता है, तो प्रायः यह सवाल उठता है:

क्या हम अगुवे बनाते हैं, या अगुवे का अनुसंधान हैं?

इस प्रश्न का उत्तर उस दर में बहूतायत से प्रभाव डालेगा जिसमें अगुवों को शामिल किया जा सकता है, या फिर प्रभावशाली सेवकाई के लिये प्रशिक्षित किया जा सकता है। क्या उन अगुवों को शामिल करना संभव है जो पहले ही से स्तर दो या तीन के अगुवापन का अभ्यास कर रहे हैं? कैसे हम इस योग्यता के साथ ''आज्ञाकारिता के हाथों'' का संतुलन करते और मूल्य देते हैं, कि एक ''बड़े दृश्य'' के मुद्दे को संभाला जा सके, जो वैश्विक कलीसिया के परिदृश्य के लिये एक विस्तारित दृश्य की मांग करता है? इसका कोई विस्तारित उत्तर नहीं हो सकता। हरेक समुच्य को एक खास परिस्थितियों के साथ आगे बढ़ाया जाता है, कारण इस बातचीत में हरेक अगुवा अलग–अलग वरदान लेकर आता है।

अगुवे बनाने के संभावित फायदेः

1. अधिकार और आज्ञाकारिता के डी.एन.ए मुद्दे की बात आरम्भ ही से की जाती है। ऐसा करना आंदोलन को बाहरी परम्परा से बचाता है, जो बढ़ोतरी में रुकावट बने।
2. अगुवों के समूह में एक साथ उन्नति करने की प्रवृति होती है। अगुवों के ''फसल'' में, जिसे नेतृत्व स्तर के द्वारा आगे बढ़ाया गया है, उस भरोसे का करीबी संबंध होता है; जो समय के दौरान बना है।
3. आत्मिक वरदानों और कौशलताओं का ज्ञान पूरी रीति से आ जाता है, और ठीक वैसे ही पूर्ण रुप से उपयोग भी किया जाता है।
4. अन्य?

अगुवे बनाने के संभावित हानिः

1. नये अगुवे सेवकाई के बारे में अनेक पूर्वधारणा लेकर प्रवेश करते हैं, जो डी.एन.ए मुद्दे के लिये योग्य न ठहरे।
2. भरोसे और प्रतिस्पर्धा के मुद्दे की उम्मीद की जानी चाहिये, यदि नीचले स्तर (grass roots) के अगुवे छोटे मार्ग (short cut) से नेतृत्व की बात मन में रखते हैं।
3. चरित्र और विश्वसनीयता के मुद्दे, जिसे अगुवा बनाते समय करीब से जॉच लिया गया हो; एक गलत धारणा हो सकती है। कारण अगुवे बाहर से नेटवर्क में प्रवेश करते हैं।
4. अन्य?

जबकि बाहरी अगुवे अनोखे उपकरण देते हैं, और उन्हें राज्य के काम के लिये उपयोग किया जाना चाहिये। तौभी इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि बढ़ती कलीसिया को शुरु करने में ''इथोस'' सुरक्षित रहे। बाहरी प्रभाव या एक नये अगुवे का पूर्व–निर्धारित परिचय विद्यमान आंदोलन को चोखा करने या इसे पटरी से उतारने; दोनों के लिये गुण रखता है। यह नहीं मान लेना चाहिये कि ज्ञान – आज्ञाकारिता की बराबरी करता है।

क्या अध्ययन करें – पौलुस का नेतृत्व उत्पादन

पौलुस के उदाहरण पर गौर करें। जब हम उसके नेटवर्क के अन्तर्गत अगुवों की सूची पर विचार करते हैं, तो किन लोगों को उसने विश्वास के लिये जीता था?

किन लोगों का उसने प्रभाविता के लिये पता लगाया और एकजुट किया था?

ऐसा जान पड़ता है कि ये दोनों ही उत्तर हैं। ऐसा निचोड़ लाया जा सकता है कि तीमुथियुस, लुका, और अन्य अगुवे थे, जिनका विश्वास पौलुस के सुसमाचार प्रचारीय प्रयासों से जीता गया था। अन्य, प्रिस्किला और अक्विला, अपुल्लोस, और मरकुस यूहन्ना जैसे विश्वासी पौलुस से मिलने से पूर्व ही विश्वासी थे। इस कारण से एक परामर्शदाता हमेशा से गुणकारी तीमुथियुस की खोज में रहता है।

कुंजी प्रश्न #3 – कैसे हम अपने तीमुथी लोगों को परामर्श देते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर रिश्ता और प्रक्रिया की आवश्यकता से बंधा होता है। सीखने का कार्य एक कक्ष में हो सकता है, परन्तु निगरानी में रखते हुए सीखाना/परामर्श देना कभी नहीं हो सकता। ठीक ऐसा ही यीशु ने किया था। हमारे अंदर भी तीमुथियुस के साथ चलने की चाहत होनी चाहिये। यह खेतों के खुलासा से है, जो परामर्श के लिये जगह सृजन करता है। प्रणालियों की जो उपयोगिता सीखायी गयी, लक्ष्य निर्धारित किये गये, और जो वास्तविक जीवन की समस्याओं का सामना की गयी; यही वे हैं, जिसे क्षेत्र में अच्छी रीति से सीखायी जाती है। समय की उच्च–स्तरीय उपयोगिता ही प्रभावशाली परामर्श/निगरानी की कुंजी है।

जो अगुवे सम्पर्क में आये, उन्हें भी इन्हीं तीन कुंजी क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए सीखाना चाहिये, अर्थात् पासबानी देखभाल, और जवाबदेही, नये पाठ और अभ्यास।[47]

पासबानी देख–रेख/जिम्मेदारी – इसका सरल अर्थ है कार्यों और गतिविधियों के चक्र की उम्मीद की जाती है। जिन लोगों पर एक परामर्शदाता अपना समय और सबकुछ लगाते हैं, उन लोगों में आगे बढ़ने की इच्छा होनी चाहिये। पौलुस–तीमुथियुस संबंध में ऐसी उम्मीदों का माहौल होना जरुरी है। ऐसी बातें पौलुस की पत्रियों भर में देखा जा सकता है, जहॉ वह अगुवों को खास निर्देश देता है। वह अगुवों को बाहर भेजा है, और फिर वापस आने का बुलावा देता है, उन्हें ,खास भार सौंपता है, और समय–समय पर उन्हें उनके कार्यों में असफल होने पर फटकार भी लगाता है।[48]

---

[47]कई लोगों ने ''जॉन चिन'' की शिक्षाओं से 1/3, 1/3, 1/3 नमूने को जान लिया है। इसे प्रायः T4T कहा जाता है।

[48] ऐसे महत्वपूर्ण बिषय की सम्पूर्ण भाग इसमें समर्पित की गयी है। और अधिक विस्तार के लिये देखें – जवाबदेही, जवाबदेही का महत्व और इसे लागू करना।

नये पाठ – कभी भी तीमुथियुस से न मिलें यदि उन्हें देने के लिये कुछ न हों। हर मिलन/संगति में एक नयी जिम्मेदारी या कार्य ऐसी रचना के साथ जोड़ा जाना चाहिये, जिससे वे बढ़ सके। इसमें बाईबलीय आयाम, दुसरों के साथ संबंध, क्षेत्रों में अनुभव और आत्मिक समर्पण व उन्नति होना चाहिये।[49] याद रखें, हम जो पाठ प्रस्तुत करते हैं, उससे हम एक साथ मिलकर एक अच्छी खोज निकाल सकते हैं। जैसे कि वचन तीमुथियुस से बात करती है, आत्म–अनुसंधान एक उत्तम दृश्य बन जाता है।

अभ्यास – क्षमता का कोई महत्व नहीं है, जहॉ आत्म–विश्वास की कमी है। क्षेत्र की सेटिंग में पुनरुत्पादन सुनिश्चित करने के लिये उन सब बातों का अभ्यास किया जाना चाहिये, जो पढ़ाया गया है। मसीह एक विशेष संरक्षक था, उसने अपने शिष्यों से जो अपेक्षा की, उसे पहले प्रस्तुत कर दिया था। प्रभु यीशु अपने चेलों से इन बातों के पालन किये जाने की उम्मीद रखते थे, और उसके स्वर्गारोहण के बाद चेलों ने इसका पालन किया था।[50] कभी–कभी यीशु अपने शिष्यों को खास पाठों को उपयोग करने के लिये भेजते थे, जिसे वह दूर से देखा करता था। अन्त मे, प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों पर पूर्ण भरोसे के साथ जिम्मेवारी छोड़ दिया, कि उसने जो आदेश दिया है, वे उसके लिये नेतृत्व का भार उठायेंगे।[51]

अन्त–दर्शन – शिष्यपन

इससे क्या होने जा रहा है?

एक बार फिर मान लें कि ''X'' जन समूदाय हैं जिनकी आबादी 10 लाख हैं। मन में परमेश्वर के बताये गये इच्छा (2 पतरस 3:9), कि कोई भी नाश न हो, को याद रखते हुए अवश्य ही यह प्रश्न पुछें:

कितने अगुवों की जरुरत पड़ेगी?

जैसे कि ''X'' के बीच में कलीसिया स्थापित की गयी है, हम और अधिक अगुवों की निरंतर जरुरतों का सामना करते हैं। कार्य के आकार का निर्धारण किये जाने से कलीसिया स्थापक को उस लक्ष्य को निर्धारित करने में सहायता मिलता है, जो परमेश्वर का है, और इससे परमेश्वर की इच्छा पूरी होने में सक्षम बनाता है।

इफिसियों 4:11–12 हमें बताता है कि परमेश्वर हरेक कलीसिया में अगुवा देता है। पांच प्रकार के अगुवों के बारे में बताया गया है; प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पासबान और शिक्षक। इन अगुवों की पहचान और भरपूरी करना हमारा काम है। अगुवों की संख्या का निर्धारण करना जरुरी है, परमेश्वर को उसके वचन के अनुसार लें। हम प्रति कलीसिया के लिये पांच अगुवों की योजना बनायेंगे।

यदि एक कलीसिया में पांच अगुवों की जरुरत है,

और 20,000 कलीसिया स्थापन किया जाना है,

तो ''X'' के 100 प्रतिशत तक पहॅूचने के लिये,

कितने अगुवों की जरुरत पड़ेगी?

---

[49] डॉ. मेल्कॉम वेब्बर ने इन चार आयामों को वयस्को की शिक्षा का एक ढांचागत कार्य कहा है। वे हैं: निर्देशन, संबंध, अनुभव और आत्मिकता से संबंधित हैं। See: Webber, Malcom. The Spirit Built Leadership Series, Strategic Press, Elkart, IN. 2007.

[50] उदाहरण के तौर पर बपतिस्मा को लें। यीशु ने अपने छः माह की सेवकाई के दौरान केवल अपने शिष्यों को ही बपतिस्मा दिया था (देखें यूहन्ना 4:1–2)।

51 बहुत से लोगों ने कई प्रकार के वृत्तांतों के अन्तर्गत परमेश्वर की सलाह ग्रहण करने की मांग की है। इसके कुछ उदाहरण हैः यीशु ने तैयार किया, सहायता किया, निगरानी किया, और फिर छोड़ दिया या मुक्त कर दिया। रणनीतिक समन्वयक ''तीमुथी समूहों'' को निर्देश देने के लिये ऐसे उपकरणों की सहायता लेने के लिये स्वतंत्र हैं।

20,000 कलीसियाओं में 5 अगुवे प्रति कलीसिया

= 1,00,000 अगुवों को निगरानी में सीखाने की जरुरत होगी

''X'' जन समूदाय के 10 प्रतिशत तक पहूँचने के लिये

10,000 अगुवों की जरुरत होगी।

लक्ष्य – अगुवों की सांख्यात्मक वृद्धि करना

अगुवों को पांच स्तर में बढ़ाना

अगुवों को सीखाने का काम आज शुरु किया जा सकता है। उनके साथ शुरु करें जिन्हें परमेश्वर ने आपके साथ रखा है, ऐसा एकल कलीसिया या कलीसियाओं के संगठन में हो। उन्हें सब बातों से बढ़कर लक्ष्य द्वारा निर्देशनानुसार आगे बढ़ने की चुनौती दें, जैसे कि नीचे बताया गया हैः

1. एक नेटवर्क के अन्तर्गत विद्यमान अगुवों का मूल्यांकन करें, जो वे अगले 3 माह में उनके अगले कदम का निर्धारण करेंगे।
2. अपने नेटवर्क में #..... नये गुणी अगुवों को अपने चार खेतों में प्रशिक्षण देते हुए और बोने के कार्य की जिम्मेवारी देते हुए लेकर आयें।
3. व्यक्तिगत तौर पर #..... नये गुणी अगुवों संसाधन और समय लगायें, कि वह मेरे नेटवर्क में अन्य लोगों को सीखाने के लिये नमूना बन सके।

विशिष्ट कार्रवाही

अपने नेटवर्क में पाये जाने वाले गुणी अगुवों की सूची तैयार करें। उनकी वर्तमान अगुवापन स्तर का मूल्यांकन करने के लिये ''पांच स्तरों'' का उपयोग करें, और उन्हें आगे बढ़ाने के लिये खास योजना बनायें। प्रगति करने की पारस्परिक जवाबदेही हो, इसलिये बराबरी के स्तर के अगुवों को एक समूह में रखें।

नेटवर्क के प्रधान से मिलें और उन्हें अगुवों की बढ़ोतरी के लिये दर्शन के बारे में बताने को कहें। यदि परमेश्वर द्वार खोलता है, तो एक बोने की एक सामान्य प्रशिक्षण दें, और जो विश्वासयोग्य हैं, उन पर अपने दर्शन का भार सौंपे।

जब हम ''पांच भागों'' को पूरा कर लेते हैं, तो अपने सेवकाई में और अधिक गहराई से मूल्यांकन करने की सोचें। निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग करते हुए, हर एक खेत के मध्य से होकर प्रार्थना करने के लिये समय लें, ताकि निश्चय हो कि परमेश्वर ने आपके सेवकाई में दक्ष मानवीय संसाधनों को दिया है।

प्रगति मूल्यांकन की मांग करती है। वो क्या हैं जिन्हें आपको शुरु करने की जरुरत है? हो सकता है कि एक दूसरा प्रश्न संदर्भ में हो, क्या कोई ऐसी बात/कार्य हैं, जिन पर आपको रोक लगाने की जरुरत है, ताकि (कार्य को) और अधिक उत्तमता के साथ किया जा सके?

जय पाने की रुकावटें

जैसे कि पहले कहा गया है, समय पर कलीसिया स्थापन में गुणवत्ता लोगों तक पहूँचने का मतलब उन नये कार्य–कलापों को लेना है, जिसे हमें करना चाहिये, और अन्य समय में उन बातों को जाने देना है जो कलीसिया स्थापन की प्रक्रिया में रुकावट बनती है। पौलुस ने फिलिप्पी में रात–दिन ठीक ही प्रार्थना किया था कि ''. . .तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो'' (फिलिप्पियों 1:10)। अपने अभ्यास में अपना उत्तम प्रयास देना, कई बार हमारी संस्कृतियों में गुप्त बाधायें प्रकट होती है, और ऐसा प्रायः हमारी कलीसियाई परम्पराओं में भी होता है।

प्रभावशाली और दक्ष कलीसिया स्थापक हमेशा मूल्यांकन करेगा, ताकि उसका प्रयास केन्द्रित व धारदार हो सके। फिलिप्पियों की पत्री अध्याय 1 हमें इन दो प्रश्नों की ओर अग्रसर करता है। वे इस प्रक्रिया में बहुमूल्य हैं।

1. वह क्या सबसे अच्छा होगा जिसे मुझे शुरु करने की जरुरत है?

2. सबसे अच्छा करने के लिये मुझे किस काम/चीज को रोकना होगा?

रुकावट संख्या 1 – बपतिस्मा के अभ्यास को सीमित करना

इन परामर्श दी गयी रुकावटों में जो प्रथम है, वह बपतिस्मा का है। नये नियम के यीशु के चेलों के लिये बपतिस्मा आज्ञाकारिता की प्रक्रिया में प्रथम कदम था। रोमियों 6:1–11 में बपतिस्मा मसीह की मृत्यु, दफन, और पुनरुत्थान की समानता है। इस मायने में, बपतिस्मा उन लोगों के लिये प्राथमिक कदम है जो विजयी और पुनरुत्थित उद्धारकर्त्ता की गवाही के लिये खड़े होते हैं। बपतिस्मा की विधि की इस चिन्ह में अ–प्रश्नीय आज्ञाकारिता का ''डी.एन.ए'' दृढ़ होता है। यीशु की दी हुई आज्ञा को हमने प्राप्त किया है, और बपतिस्मा देते हैं। मत्ती 28 में, महान आदेश की मांग है कि मसीह के अनुयायी लोग चेले बनाये। फिर चेला बनाने का तरीका भी दिया गया। उन्हें बपतिस्मा दो, और उन्हें आज्ञा मानना सीखाओ। मैं यही सलाह दुंगा कि बपतिस्मा की आज्ञाकारिता के कार्य ही में आज्ञाकारिता सीखाने की पूर्वापेक्षा है। तौभी आज कई खेतों में जहॉ पारम्परिक कलीसियाएं विद्यमान हैं, बपतिस्मा का अभ्यास एक कलह का बिन्दू बन चुका है।

पवित्रशास्त्र के आधार पर बपतिस्मा के दो मुख्य रुकावटें हैं:

1). कलीसियाएं समर्पण को मापने के लिये बपतिस्मा देने में देर करती है।

जब हम बपतिस्मा देने में देरी को ठीक मान लेते हैं, तो हम किसी तरह इस पर हमदर्दी जता सकते हैं। कई बार बपतिस्मा लेने वाले उम्मीदवार गलत या झुठी धारणा के साथ कलीसिया में आते हैं। शायद वह ''नया विश्वासी'' समाजिक दबाव या आर्थिक कठिनाई जैसी समस्या से छुटकारा पाना चाहता हो। ऐसे मामलों में कई बार बपतिस्मा प्राप्त शिष्य, गैर–उन्नत परिस्थितियों के मोह–भंग में पड़ जाते हैं, और वापस अपने स्थानीय धार्मिक प्रथाओं में लौट जाते हैं। शायद एक नया विश्वासी अनेक–ईश्वरवादी पृष्टभूमि से आते हैं, जिससे वे मसीह के मूल प्रभुत्व को समझ नहीं पाते हैं। अन्य समूच्यों में, जहॉ सताव अपना कार्य करता है, यह सावधानी रखा जाता है कि (वह स्थानीय या राष्ट्रीय कानून जिसमें बपतिस्मा देने की मनाही है) बपतिस्मा से नया विश्वासी किसी फंदे में न फंस जाये। जबकि ये परिस्थितियॉ समझने योग्य हैं, और इसमें अनुग्रह की जरुरत होती है, इसलिये उनका उत्तर वचन के उदाहरणों से दिया जाना चाहिये।

यह निश्चित है कि यीशु के चेलों की प्रथम पीढ़ी पूरे रोमी साम्राज्य में फैल गये थे, जहॉ की परिवेश मूतिपुजक थी। हर कोई तो नहीं, तौभी फिलिप्पी, एथेन्स, कुरिन्थियुस, और फिलिप्पी में जिन्होंने बपतिस्मा लिया था, वे मसीह को जानने से पहले मूर्तिपुजक ही थे। आगे बाईबल हनन्याह का भय लिखता है, जब उसने शाऊल का बपतिस्मा देखा था। यह भय स्वाभाविक

था, क्योंकि हनन्याह निश्चित रुप से एक फंदे का शिकार था। उसे एक सतानेवाले को बपतिस्मा देने को कहा गया था (प्रेरितों के काम 9:13–14)। तौभी इस भय पर जय पाया गया, क्योंकि यीशु के स्पष्ट निर्देश ने उसे आगे बढ़ने को कहा था।

इरादा कुछ भी क्यों न हो, बपतिस्मा देने में देर करने का सबसे सामान्य कारण पूर्व–निर्धारित समझ की आवश्यकता है, इससे पहले कि बपतिस्मा दिया जाये। एक बार जब यह परामर्श स्वीकार कर लिया जाता है, तो जो सवाल पुछा जाना चाहिये, वह हैः कि इससे क्या समझना चाहिये? जैसे कि हम नये नियम में बपतिस्मा के पाठों को देखते हैं, वे निश्चित तौर पर थोड़े सरल हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस समझ की जरुरत है, उसे उद्धार के बिन्दु और नदी की ओर चलने के बीच ढॉपा जा सकता है, क्योंकि बपतिस्मा सर्व–सम्मति से तुरन्त दी जाती थी। कलीसिया स्थापक यह निश्चित कर ले कि यीशु के अनुग्रह में और कुछ भी जोड़ा नहीं जाना चाहिये, जो कलीसियाई परिवार में ग्रहण किये जाने की शर्त पर हो। इस प्रकार बपतिस्मा सच्चा पश्चाताप का आश्वासन देता है, क्योंकि उम्मीदवार से उम्मीद की जाती है कि वह अपना पहचान मसीह के साथ बनाये।

क्यों यह मायने रखता है?

दुखद बात है कि निर्णय में देरी के के कई मामले कलीसियाई सदस्यता के नियंत्रण की व्यक्तिगत इच्छा से जुड़ी होती है। यीशु के अनुग्रह से ऊपर व परे बाईबल सीखने की और बालकों–सा विश्वास व आज्ञाकारिता की मांग थोप दी जाती है। बपतिस्मा में देरी को उद्धार की अनिश्चितता से भी जोड़ दिया जाता है। इसकी विपरीत दशा को भी लागू किया जाता है। बपतिस्मा लेने की अनुमति यही बताता है कि कलीसिया को निश्चय हो चुका है कि उद्धार निश्चित है। इस तरह, नये विश्वासी की गवाही की जगह विश्वासियों के बारे में कलीसिया की गवाही जगह ले लेता है। यह प्रचलन नये विश्वासियों की याजकपद को चुनौती देती है। यदि बपतिस्मा देर करने का मामला है, तो क्यों प्रेम करने या देने की आज्ञाओं का पालन किया जाये? क्यों प्रार्थना करें, पश्चाताप करें, या शिष्य बनायें? यह एक खतरनाक प्रचलन है, जिससे अवश्य ही बचना चाहिये।

निम्नलिखित अध्ययन पर ध्यान करें।

आत्म–अनुसंधान बाईबल अध्ययन

निम्नलिखित वचन प्रेरितों के काम से लिये गये हैं, इसे पढ़ें और इन प्रश्नों के उत्तर दें।

प्रेरितों के काम 2:38,41; 8:36–38; 9:17–18; 16:31–33; 19:5

प्रश्न इस प्रकार हैंः

1). किन्हें बपतिस्मा दिया गया था?

2). उन्हें कब बपतिस्मा दिया गया था?

3). किसने उन्हें बपतिस्मा दिया था?

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम हर प्रकार के लोगों को बपतिस्मा लेते देखते हैं। हत्यारों और मूर्तिपुजकों की जगह एक थे। एक दिन वे सभी अनैतिक थे, और दूसरे दिन उन्होंने बपतिस्मा लिया था। सुधार के लिये कोई समय नहीं था, बल्कि बपतिस्मा से उन्होंने एक नया जीवन शुरु किये थे। चुंकि पवित्रशास्त्र में तुरन्त बपतिस्मा की मांग नहीं की गयी है, इसलिये और कोई उदाहरण नहीं पाया जाता है। प्रथम संभावित अवसर पर बपतिस्मा देने का कार्य सम्पन्न हुआ था, तौभी पवित्रशास्त्र हमें इसके लिये सर्व–सम्मति से मिशाल के लिये अनुमति नहीं देता है। कलीसिया स्थापक को यह मान लेना चाहिये कि इस तरह के उदाहरण के लिये विशिष्ट कारण थे।

आईये, दूसरी मुख्य रुकावट पर ध्यान दें:

2). स्थानीय क्षेत्रों में किसी को भी बपतिस्मा देने का अधिकार नहीं है।

इस मामले में एक कतार शुरु होती है। जो मसीह यीशु के संदेश को ग्रहण कर लेते हैं और बाईबलीय बपतिस्मा की इच्छा रखते हैं, उनमें पाया गया है कि कथित अधिकार की कमी के कारण ऐसे अवसर उपलब्ध नहीं होते हैं। कलीसिया स्थापक के लिये, यह मुद्दा इस प्रश्न की मांग करता है कि कहां से इस प्रकार के अधिकार की उत्पत्ति होती है? कलीसिया के लोगों को निश्चित तौर पर बपतिस्मा दिया जाना चाहिये; यह एक कलीसियाई विधि है जिसे मसीह के देह के अन्तर्गत अभ्यास किया जाना चाहिये। ठीक उसी समय, यीशु ने महान आदेश के महत्वपूर्ण भाग के रुप में बपतिस्मा दिया था, जो विश्वासियों के लिये लागू होता है।

नये नियम में आपके लिये अधिकार के बारे में जो भी अनुवाद दिया गया है, इस रुकावट का श्रोत स्थानीय कलीसिया है। या तो वर्तमान कलीसिया ने मसीह प्रदत्त अधिकार को स्वीकार करने में विफल हुआ है, या तो पहले से ही स्थित कलीसिया ने इन स्थापित कलीसिया के ऊपर अपना अधिकार जमा लिया है, जिससे उन पर अपना नियंत्रण रख सके। कभी–कभी अधिकार को रोके रखना एक शुद्ध विचार के कारण होता है। कई लोग मानते हैं कि वे जिस सिद्धांत को मानते हैं उसे बनाये रखने के लिये खतरा है। कलीसिया स्थापकों को उनकी इच्छा के मुताबिक बपतिस्मा देने में ढिलाई देना एक ऐसा भय है, जैसे कि वे ऐसे बढ़ जायेंगे जो बाद में नियंत्रण से बाहर हो जायेंगे। इस मामले में, यीशु की प्रतिष्ठा का भय एक शुद्ध मकसद स्थापित कर सकता है, लेकिन जरुरी नहीं कि यह स्वस्थ हो। परमेश्वर ने हमें अपना वचन सिद्धांत के बचाव के रुप में दिया है। उसकी प्रतिष्ठा पवित्रशास्त्र के ठोस लेख के भीतर सुरक्षित है, संसार से संदेश की सुरक्षा कभी भी महान आदेश नहीं रहा है, बल्कि इसकी परिवर्तनकारी शक्ति को मुक्त करना हमारा काम है।

कुछ चुनिंदा लोगों को बपतिस्मा के प्रदर्शन को रोकना या प्रतिबंधित करने का मकसद जो भी हो, हमें फिर भी शास्त्र के उदाहरणों के विरुद्ध हमारे विचारों को फिर से तौलना चाहिये। निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें।

आत्म–अनुसंधान बाईबल अध्ययन

निम्नलिखित पदों को पढ़ें और दिये गये प्रश्न का उत्तर दें।

यूहन्ना 4:1–2; प्रेरितों के काम 10:48; 1 कुरिन्थियों 1:14–17

यीशु ने इसे ध्यान से देखा, पतरस ने दूसरों को बपतिस्मा देने की मांग की, और पौलुस यहां तक कि इस मुद्दे को स्मरण भी नहीं रख सका। यीशु ने अधिकार जारी किया! पतरस ने अधिकार जारी किया! पौलुस ने अधिकार जारी किया! आपको क्या करना चाहिये?

यह क्यों मायने रखता है?

नये विश्वासियों के जीवन में बपतिस्मा आज्ञाकारिता का पहला कार्य है। यह एक मिशाल कायम करता है। इससे आज्ञाकारिता का एक आदत शुरु होता है, जिसे विश्वासियों के जीवन पर राज्य करना चाहिये। यह आदत तरस जाता है जब हम अधिकार को थाम लेते हैं। नये विश्वासी की बढ़ोतरी के प्रथम चिन्ह का गला घोंट दिया जाता है।

इसका विपरीत भी सही है। अधिकार जारी करने और बपतिस्मादाताओं की बढ़ोतरी करने से बपतिस्मा प्राप्त लोगों की संख्या में बढ़ोतरी होती जायेगी। शिष्यों को एक नयी पहचान बनाते हुए बपतिस्मा देने के कार्य का संचालन का भार सौंपा गया था। उन्हें किसी भी प्रकार के बंधन से मुक्त करने के साथ–साथ सुसमाचार के भी बंधन को मुक्त करता है। इस प्रकार से अधिकार जारी करने से मजदूरों के नेटवर्क को स्वतंत्र करता है ताकि वे अपनी मेहनत का फल प्राप्त कर सके। सैनिकों को आदेश व अधिकार दें ताकि वे उसे आगे बढ़ाये।

रुकावट संख्या 2 – व्यवसायिक सेवकाई

यहॉ कठिनाई ईंजन है जो प्रायः कलीसिया स्थापन के खेतों में ''व्यवसायिवाद'' चलाता है। एक बाहरी अनुदान से एक अतिरिक्त बाईबलीय याजकपद की स्थापना की जाती है। आप बाहरी सहायता प्राप्त पासबानों से कलीसिया को बढ़ा नहीं सकेंगे।[52]

इसके लिये कम से कम दो कारण विद्यमान हैं:

1. जैसे कि कार्य बढ़ता जाता है, तो पासबान भी अपनी आय को मजबुत होते देखता है। नये कार्यों के नये फलों को नयी कलीसिया के रुप में शुरुआत् करने से उसके और उसके परिवार की जीविका के लिये खतरा बन जाता है। इसलिये वह इस बात के लिये प्रेरित होगा कि नये भेड़ों को अपनी भेड़शाला में रखे।

2. कलीसिया के पुनरुत्पादन या आंदोलन की बढ़ोतरी हमेशा रुपये की आय से बंधी होगी। जबकि हम इस प्रतिज्ञा का दावा करते हैं कि ''परमेश्वर पूरा करेगा'', इसे आरम्भ ही से लागू करने से हमारी जरुरतें पूरी हो सकेंगी। भारत, बंगलादेश, और अन्य आबादी वाले देशों में उन तक पहुंचने के लिये कभी भी पर्याप्त सवेतन पासबान नहीं होंगे। जब बाहरी सेवकों पर निर्भरता स्वीकारा जाता है, तो इससे तेज गति से बढ़ोतरी बाधित होती है।

ठीक ऐसा ही तर्काधार भी कई कलीसिया स्थापन प्रशिक्षण के कोटा प्रणाली को एक खतरनाक अभ्यास बना देती है। कलीसिया स्थापन और पासबानीय सेवकाई से जुड़े प्रशिक्षण पाने के बाद, प्रशिक्षुओं को नये कार्य की शुरुआत के लिये मुक्त कर दिया जाता है। पूर्व–निर्धारित समय परिसीमा के अन्दर कलीसिया स्थापक से तय संख्या में फल उत्पन्न करने की उम्मीद की जाती है। यही कोटा प्रणाली है। जैसे कि तारीख आता है, जिसके अन्तर्गत कलीसिया स्थापक के द्वारा लक्ष्य हासिल कर लिया जाना चाहिये, उसे एक कठिन परिस्थिति में डाल दिया जाता है। अगले साल के लिये उसकी जीविका को ध्यान में रखते हुए उसका उत्पादन और हताशा, प्रायः उसकी ठोस सेवकाई में भ्रम उत्पन्न कर देता है। कोटा प्रणाली पुनरुत्पादन की गुणवत्ता को भी तबाह कर देता है, जैसे कि कलीसिया स्थापक, जो कि कलीसियाओं की नयी पीढ़ियों को मुक्त करता है, उसे या तो आर्थिक सहायता खोने का खतरा रहता है, या फिर आर्थिक सहायता के लिये एक उमदा प्रतिस्पर्धा में शामिल हो जाता है।

अविरोध और पुनरुत्पादनीय कलीसिया स्थापन की गुणवत्ता को बनाये रखने में स्वाधीन स्व–सहाय आंदोलन अच्छा काम करता है। बाईबलीय आधार पर कलीसिया कार्य करती है। पौलुस ने कलीसिया स्थापकों को उनके क्षेत्रों में कोई रकम नहीं दिया था। बल्कि वे लोग पवित्र आत्मा के द्वारा अपना सब कुछ कटनी में लगा देने के लिये विवश किये गये थे।

रुकावट संख्या 3 – आर्थिक कठिनाई

आपने सोचा नहीं होगा कि ये कठिनाईयां प्रायः अपनी खुद की परम्पराओं से सृजन होती है। परमेश्वर ने अपने प्रतिज्ञा के अनुसार कलीसिया को सब कुछ प्रदान किया है। कठिनाई इसलिये उठती है क्योंकि कलीसिया परमेश्वर के प्रावधान से संतुष्ट होने से तिरस्कार कर देती है। बाईबल के लेखे में इस प्रकार की कठिनाई नहीं है। बजाय इसके, जो अति दरिद्र थे, उन्हें उदार दान देकर सराहा गया था (देखें 2 कुरिन्थियों 8:2)।

वो क्या हैं जिसके कारण इस आधुनिक युग में कठिनाई आती है?

इस अध्ययन पर ध्यान दें:

---

[52] See Zdero, Rad. 2004. The Global House Church Movement. William Carey Library, Pasadena California, for verification of New Testament financial support systems – p. 42-44.

निम्नलिखित पदों को पढ़ें और दिये गये प्रश्न का उत्तर दें।

प्रेरितों के काम 2:46; 5:42; 16:40; 17:5–7; 18:7; 19:9; 20:20; फिलेमोन 1:1–2; रोमियों 16:1–5; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15

प्रश्न – कलीसिया कहॉ इकट्ठा हुआ करती थी?

बपतिस्मा के हमारे अध्ययन के समान, बाईबल की मिसाल एकमत है। नये नियम की कलीसिया की सभा के लिये परमेश्वर के द्वारा प्रदान किये गये घरों का इस्तेमाल किया था।[53] घरों में होनेवाली चर्च की घटना बिल्कुल ही कोई घटना नहीं है। बल्कि यह बाईबल मॉडल पर एक वापसी है।

उन चर्चों को जिसे परमेश्वर के दिये घरों का उपयोग करने के लिये चुनते हैं, वे चर्च दसवांश और प्रभु भोज की विधि का पालन करने के लिये स्वतंत्र है। दसवांश स्थानीय समूदाय में एक छाप छोड़ेगा, और कलीसिया को सही रीति से चलने में सक्षम करेगा। इससे जरुरतमंद विश्वासियों की जरुरतों को पूरा करने और विश्वासयोग्य लोगों को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा।

घरों से गर्मजोशी से स्वागत करने का माहौल पैदा होगा। जो अन्य धर्मों से मसीह की खोज में आते हैं, वे ''मसीहियों के मंदिर'' में प्रवेश नहीं करेंगे, लेकिन वे विश्वासियों के घरों में आराम महसुस करेंगे।

रुकावट संख्या 4 – पासबानों के लिये अतिरिक्त बाईबलीय योग्यता

सेमिनरी ग्रेड बनाम सामान्य लोग

सम्पूर्ण बाईबल में परमेश्वर ने अपनी इच्छा को पूरी करने के लिये सामान्य लोगों को ही चुना है। शायद मूसा इस्राएल के अगुवों में सबसे बड़ा था। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ आमने–सामने समय बिताता था, और उसे इस्राएलियों को बन्धुवाई से छुड़ाने के लिये उपयोग किया गया था। दाऊद भी, मूसा की तरह ही परमेश्वर के द्वारा उपयोग किया गया था, और उसने परमेश्वर के चुने हुए लोगों का नेतृत्व किया था। वह इस्राएल का सबसे बड़ा राजा था, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार का एक जन। इन दोनों के बीच एक अचम्भित करने वाली जोड़, जो उनके कार्य से अलग था – वह उनका शुरुआत था।

वे कहॉ थे जब परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था?

मूसा और दाऊद दोनों ही भेड़ों की चरवाही के कार्य से परमेश्वर के द्वारा तैयार किये गये थे! यद्यपि मूसा का पालन–पोषण उचित रीति से हुआ था, तौभी वह नेतृत्व के लिये तैयार नहीं था, जब तक उसने चालीस वर्षों तक शुन्य के पीछे न बिताया था।

उसी रीति से दाऊद भी, जो अपने भाईयों में सबसे छोटा था, एक अप्रशंसनीय चरवाहा बालक था। तौभी इस बालक ने कहीं भी उस विशालकाय गोलियात को उखाड़ फेंकने के संबंध में परमेश्वर की सामर्थ होने का दावा किया, जिसने परमेश्वर और

[53] इस नियम की एक उम्मीद प्रेरितों के काम 19:9 है। यहॉ कलीसिया एक स्कूल अर्थात् टाइरान्नस के लेक्चर हॉल में इकट्ठा होती थी।

उसकी सेना का मजाक उड़ाया था। परमेश्वर ने अपनी महानता के लिये अस्पष्ट और सरल जीवन शैली का उपयोग किया था। नया नियम भी ठीक ऐसी ही प्रवृति की गवाही देती है। यीशु आराधनालयों में जाकर सबसे अधिक सीखे हुए लोगों को अपना शिष्य होने के लिये चुन सकता था। तौभी यह उसने इसके लिये जितना परिश्रम किया, वह सरल था। यीशु के शिष्य मछुवारे थे, जिन्हें अशुद्ध माना जाता था, और उन्हें धार्मिक रीतियों पर बाहरी माना जाता था। अन्य लोग चुंगी लेने वाले थे, जिनसे लोग घृणा करते थे, तौभी वे परमेश्वर के अनुग्रह से बचाये गये थे। वे इस संसार को उलट देने में सक्षम थे।

यीशु ने जिन्हें चुना था, उनके बारे में प्रेरितों के काम अध्याय 4 बड़ा व्योरा प्रदान करता है।

'' जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, ओर यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उन को पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं'' (पद 13)।

ये उनकी पृष्टभूमि नहीं थी जो उन्हें सेवकाई के काबिल बनायी। बल्कि यह उनकी प्रभु के पीछे चलने में भक्ति और आज्ञाकारिता थी।

आज अधिकांश विद्यमान चर्चों ने एक अन्कहे नियम को स्वीकार कर लिया है। पासबानों को शिक्षित होना चाहिये। चुंकि शिक्षा का होना किसी भी तरह से निराशाजनक बात नहीं हो सकता है, इसलिये हर एक को यह पुछना चाहियेः

कितनी शिक्षा की जरुरत है?

जबकि कुछ लोग डिग्री की बात करते हैं, तो अन्य साक्षरता की आवश्यकता पर भी सवाल करते हैं। यह बेतुका लग सकता है क्योंकि बाईबल तक पहुंच निश्चित रुप से एक योग्यता है। तौभी पहली सदी के किसी भी व्यक्ति के पास लगातार पहुंच नहीं थी। कुछ लोग पतरस की साक्षरता पर भी सवाल करेंगे। उसकी दूसरी पत्री में, प्रथम प पत्री से विपरीत सीलास के कलम से नहीं लिखा गया है, ग्रीक में एक मौलिक क्षमता दिखाता है। इससे यह सवाल उठता है, कि क्या कोई व्यक्ति जो पढ़ने में असमर्थ हो, वह पवित्रशास्त्र को समझ सकता है, और क्या वह उसका अर्थ लगा सकता है? यह मरने के लिये कोई पहाड़ी नहीं है, लेकिन अत्याधिक चर्चा में आम सहमति की चुनौती है।

क्या किसी पासबान को उसके काम पर प्रशिक्षण दिया जा सकता है?

इस प्रश्न का उत्तर सबसे निश्चित रुप से उस दर का निश्चित रुप से निर्धारित करेगा जिसमें पासबानों को तैयार किया जाता है, और नयी कलीसिया के शुरुआत् के लिये जारी किया जा सकता है। पौलुस की शिक्षा में इस बिंदु पर एक नजर डालना उचित है।

आत्म–अनुसंधान बाईबल अध्ययन

निम्नलिखित पदों को पढ़ें और उचित वर्ग के लिये एक–एक योग्यता नियुक्त करें।

1 तीमुथियुस 3:1–7

चरित्र	वरदान/कौशलता	शिक्षा

पौलुस द्वारा सूचीबद्ध में से एक या संभवतः दो में शिक्षा या कौशल के भीतर तर्क दिया जा सकता है, इसमें विशाल बहुमत चरित्र लक्षण हैं। यह परमेश्वर की चिंता का खुलासा करता है। चरित्र चर्च में नेतृत्व की प्राथमिक योग्यता है। कुछ भी इसे बदल नहीं सकता है। परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति के माध्यम से सीखे और सरल दोनों ही को उपलब्ध कराया है।

पासबान के कार्यालय के अतिरिक्त—बाईबल—संबंधी—आवश्यकताओं को लागू करना कलीसिया की बढ़ोतरी को बाधित करेगा, और हमारी परम्पराओं को इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिये।[54]

सफलता को परिभाषित करना

फिलिप्पियों 1:9

- ☞ कैसे हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिये जो रखा है, उसे हम अच्छी तरह से कर रहे हैं?
- ☞ परमेश्वर के राज्य में उत्तम क्या है?

शायद आपने पहले कभी भी इन प्रश्नों पर ध्यान नहीं दिया होगा। इन प्रश्नों में सबसे रुचिकर बात यह है कि उन्हें उत्तर देने के लिये नहीं पुछना चाहिये। हमारे पास न जानते हुए भी इन सबके उत्तर हैं। हमारे उत्तर सफलता के अन्कहे परिभाषा को परिभाषित करते हैं।

जिस पारामीटर से हम सफलता को परिभाषित करते हैं, वो हमारी सामूहिक सेवा संस्कृति को प्रगट करती है। इस बिन्दु के उदाहरणार्थ के लिये निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान किजिये।

कलीसियाई सफलता से संबंधित प्रश्न

एक सफल कलीसिया में कितने सदस्य होते हैं?

एक सफल कलीसिया को संभालने के लिये कितने सवेतन कर्मचारियों की जरुरत होगी?

एक सफल कलीसिया में लोगों को बैठाने की क्षमता कितनी होती है?

इन प्रश्नों का मकसद इस सत्य को प्रकट करना है कि हमारी परिभाषाएं प्रायः शामिल तत्वों को ध्यान दिये बिना ही तैयार हो जाती है। जैसे कि पहले कहा जा चुका है, और मैं आशा करता हूँ कि आप अभी देख सकते हैं, हमने यहॉ जो उत्तर दिया है वो हमारे पास होने वाली हर प्रकार की सेवकाई को संकेत करेगा। एक कलीसिया स्थापक जो एक कलीसिया को तब तक सफल नहीं मानता है, जब तक कि इसके सदस्य 100 या अधिक तक न पहूँचा हों, और वह अपनी प्रगति में और अधिक कलीसिया स्थापित नहीं करेगा। कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल एक ही कलीसिया स्थापना करने में अपने सेवकाई के जीवन को लगा देना सफलता नहीं है; परन्तु सामान्य भाव से इसका तात्पर्य यह है कि जिस लक्ष्य का हमने पूर्व – निर्धारण किया था, उसे कभी भी मूल्यांकन नहीं किया गया।

कलीसिया स्थापक इस पुस्तक को पढ़कर ऐसी रुकावटों से बचने में बड़ी सहायता प्राप्त कर सकेंगेः

1. Garrison, D. 2004. *Church Planting Movements*. Midlothian: WIGTake Resources, Bangalore.
2. Allen, R. 1946. *Missionary Methods: St. Paul's or Ours.* World Dominion Press, London. (Also published by Eerdmans, 1983).

अलग–अलग समयों में विभिन्न समूच्यों में इन प्रश्नों के उत्तर अलग–अलग हो सकते हैं।

आधुनिक दिनों की सफलता की अमेरिकी परिभाषा इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या का होना है। एक सफल सेवकाई की अनकही परिभाषा का निर्धारण चर्च के आकार से की जाती है, न कि किसी अन्य मामलों से। जबकि यह कई मामलों में सच नहीं है, यह सब जानबुझकर कलीसिया स्थापक की उम्मीदों और लक्ष्यों पर वनज डालता है। सफल आकार और गुंजाइश के प्रस्तावित मॉडल को प्राप्त करने के बिना, कलीसिया स्थापक के लिये कोई विकल्प नहीं छोड़ा जाता है, लेकिन इसे विफलता माना जा सकता है। कुछ अर्थों में यह एक दुष्चक्र है। केवल जो परिभाषा को पूरा करते हैं, उन्हें ही सफलता की हमारी समझ या शुद्धता के बारे में सवाल उठाने की अनुमति है। यह एक बड़ा खतरा उत्पन्न करता है। यह पश्चिमी चर्च के आलोचना का प्रयत्न नहीं है, बल्कि मेरा बिन्दु निम्नलिखित उदाहरण से व्यक्त किया जा सकता है।

एक युवा कलीसिया स्थापक पर विचार करें जिसमें वह अपनी सेवकाई में सबसे अच्छा करने की चाह रखता है। वह सैकड़ों कलीसिया स्थापन की पुस्तकों में से एक खरीदता है, जो पश्चिमी कलीसिया के ग्लोबल मसीही समूदाय के द्वारा दिया गया है। जैसे कि कई लोग करते हैं, इस पुस्तक मानता है कि बड़ा ही उत्तम है। बिना कहे, एक मानसिक चित्र उसके प्रयासों के अंतिम लक्ष्य के रुप में युवा कलीसिया स्थापक के दिमाग में स्थापित कर दिया जाता है। यह उप–जागरुकता प्रथम विश्वासी से लेकर उसके अन्तिम रणनीति के हर कदम का निर्धारण हल पर हाथ धरने से पहले कर लेता है।

इस परिदृश्य में समस्या यह हैः हमारे काल्पनिक कलीसिया स्थापक चीन से है। अब उसने जिस मॉडल को अनजाने में खिलाया है, उसे अपने सार्वजनिक और सहकारी प्रकृति के कारण उत्पीड़न के लिये एक निश्चित सड़क बना देता है।

या बहस के लिये विचार करें कि कलीसिया स्थापक जो भारत से है। इस सेटिंग में समस्या नये विश्वासियों की अत्याधिक गरीबी है। यदि पूरा नहीं, तो एक भाग ही सही; इस स्वीकार्य परिभाषा में कलीसिया स्थापक आरम्भ ही से या तो विफल हो जाता है क्योंकि पर्याप्त पैसों की उगाही नहीं की जा सकती है, अन्यथा वह सफलता हासिल करने के लिये बाहरी कोष पर निर्भर हो जाता है।

इसके अलावा, जो लोग इस मॉडल के लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं; वे उनके द्वारा स्वयं को तिरस्कार किये हुए पाते हैं, जो अपनी सेवकाई में चर्च बिल्डिंग और अन्य विदेशी ढांचा की पूर्व–धारणा किये हुए रहते हैं। ये अनेक उदाहरणों में से केवल दो हैं, जो हमारे अनुमानित परिभाषा और लक्ष्य के खतरे को प्रदर्शित करने के लिये पेश किया जा सकता है।

जबकि चर्च की प्रत्येक व्यक्ति की परिभाषा का मूल्यांकन किया जाना चाहिये, आईये, हमं पहले हमारी परिभाषा की जड़ की कल्पना पर विचार करें। मान लिजिए कि मैं आपको एक शहर में ले जाऊं जहॉ दो चर्च की शुरुआत् हुई है।

केवल बीते समय से दो चर्च चलाकर, और इसके द्वारा हासिल की गयी सम्पत्ति को देखकर किसी के लिये भी इनका न्याय करना स्वाभाविक हो जाता है। हमारे मन में हम एक को और अधिक सफल चर्च के रुप में परिभाषित करेंगे। आईये, हमारे फैसले के मानदंडों पर विचार करें। मनुष्य के लिये बड़ा और अधिक असाधारण इमारत पर विचार करना स्वाभाविक है जो कि सफलता है। ये मनुष्य की प्रकृति है। बड़ा अच्छा होता है। ऐसी संस्थाओं मे भाग लेने वाले हजारों लोग गलत कैसे हो सकते हैं?

कई मामलों में हम स्थिरता का भी महत्व देते है।, इस मामले में, पुराने मामले बेहतर होते हैं। ऐसी धारणा का कारण स्पष्ट है। एक सिद्ध मार्ग का लेखा जो कई सालों से स्थापित किया गया है, इस विश्वास को बढ़ावा देता है कि जो भी स्थापित किया गया है, वह जारी रहेगा। यह केवल चर्चों से अधिक बातों पर लागू होता है। अपने निवेश के लिये एक बैंक को चुनने की कल्पना करें। आप अपने पैसे को कहॉ सुरक्षित पायेंगे? स्थिरता की ओर एक गड़बड़ी एक स्वाभाविक मानव प्रवृति है।

समस्या पर विचार करें। अगर मैं हिंदू से पूछता हूं कि दुनिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर कहॉ है? भारतीय हिंदू मुझे त्रृषिकेश या वाराणसी बतायेगा। जहां कहीं भी मुझे भेजा गया, अभिनिर्देश के लिये उप–विवेक लगभग निश्चित रुप से मंदिर के आकार और उम्र का तर्क दिया होगा। बड़ा और पुराना ही बेहतर है। अगर मैं एक मुस्लिम से किसी बड़े मस्जिद के बारे में पुछता हूँ, तो वह मुझे उसी कारण से मक्का की बात कहेगा। कैथलिक मुझसे ''वेटिकन'' की बात कहेंगे। बौद्ध शायद अपने

प्राचीन मठ के कारण ल्हासा को इंगित करेगा जो पीढ़ियसों से दलाई लामा के अधीन था। ऐसा दुनिया की सबसे बड़ी आबादी में हुआ करता है। यह मनुष्य का स्वभाव है। तौभी मुझे पता है कि पाप के प्रभाव से मेरी प्रकृति दोषपूर्ण है।

पूरी तरह से मूल्यांकन किये बिना हमारी स्वाभाविक धारणा को निगलना लापरवाही है। पवित्रशास्त्र हमें बार–बार ऐसे आत्म–निरिक्षण की ओर इशारा करता है। इसे ध्यान में रखते हुए, हम महत्वपूर्ण मूल्यांकन के बिना सेवकाई में सफलता की एक निर्धारित परिभाषा को स्वीकार करने के लिये क्यों तैयार हैं?

यीशु का उदाहरण – मरकुस अध्याय 1

मरकुस 1 में यीशु के नमूने पर ध्यान दें। यीशु अपने शिष्य पतरस के घर पहली बार प्रवेश करते हैं। पतरस की सास को चंगा करने के बाद, बाइबल कहती है कि कफरनहुम शहर से हर रोगियों और दूष्टात्मा से ग्रस्त लोगों को उसके द्वार पर लाया गया था, ताकि यीशु उन्हें चंगा करे। अगली सुबह जब अंधेरा ही था, मरकुस लिखता है कि यीशु उस घर से निकला और अपने पिता के साथ समय बिताने को चला गया। कुछ समय बाद चेले लोग यीशु को यह बताने के लिये यीशु की खोज करने लगे कि भीड़ द्वार पर इकट्ठी है। हर कोई यीशु की तलाश में था, जो रातों–रात एक लोकप्रिय व्यक्ति बन चुका था। हर कोई उसका समय चाहता था। हर कोई उसे देखना चाहता था। हर कोई उसे छुना चाहता था। किसी की परिभाषा से परे उसकी एक बड़ी सफलता थी। इससे यीशु ने अपने शिष्यों को एक अप्रत्याशित उत्तर दिया था।

चेलों ने यह कहते हुए यीशु को घर वापस चलने को कहा, ''सब लोग तुझे ढूंढ रहे हैं।'' उस ने उन से कहा, ''आओ; हम ओर कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मै इसी लिये निकला हूं।'' (पद 37–38)

यीशु सफलता की हमारी परिभाषा के बन्धन में नहीं था। यदि वह वहॉ रहता तो निश्चित तौर पर भीड़ बढ़ जाता, जितना कि उसके किये आश्चर्यकर्म के बारे में लोगों ने सुना था। तौभी उसकी न बुझनेवाली लालसा परमेश्वर की इच्छा थी। वह किसी भी भीड़ या प्रसिद्धि से प्रचलित नहीं होगा।

पतरस के उदाहरण को ध्यान दें। कलीसिया का इतिहास हमें बताता है कि पतरस के घर में विश्वासीगण रहते थे। वास्तव में, कलीसिया घर में स्थापित हुई थी, और चौथी शदी में भी वैसे ही घरों में ही इकट्ठा हुआ करती थी।[55]

कफरनहूम में पतरस के घर की नींव का पता लगा लिया गया है, और आज भी पर्यटक उस जगह के लिये आकर्षित होते हैं। इस घर के लिये जिस ढांचे का उपयोग तीन सौ वर्षों से किया जाता रहा था, वह केवल 15 फीट वर्गाकार का एक कमरा था।[56]

तीन सौ वर्षों से, इस कलीसिया ने कभी भी एक बड़ा इमारत की जरुरत नहीं समझा था। इसका रहस्य क्या था? कैसे सभी विश्वासी एक ही छोटे कमरे में समा जाते थे? क्या वे कभी भी नहीं बढ़े? क्या पतरस एक विफल व्यक्ति था?

इसका उत्तर स्पष्ट नजर आता है। जैसे ही नये विश्वासियों का प्रवेश हुआ, अन्य विश्वासियों को बाहर भेजा गया। पतरस का लक्ष्य अपना नहीं, परन्तु परमेश्वर का राज्य बनाना था।

जब कलीसिया नये विश्वासियों को जीत लेता है, तो इसके दो विकल्प होते हैं। इन विकल्पों में से प्रथम का उपयोग 95 प्रतिशत मामलों में उपयोग होता है।

---

[55] देखें Viola, Frank. 2003. *Pagan Christianity*, Present Testimony Ministries.

[56] Birkley, Del. 1995. *The House Church*, Herald Press, Scottsdale. P. 55 – Birkley claims homes of this era limited capacity for Pauline churches to between 20-35 people.

विकल्प # 1 – जब नये विश्वासियों को मसीह के लिये जीत लिया जाता है, तो जरुरी हो जाता है कि वे विद्यमान कलीसिया के समाविष्ट हो जाये।

यह उनके शिष्यपन के लिये हमारी चिंता को संतुष्ट करता है, और समझ में आता है क्योंकि यह हमें हमारे लक्ष्यों और सफलता की स्पष्ट परिभाषा की ओर ले जाता है। यदि चर्च फलदायी है, तो यह नीचे की तरह देखने वाली चक्र की एक श्रृंखला में बढ़ती है।

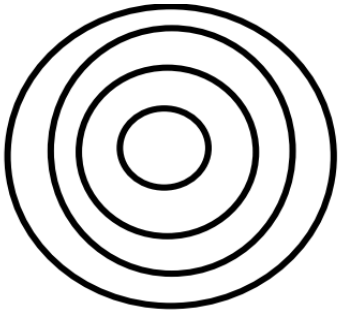

यह चर्च मसीह के लोगों को जीतने में सफल है। जैसे कि किसी भी चर्च को करना चाहिये, इसका ध्यान सुसमाचार पर केंद्रित रहता है, और पूरी तरह से संख्या में बढ़ने की अपेक्षा करता है। यह अच्छा है। ऐसे विकास के बिना एक चर्च को स्वस्थ नहीं कहा जा सकता है।

खतरे तब आते हैं जब किसी भी चर्च के आगे विस्तार सफलता का प्राथमिक माप होता है। ऐसे मामलों में यह देखा जाता है कि शिष्यत्व मुश्किल में आ जाता है, जब नेतृत्व का प्रतिशत कम हो जाता है। इसके अलावा एक और मुश्किल खड़ी होती है, जब नये विश्वासियों को उनके वरदानों की अभिव्यक्ति के लिये कम अवसर या अधिक प्रतिस्पर्धा मिलती है। ऐसी कठिनाईयों से बचने के लिये कई चर्चों ने बड़े देह के अन्तर्गत छोटे समूहों की आवश्यकता पर जोर दिया है। इस जोर ने ''सेल चर्च'' मॉडल को जन्म दिया है, जैसे कि नीचे आरेख दिये गये हैं।

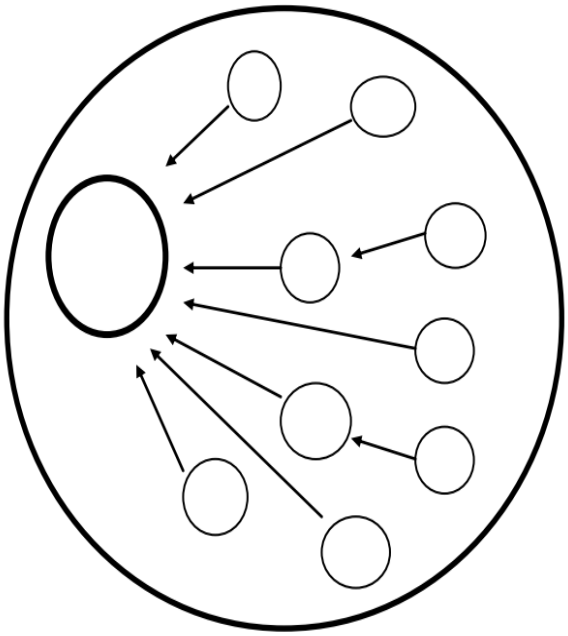

इस आरेख को देखकर क्या टिप्पणी किया जा सकता है? इसकी सूची तैयार करें।

1).

2).

3).

4).

5).

6).

7).

सेल चर्च मॉडल के भीतर, नये विश्वासियों के विषय में जवाब रहता है। उन्हें मौजूदा चर्च में शामिल किया जाना चाहिये। इस उत्तर के लिये प्रेरणाएं अक्सर सौहार्दपूर्ण होती हैं। राज्य बढ़ोतरी की मांग करता है। तौभी कठिनाई वर्तमान रहता है।

जबकि छोटे समूह निरंतर अनुकूल अनुशासन सुनिश्चित करते हैं, कभी–कभी अन्य कठिनाईयों को देखा जा सकता है। जैसे कि विकास बढ़ता जाता है, सामूहिक देह की पहचान को बनाये रखा जाना चाहिये। जैसे कि (चित्र में दिये गये) तीर संकेत देते हैं – अधिकार, वित्त, और निर्णय निश्चित रुप से सामूहिक देह के अन्तर्गत ही केन्द्रित होना चाहिये।[57] आत्मिक वरदानों की खोज व विकास के बावजूद भी एक पहले से तय छत विद्यमान रहता है।

छोटे समूह शिष्यत्व, चाहे घर का समूह या परंपरागत संडे स्कूल हों, वे कुछ मूख्य कलीसियाई विधियों के अभ्यास को रोक देती है ताकि सदस्यों के बीच स्वस्थ वाचा व्यवस्थित व बढ़ती रहे। जबकि बड़े समूह की संगति में इन कलीसियाई विधियों का अभ्यास किया जाता है। उनके इस अभ्यास से जो घनिष्टता और पहचान आती है, वो कभी–कभी धुंधली भी हो जाती है। इन कलीसियाई विधियों का पालन किया जाना आज्ञाकारिता के बजाय एक अधिकार का मामला बन कर रह जाता है। ये बातें सामूहिक नेतृत्व के लिये परमेश्वर के द्वारा बुलाये गये और वरदान दिये गये किसी भी शिष्य की क्षमता को सीमित करते हैं।

जबकि चालू समायोजन संभव है, तो कलीसिया स्थापक को इस तरह के मॉडल की शुरुआत में दीर्घकालिक क्षमता से विचार करना चाहिये।

क्या यह कलीसिया बढ़ोतरी का मॉडल एक पूरी संस्कृति या आबादी को बदलने में सक्षम है?

क्या एक चर्च, आकार की परवाह किये बिना, एक शहर, राज्य या देश तक पहूँच सकता है?

एक आबादी वाले क्षेत्र के भीतर मौजूदा विभाजन की वास्तविकता पर भी विचार करें। पाप की पीढ़ियों ने मनुष्य को विभाजित किया है और उन्हें अलगाव के अधीन किया है। कई बार हम यह सोचते है। कि ऐसे ऐसे समूच्यों में प्रायः चंगाई की जरुरत होती है, जब उद्धार से उनका हल निकाला जाता है। इन क्षेत्रों में मजबूर या ग्रहण किया गया उपचार पवित्र आत्मा के कार्य के लिये एक छोटा स्थानापन्न है। एक कलीसिया स्थापक एक विद्यमान कलीसिया की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के लिये ईमानदारी से कार्य करता है, ताकि वह एक ही इलाके के कई समूदायों तक पहूँच सके।[58]

एक दूसरे विकल्प पर ध्यान दें:

विकल्प # 2 – नये विश्वासी = नयी कलीसिया

जैसा कि पहले कहा गाया है, यह विकल्प शायद ही कभी उपयोग किया जाता है। इसके लिये कई कारण मौजूद हैं। सबसे पहले नये विश्वासियों को नयी कलीसया में विकसित करने के लिये हमें सफलता की हमारी उप–विवेक की परिभाषाओं की ओर नहीं ले जाता है। फलों को मुक्त करना हमें प्रसिद्ध नहीं करता है। इस विकल्प का अभ्यास करने वालों की आवाज शायद कभी नहीं सुनी जायेगी, क्योंकि वे उन हजार सदस्यों का भार उठा नहीं पायेंगे। यह विचार संस्कृति के लिये इतना प्रतिकुल है कि इस अभ्यास करने वालों पर उनकी सेवकाई के अन्त में असफलता का छाप लगा दिया जायेगा।

एक अन्य कारण यह विकल्प शायद ही उपयोग किया जाता है, वह है कि यह पूरी तरह से शिष्यत्व की कथित आवश्यकता है। यह मान लिया जाता है कि नये विश्वासियों को मांस से बढ़कर दूध की आवश्यकता होती है। यह स्वीकार नहीं किया जाता है कि सालों से एक ही आसन पर बैठने या उत्तम उपदेशों के सुने जाने से स्वस्थ शिष्य उत्पन्न होंगे। ज्ञान क बजाय, शिष्यत्व को आज्ञाकारिता के अभ्यास से मापा जाता है। शिशुओं को अंततः स्वयं से चलने और खाने की उम्मीद की जाती है।

---

[57] भारत में वित्त के मुद्दे ने बेहद विभेदकारी साबित कर दिया है। जैसे–जैसे अगुवे अपनी क्षमताओं या कैलेंडर से परे शिष्यत्प की आवश्यकता को पहचानते जाते है, उन्होंने सेल ग्रुप मॉडल को तेनी से कार्यरत कर दिया है। हालांकि छोटे समूहों के सदस्यों ने अपने छोटे समूहों की कथित और महसूस की जरुरतों के बीच संबंध का पता लगाया है। जबकि नेतृत्व अपने स्वयं के एजेंडा के लिये बजट बनाये रखने के लिये संघर्ष करता है।

[58] देखें, O'Conner, Patrick. Reproducible Pastoral Training, William Carey Library, Pasadena, 2006. p.24-25. ओ'कोन्नर में जॉर्ज पैटरसन की अंतर्दृष्टि शामिल है जो किसी चर्च के शुरुआत के भीतर जातीय समूहों के मिश्रण की कठिनाइयों से संबंधित है। ओ'कोन्नर के तर्क के विषय में बाद के फूटनोट को भी देखें।

नये विश्वासियों को उसी उम्मीद के साथ सामना करना चाहिये। मौका मिलने तक वे कभी नहीं चलेंगे। एक माता–पिता अपने तीस साल के बच्चे को खिलाने की उम्मीद नहीं रखता, और न ही माता–पिता अपने बच्चे को चलने सीखने की अनुमति देने से डरता है।[59]

कलीसिया स्थापक के लिये विश्वास का विकल्प खुला रहता है। कलीसिया स्थापक परमेश्वर की प्रतिज्ञा को स्वीकार कर सकता है कि वह कलीसिया में आवश्यक नेतृत्व प्रदान करे। इफिसियों 4 यह प्रतिज्ञा देता है।

> ''और उस ने कितनों को भविष्यद्वकता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया'' (इफिसियों 4:11)।

ये भूमिका चर्च के लिये निश्चित रुप से दी गई थी। इस कार्य का अंत एक परिपक्व और एकीकृत है, जो ''मसीह की परिपूर्णता के पूरे परिमाण'' में सक्षम है (पद 13)।

यह कलीसिया स्थापक को जिम्मेवारी से मुक्त नहीं करता है। तौभी यह उगते अगुवों की उम्मीद रखता है जैसे कि नई कलीसिया गठित होती है।

हम जो प्रश्न का सामना कर रहे हैं वह इस प्रक्रिया की अवधि है। इस मुद्दे की धारणा को छोड़ने के बजाय, परमेश्वर ने हमारे लिये पौलुस के नमूने को लिख डालने का निश्चय किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्ययन से पता चलता है कि पौलुस की कलीसिया स्थापन के सफर में उल्लेखनीय रुप से कम समय रहता था।[60] पौलुस की यात्राओं के ये पड़ाव सर्वसम्मति से कलीसियाओं के रुप में संदर्भित हैं। पौलुस नें कभी भी कुलुस्सी के किसी सेल–ग्रुप या थिस्सलुनीकी के किसी सभा को नहीं लिखा। बल्कि पौलुस ने उन्हें खड़ा होने और एक कलीसिया बनने के लिये मुक्त कर दिया था।

सफलता की इस वैकल्पिक परिभाषा पर विचार करें:

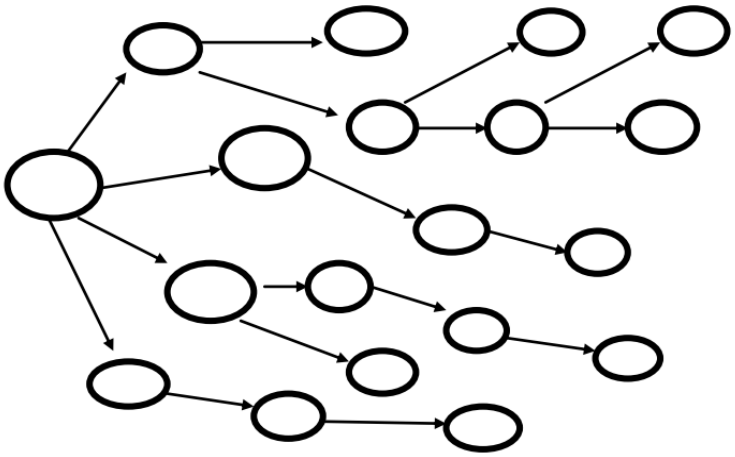

इस आरेख से क्या समझा जा सकता है?

यहां एक चर्च की सफलता की रणनीति के रुप में गुणन किया गया है। एक जगह एकत्र होने के बजाय, इस चर्च ने उनके ही इलाकों में नये विश्वासियों को भरपूर किया है। यह एक बड़ी दूरी का सुझाव नहीं देता है। यह परिवार और दोस्तों के साथ स्वाभाविक संबंधों से ''अंदरुनी आंदोलन'' पैदा करता है। नये विश्वासियों को शुरुआत से ही प्रभाव के स्वयं के चक्र/मंडल में पहुंचने और एकत्रित करने दृष्टिकोण दिया जाता है।[61]

---

[59] अधिकार देने और द्रूत गति से बढ़ने से संबंधित भय पर स्पष्ट विचार विमर्श के लिये देखें: Roland Allen's, Spontaneous Expansion.

[60] पौलुस की कलीसिया स्थापन समय–रेखा का विवरण के लिये इस भाग को देखें: "What is Possible".

[61] बाईबलीय नीति के विकास को आगे देखने के लिये "Entry Strategy" नामक अध्याय के अन्तर्गत "Oikos" को देखें।

इस तरह से कलीसियाओं की कई पीढ़ियों को एक समूद्र के छोर तक फैला हुआ चर्च के रुप में देखा जा सकता है, जो उस कलीसिया स्थापन क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले हर समूदायों को अपने घेरे में ले लेता है।

यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि इस मॉडल में तीरों ने लगातार अधिकार, धन का संग्रह, और किनारा तक का निर्णय लेने का दबाव देता रहा है। यह नये विश्वासियों की सेवकाई के अन्तर्गत तत्काल प्रतिक्रिया सक्षम करता है, जिसके परिणाम में उनके जीवन परिवर्तन का प्रदर्शन सक्षम हो जाता है।

हम अतिरिक्त शक्तियों पर गौर करें:

1. किनारे तक अधिकार – यह ''याजकपद'' की पहचान को नये विश्वासियों से जोड़ता है, और जिम्मेवारी और स्वामित्व का डी.एन.ए स्थापित करता है।

2. छोटे समूह का शिष्यपन – जैसे कि सेल ग्रुप मॉडल में भी देखा जाता है, इस मामले में शिष्यपन एक अंतरंग समुच्य में जगह लेते हुए जवाबदेही को सुविधाजनक बनाने, जरुरतमंदों के लिये सच्चाई से प्रार्थना करने, और आत्मिक वरदानों के विकास व अभ्यास में सक्षम हो जाता है। सेल ग्रुप मॉडल के विपरीत, यह न केवल मात्र अभ्यास बल्कि जीवन या मृत्यु का मामला होता है, जैसे कि सदस्यों को जिम्मेदारी और स्वामित्व दोनों में आगे बढ़ना चाहिये।

3. पवित्र आत्मा का नेतृत्व – जैसे कि अगुवों को उनके समूह ही से उभरने की उम्मीद की जाती है, उचित और आवश्यक जोर मनुष्य के लिये नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा पर दिया गया है। परमेश्वर अपने कार्य पर है, और वह अपने अनुयायियों की निर्भरता से आनन्दित होता है।

4. अनेक अगुवे – एक बार फिर जैसे कि सेल ग्रुप मॉडल के साथ होता है, नये विश्वासियों को अवसरों की पेशकश की जाती है। नेतृत्व के लिये हर विश्वासी को संभावित अगुवा माना जाता है। सेल चर्च मॉडल के विपरीत, यहॉ कोई छत नहीं होता है। इससे पवित्र आत्मा को उसे उठाने की अनुमति मिलता है, जिसे कलीसियाओं की पुनरुत्पादन के लिये चुनना चाहिये।

5. कम बुनियादी ढांचे – चूंकि इस मॉडल के समूह छोटे रहते हैं, इसलिये उनकी अभ्यासों को उसी संरचना के अन्दर बनाये रखा जा सकता है, अर्थात् सर्वाधिक स्वाभाविक जो उसका घर होता है। इस कारण से उक उच्च संसाधनों का प्रतिशत फसल की अगली पीढ़ी में सीधे रखा जाता है, जिससे द्रूत गति से बढ़ोतरी होता है। इसका मतलब है: कम खाया गया और अधिक बोया गया।

6. सच्ची कलीसिया – यह कोई विश्वासियों के खेलने की कलीसिया नहीं है, और न ही एक बड़ी देह के अन्तर्गत कुछ कार्यक्रमों का अभ्यास करने वाले लोग हैं, जैसे कि शिष्यत्व। बल्कि ये वे कलीसिया हैं, जो इन सभी पहलुओं के लिये जिम्मेदार हैं, जिन्हें मसीह ने अपनी बुद्धि में बढ़ने के लिये अपने शिष्यों को दिया है।

7. अधिकतम गुणवत्ता – यह एक ऐसा मॉडल है जो दी गयी जनसंख्या के अंश के प्रत्येक समुदाय में पहुंचने में सक्षम है। विविधता रखने वाली अनेक कलीसिया और आकार दी गयी मंडली पूरे देश में पहॅूच सकती है।[62]

शायद सफलता की पुनः परिभाषा के लिये सबसे बड़ा प्रेरक ऐसे मॉडल की दीर्घकालिक गुणवत्ता है। क्या हमारी सफलता की परिभाषा कुशलता का अनुवाद करती है, जो महान आदेश का पीछा से संचालित हो? क्या हमारे मौजूदा लक्ष्य हमें प्रभु के आगमन के करीब लाता है?

---

[62] जबकि कुछ लोग एक और समावेशी मॉडल की बात कहेंगे, जो मसीह में एकता पर केंद्रित है, हमें स्वीकार करना होगा कि केवल परमेश्वर की कृपा एकता पैदा कर सकती है। इतिहास यह साबित करता है और आज विश्व भर में यह सच है। और नये विश्वासीगण, और यहां तक कि गैर–विश्वासी लोग भी इस एकमात्र अनुग्रह में बढ़ रहे हैं, वे रातों–रात सांस्कृतिक विभाजनकारी मुद्दों को आम तौर पर नहीं फेंक देते हैं। इसी कारण से पौलुस ने अन्यजातियों को यहूदी बनने की मांग नहीं की। बल्कि विद्यमान अधिकार ढांचे के भीतर नये चर्चों को इकट्ठा किया गया था। पैट्रिक ओ'कॉनर ने जॉर्ज पेटरसन की मदद से अपनी पुस्तक में एक समान निष्कर्ष पर पहॅूचा है। Reproducible Pastoral Training, William Carey Library, Pasadena, 2006. p.24-25

एक पेड़ को जब जल और धुप मिलता है, तो वह वही करता है जो स्वाभाविक है। यह बढ़ता है, और पत्ते, जड़, और स्वस्थ डालियॉ उत्पन्न करता है। जब यह परिपक्व हो जाता है, तो यह अपने प्रभाव में बढ़ता जाता है। यह अधिकाधिक जमीन को छाया देता है, और अपने आस–पास के अधिकाधिक जीवन को खिलाता है। ये बातें स्वाभाविक होती हैं।

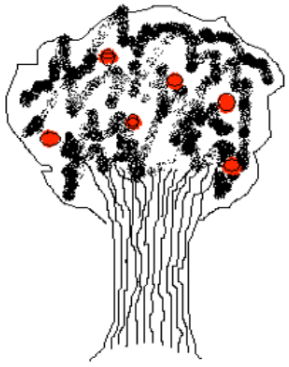

एक पेड़ के स्वस्थ को आप कैसे मापते हैं?

पत्ते और छाल पेड़ के स्वस्थ को दर्शा सकते हैं, ताभी यह फल ही होता है जो उसके लिये सही माप होता है। एक पेड़ उनके फलों से जाना जाता है। यदि फल न हो, तो कोई भी पेड़ नहीं बचेंगे। क्योंकि वे पुनरुत्पादन के लिये फल पर निर्भर रहते हैं। फल के अन्दर बीज होता है।

इस चर्चा में हमारे लिये सबसे अधिक रुचिकर सवाल हैः क्या एक पेड़ पूरे समुदाय को खिला सकता है? कई बार हमारी परिभाषा ''बड़ा ही बेहतर'' यह मानने के लिये तैयार कर देता है कि ऐसा हो सकता है। सही परिस्थितियों में एक महत्वाकांक्षी पेड़ एक मौसम में एक शहर को खिला सकता है, परन्तु इसका पीढ़ियों तक बने रहना स्वाभाविक नहीं है।

बिना फल के पेड़ जंगल उत्पन्न करते हैं।

एक परिपक्व पेड़ पुनरुत्पादन करेगा। यह नये वृक्षों पर अपने स्वामित्व का दावा नहीं करता है। वास्तव में इसका उनके स्वस्थ से थोड़ा ही लेन–देन रहता है। इनमें से कुछ मजबुती से बढ़ेंगे और यहॉ तक कि पहले से अधिक प्रभावकारी होंगे। हो सकता है कि अन्य जड़ न पकड़ें, और एक पीढ़ी तक भी न टिके। जो स्वस्थ होंगे वे उस क्षेत्र को भरे जाने तक पुनरुत्पादन करते रहेंगे।

हमारी सेवकाई के लक्ष्य का ध्येय पेड़ या जंगल होता है?

पौलुस कलीसियाओं का स्थापक के साथ–साथ कलीसियाओं को मुक्त करने वाला भी था। मुक्त करना वैसे ही महत्वपूर्ण है, जैसे कि स्थापन करना। पौलुस ने फलों को नहीं लिया, और इसलिये उसने एक योजना विकसित नहीं की जिसके द्वारा वह लगातार नियंत्रण रख सके। हालांकि उसने निश्चित रुप से निर्देश दिया था, और कई बार फटकार भी लगाया। उसके निर्देश का ध्यान अधिकार का उचित प्रशासन था, जो चर्च में जड़ पकड़ चुका था। उसने अपने चेलों को प्रभु यीशु के अनुग्रह में सौंप दिया था।[63] जबकि अपनी स्वयं की प्रवेश से, वह लगातार इन चर्चों को याद करता रहा, जो उसकी प्रार्थना के बराबर था। उसे उनके चले जाने का भय नहीं था। इसके बजाय उने निरंतर अपना विश्वास परमेश्वर पर रखा, जो उसे उसे कार्य को आगे बढ़ायेगा और पूरा भी करेगा।[64]

यहां हम सफलता के दो अलग–अलग विचार देखते हैं। एक अकेला बढ़ते चर्च पर केंद्रित होता है, तो दूसरा छोटे चर्चों के आंदोलन के चारों ओर – जो दीर्घकालिक विकास के लिये एक बहुत भिन्न संभावना के साथ होता है। परिणाम जो भी हो, परिणाम जो भी हो, इसका मूल्यांकन इसके पूर्वानुमान से ऊपर होना चाहिये। इस तरह के मूल्यांकन के प्रकाश में हमारी परिभाषा लाये जाने से हमारी सेवकाई के अंदर परमेश्वर की फसल की संभावनाएं खुल जाती है।

कैसे एक चर्च पूरे शहर, राज्य या देश तक पहूॅच सकता है?

कलीसिया स्थापन करनेवाली कलीसिया ही एकमात्र यथार्थवादी उत्तर है। स्थापन करना और मुक्त करना कलीसिया की शुरुआत की पीढ़ियों को सक्षम बनाता है। इसके अलावा हम इसकी बढ़ोतरी के मॉडल का चयन करना चाहिये, भले ही इसकात मतलब यह हो कि लोकप्रिय मॉडल को अस्वीकार कर दिया जाये।[65]

---

[63] उसके हरेक पत्रियों के प्रथम पद को देखें।

[64] देखें, फिलिप्पियों 1:3–6/1 कुरिन्थियों 1:7–9।

[65] यह नोट करने के लिये है कि दुनिया में चर्चों की सबसे बड़ी सुसमाचार प्रचारीय सम्मेलन, साऊदर्न बैपटिष्ट सम्मेलन, यु.एस.ए, जिसकी संख्या 43,000 चर्चों की है, की उपस्थिति औसतन 60 सदस्य/प्रति चर्च होती है। यह हाल के अतिरिक्त चालित मॉडलों पर बढ़ोतरी की पसंद का एक ऐतिहासिक स्वरुप के प्रमाण के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

कलीसिया स्थापन का अभिप्राय

कुंजी प्रश्न – *कलीसिया स्थापन क्यों?*

पूरे विश्व में सापेक्ष शांति की स्थापना में, मसीही सेवकाई ने विभिन्न रुपों को अपनाया है। मीडिया उत्पादन, राहत कार्य, सामाजिक कार्य और सेवा जैसे पारंपरिक कलीसियाई सेटिंग; पेशेवर सेवकाई के विस्तार की भूमिकाओं के साथ बढ़ी हैं।

परमेश्वर के लोगों – स्त्रीयों और पुरुषों के लिये उपलब्ध विशाल अवसरों के बीच, क्यों कलीसिया स्थापन पर ध्यान दिया जाना चाहिये? बाहरी प्रेरणा थोड़ी स्पष्ट है। कलीसिया स्थापन थोड़ी दृश्य सुरक्षा प्रदान करती है। एक कलीसिया स्थापन के वेतन की संभावना की गारंटी नहीं होती है, और पेशे के भीतर अस्पष्टता के वर्षों की एक अलग संभावना होती है।

नयी कलीसिया की शुरुआत की प्रेरणा को उजागर करने के लिये हमें पवित्रशास्त्र की गहराई में खोज करना जरुरी है। कलीसिया स्थापन के लिये उद्देश्य के लिये उद्देश्यों को समझना परमेश्वर की उस योजना को समझने जैसा है, जो सभी लोगों के लिये है। पिन्तेकुस्त के दिन से सुसमाचार के फैलाव से कलीसिया स्थापन परिणाम में आया था। जहॉ कहीं भी राज्य का विस्तार हुआ, वहॉ एक चौकी की तरह कलीसिया की स्थापना हुई है। कलीसिया परमेश्वर के राज्य का एक वाहन/माध्यम है।

कलीसिया स्थापन के उद्देश्यों को समझना, परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिये उसकी प्रेरणा को समझने की मांग करता है। परमेश्वर की मंशा में अंतर्दृष्टि के लिये निम्नलिखित अध्ययनों पर विचार करें:

आत्म–अनुसंधान अध्ययन – परमेश्वर का प्राथमिक अभिप्राय

निम्नलिखित पदों को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. यशायाह 43:6–7 – परमेश्वर ने मनुष्य को क्यों सृजा था?
2. यशायाह 49:3/यिर्मयाह 13:11 परमेश्वर ने इस्राएल को क्यों चुना था?
3. भजन संहिता 106:7–8 – परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र की गुलामी से क्यों छुड़ाया था?
4. रोमियों 9:7 – परमेश्वर ने फिरौन को क्यों उठाया/खड़ा किया था?
5. निर्गमन 14:4 – क्यों परमेश्वर ने लाल समुद्र को दो भागों में बांट दिया था?
6. 2 शमुएल 7:23 – क्यों परमेश्वर ने प्रतिज्ञा का देश दिया था?
7. 2 राजा 19:34 – क्यों परमेश्वर ने यरुशलेम को छुड़ाया था?
8. यहेजकेल 36:22–23 – क्यों परमेश्वर ने इस्राएल को बंधुवाई से वापस लाया था?
9. यूहन्ना 14:13 – क्यों यीशु प्रार्थना का उत्तर देता है?
10. यूहन्ना 12:28 – क्यों यीशु ने दुख उठाया था?
11. यशायाह 43:25/भजन संहिता 25:11 – क्यों परमेश्वर पापों को क्षमा करता है?

12. यूहन्ना 16:14 – क्यों पवित्र आत्मा भेजा गया था?

13. रोमियों 1:22–23 – कहॉ हमारा न्याय होता है?

14. 2 थिस्सलुनीकियों 1:9–10 – यीशु क्यों वापस आयेंगे?

15. रोमियों 9:22–23 – परमेश्वर अपना क्रोध क्यों भड़काता है?

परमेश्वर की महिमा प्रेरणाओं में सबसे बड़ी हे। आदि से, उस महिमा का प्रकाशन मनुष्यजाति के लिये सबसे बड़ा वरदान है। पाप की वजह से अलगाव विकृत हो चुकी है, और इससे भ्रम का सृजन हुआ है। रिश्ते को सही रुप में स्थापित करना मसीह का कार्य था, और आज भी यह चर्च के माध्यम से किया जाता है।[66]

कलीसिया में परमेश्वर की महिमा पर ध्यान दें:

आत्म–अनुसंधान अध्ययन – परमेश्वर महिमा – कलीसिया

परमेश्वर की महिमा का वाहन के रुप में कलीसिया से संबंधित इन वचनों को पढ़ें:

1. रोमियों 11:36 – कलीसिया की प्रार्थना क्या है?

2. 1 कुरिन्थियों 10:31 – एक कलीसिया का उद्देश्य क्या होता है?

3. 1 पतरस 4:11 – कलीसिया सेवकाई क्यों करती है?

4. फिलिप्पियों 1:9–11 – मसीह नें हमें धर्मी क्यों ठहराया है?

5. मत्ती 5:16 – हमारी ज्योति लोगों के सामने क्यों चमकता है?

6. इफिसियों 1:4–6 – क्यों परमेश्वर ने हमें लोगों की मानिन्द चुना है?

अपनी महिमा का खुलासा चर्च को स्थापित करने के पीछे परमेश्वर का प्राथमिक उद्देश्य है। जैसे कि पहले कहा गया है, हम उसकी महिमा का वाहन हैं। कुछ लोग पुछेंगे कि कैसे यह नई कलीसिया की स्थापन के लिये प्रेरित करता है, यह मानते हुए कि परमेश्वर की महिमा चर्च में होती है?

[66] परमेश्वर की महिमा को उसके छुटकारे के कार्य के लिये प्रेरणा के संबंध में और अधिक विस्तारित प्रस्तुति के लिये देखें:
Piper, John. Let the Nations be Glad. Baker Academic, 2nd Ed, 2003, 22-27.Page 105

राज्य के विस्तार हेतु परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिये निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें:

आत्म-अनुसंधान अध्ययन - आगे बढ़ाने के लिये परमेश्वर की योजना

निम्नलिखित पदों को पढ़ें और परमेश्वर की योजना के अन्तर्गत सामान्य बिषय की खोज करें:

पुराना नियम

उत्पति 12:3 / 18:18

भजन संहिता 2:8 / 22:25–31 / 46:10 / 57:7–11 / 67:2–4 / 72:17–19 / 96:3

यशायाह 2:2 / 11:10 / 12:4 / 42:1 / 42:10–12 / 51:4 / 52:15 / 56:7 / 60:3 / 66:18

यहेजकेल 36:23 / 39:21 / यिर्मयाह 1:5 / 16:19–21 / हाग्गै 2:7 / जकर्याह 9:10 / मीका 4:1–3 / मलाकी 1:11 / 1:14

नया नियम

मत्ती 4:12–16 / 15:21–25 / 14:14 मरकुस 11:15–19 / लुका 2:25–32 / 13:29 / प्र.वाक्य 5:9–10 / 7:9

निष्कर्ष – यशायाह 49:6

जब परमेश्वर की महिमा और इस संसार के देशों के लिये उसके हृदय को समझ लिया जाता है, तो इससे बाकी कार्यों को परिभाषित करना आसान हो जाता है। यीशु मसीह का आगमन प्रकाशितवाक्य 5:9–10 को पूरा होने की प्रतिक्षा में है, हर जाति, भाषा, लोग, और देश से खरीदे हुओं की बुलाहट, ताकि वे परमेश्वर की सेवा में याजकों का राज्य गठन करे।

कलीसिया स्थापन क्यों?

कलीसिया स्थापन सुसमाचार संदेश को उन देशों में ले जाता है जहॉ लोगों ने अभी तक सुसमाचार नहीं सुना है। कलीसिया एक वाहन है; खोये हुओं के बीच में इसकी स्थापना करना परमेश्वर की योजना है।

संभव क्या है?

हमारे दर्शन को परिभाषित करने के लिये पवित्रशास्त्र को अनुमति देना

। रोमी साम्राज्य 50 ई.

पौलुस के मिशन क्षेत्र पर विचार करें। परमेश्वर ने पौलुस को कोई सुदूर कोने में नहीं भेजा था। बल्कि पौलुस को मूर्तिपूजा और सुखवादी दर्शन के अधिकेन्द्र में प्रचार करने का कार्य भार सौंपा गया था। जब हम ध्यान देते हैं कि परमेश्वर ने पौलुस को कैसे उसका कार्य पूरा करने के लिये उपयोग किया, तो हमारी आंखों को एक क्षेत्र के भीतर एक क्षेत्र के भीतर पवित्र आत्मा के संभावित कामों के लिये खोल दिया जाता है। किसी भी सर्वदेववाद समुच्य के साथ, समन्वयवादियों की संभावनाएं बहुत बड़ी थी। सताव का विस्तारित फैलाव न केवल रोमी व्यापारियों के द्वारा हुआ था जो मूर्तिपुजा और काले जादू से पैसा कमाते थे, बल्कि ईर्ष्यापूर्ण यहूदी मतावलंबियों के द्वारा भी इसका फैलाव हुआ था। यहूदियों ने अपने आराधनालयों में एक गंभीर खतरे के रुप में इसके नियंत्रण पर नुकसान माना था।

कुछ लोगों ने मसीह के समय में रोमी जनसंख्या का सुझाव दिया है, कि 100 ई.[67] तक में वहां 65 करोड़ लोगों की आबादी थी। साम्राज्य का सबसे घनी आबादी वाला क्षेत्र रोम और यरुशलेम के बीच का तट था, जो इन सच्चाइयों से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस तट में लगभग 25–30 करोड़ लोग रहते थे।[68]

सामूहिक रुप से इन कारकों ने 45–60 ई. के बीच कलीसिया स्थापन क्षमता के लिये अविश्वसनीय मॉडल बनाया है। अपने कलीसिया स्थापन दल के साथ चल रहे प्रशिक्षण के लिये *स्थल के रुप में* निम्नलिखित अध्ययन पर विचार करें। उन्हें अपने जीवन भर का अध्ययन बनायें।

---

[67] देखें – www.unrv.com/empire/roman-population.php

[68] देखें – McRay, John. Paul: His Teaching and Practice. Baker Academic, Grand Rapids. 2003. ओ ब्रायन लिखता है कि प्रमुख रोमन समुद्र बंदरगाहों की संभावित आबादी घनत्व को 20वीं शदी के कोलकाता से ढाई गुणा, और मैनहट्टन द्वीप से तीन गुणा अधिक थी। वह ''अपार्टमेंट मकान'' के एक व्यापक नेटवर्क के लिये धन्यवाद देता है। पृष्ट संख्या 394।

पौलुस की यात्राएं – आत्म खोज कार्य

बिषय वस्तु:

1. नये नियम में कलीसिया स्थापन की अविश्वसनीय तेज गति की प्रकृति का प्रदर्शन
2. पौलुस की रणनीति की खोज और उनके आंदोलनों के समय व भौगोलिक स्थिति में पवित्र आत्मा की अगुवाई।

कार्य # 1

प्रशिक्षुओं को तीन समूहों में इकट्ठा करें। प्रत्येक समूह को पौलुस के तीनों में से एक मिशनरी यात्रा के लिये नियुक्त करें। प्रशिक्षुओं से कहें कि वे नीचे दिये गये प्रश्नों में प्रत्युत्तर में जो पाते हैं, उसे लिख लें। दी गयी खाली मानचित्र छात्र की प्रतिलिपि के रुप में उपयोग के लिये है, जिसमें वे अपनी खोज को लिखेंगे।

उनसे ये प्रश्न पुछें:

पौलुस कहॉ गया था?	वहॉ क्या परिणाम निकले थे?
वह वहॉ कितने दिनों तक रहा था?	वह उस स्थान को छोड़कर क्यों चला गया था?

इन प्रश्नों के **उत्तर** उससे जुड़े खास पदो ंके साथ लिखे जाने चाहिये। स्थान और यात्रा–मार्ग सीधे मानचित्र पर किया जा सकता है।

ग्रुप # 1 – यात्रा # 1 – प्रेरितों के काम 13–14

ग्रुप # 2 – यात्रा # 2 – प्रेरितों के काम 15:39–18:22

ग्रुप # 3 – यात्रा # 3 – प्रेरितों के काम 18:23–20:38

कार्य # 1

उन्हीं समूहों में यात्राओं को फिर से पढ़ा जाये। इस बार वे पौलुस की यात्रा को मानचित्र में दिखायेंगे, उनसे उम्मीद रखें कि वे उसके मार्ग का पीछा करें और पौलुस की रणनीतियों का मूल्यांकन करें।

यात्रा # 1 – प्रेरितों के काम 13–14 – पौलुस और बरनाबास

☞ पौलुस की प्रवेश रणनीति क्या थी?

☞ कैसे उसने सुसमाचार प्रचार किया था?

☞ आरंभिक शिष्यपन में उसने कितना समय बिताया था?

☞ क्या उसने कलीसिया का गठन किया था?

☞ क्या अगुवों का पुनरुत्पादन हुआ था?

Virunum
Dravus
Poetovio
PANNONIA
Bedriacum
Ravenna
Viminacium
Danube
Novae
BLACK SEA
Oescus
Odessus
MOESIA
Burnum
DALMATIA
Salona
Amastris
BITHYNIA-PONTUS
THRACE
Ancyra
CAPPADOCIA
Roma
Perinthus
Nicomedia
MACEDONIA
GALATIA
Caesarea (Mazaca)
Portus
Thessalonice
COMMAGENE
Misenum
Pergamum
AEGEAN SEA
Cyrrus
CILICIA
Capreae (island)
ASIA
Claros
Antioch
Caralis
Corinth
Ephesus
SYRIA
LYCIA
Raphaneae
SICILIA
Myra
CYPRUS
RHODES
Gythium
Syracusae
Paphos
Carthago
CRETA
Gortyn
Caesarea
JUDAEA
Jerusalem
Dead Sea
INTERNUM MARE

पौलुस की यात्राओं से बारह पाठ

कलीसियाओं की बढ़ोतरी के लिये ''डी.एन.ए''

1. द्रूत गति – पौलुस ने 15 वर्ष की खिड़की के अन्तर्गत 25 लाख से भी अधिक जनसंख्या के क्षेत्र को पूरा करता है। रोमियों 15:10,23 – ''किसी भी जगह को नहीं छोड़ा था।

2. कलीसिया स्थापन की छः धाराएं – एक ही समय में कई धाराओं की विकास होती हैः कुप्रुस, फ्रुगिया, गलातिया, मकिदुनिया, अखाया, और एशिया।

3. स्पष्ट प्राथमिकता – पता लगाना, लोगों को शांति के लिये जीतना, बपतिस्मा देना, गृह–समुच्य में नये विश्वासियों को शिष्य बनाना, अधिकार देना, पुनः जाकर मिलना – मूल्यांकन करना, अगुवों की नियुक्ति करना।[69]

4. शीघ्र ही अधिकार आगे बढ़ाया गया – जैसे, एक बार कुरिन्थ में लंबा पड़ाव डालता है – (प्रे. काम 18:11/18 माह) – 1 कुरिन्थियों 1:10–14 – पौलुस कहता हैः उसने बपतिस्मा नहीं दिया! तो किसने दिया था?

5. शुरु से ही नये कार्यों को कलीसियाओं के रुप में बर्ताव किया गया था। पौलुस की पत्रियां कभी भी किसी सेल ग्रुप या संगति को सम्बोधन नहीं की गयी थी। ''सहकर्मियों'', ''परमेश्वर के द्वारा चुने हुए भाईयों'' सा बराबरी का आदर दिया गया था।

6. नये विश्वासियों में महान आदेश का स्वामित्व पाया जाता था। उदाहरण के लिये, थिस्सलुनीकियों की कलीसिया (प्रेरितों के काम 17:1–9 – तीन सप्ताह का पड़ाव), 1 थिस्सलुनीकियों 1:7–8 – ''हर जगह जाने गये थे''।

7. सताव – इसके बाद सच्चे विश्वासियों की सुनिश्चित/पहचान हुई।

8. तुरन्त बपतिस्मा – पौलुस के लेख में देर करने का कोई उदाहरण पाया नहीं जाता है।

9. प्रादेशिक केन्द्रों की शुरुआत पाफुस, पिसिदिया के अन्ताकिया, इकुनियुम, लुस्त्रा, देरबे, फिल्लिपी, थिस्सलुनीका, बिरिया, एथेने, कुरिन्थ, और इफिसुस में हुई; यहॉ के स्थानीय विश्वासियों को अपने बाहर सुसमाचार पहॅूचाने के लिये मदद किया गया था।

10. प्रत्येक प्रदेश में कुंजी प्रशिक्षक/सहायक – इसी भाग के अन्तर्गत नेतृत्व विकासन तालिका को देखें।

11. जब संभव हुई, वापस आये – जिन क्षेत्रों का दौरा किया गया था, वहॉ पौलुस के कैद होने से पहले कम से कम एक बार फिर दौरा किया गया था।

12. पवित्र आत्मा के द्वारा संचालित हुए – पौलुस कभी भी दिशा–निर्देशन के लिये अधिकारी नहीं था। बल्कि परमेश्वर ने ही आने जाने के लिये प्रत्येक द्वार और समय का निर्धारण किया था। कई बार परमेश्वर की अनुमति से आये सताव ने पौलुस को नये क्षेत्रों के लिये आगे बढ़ाया था। यह परमेश्वर ही था जिसने कहा था कि – नये विश्वासियों को खड़े होने के लिये छोड़ दो।

---

[69] देखें – O'Brien, P.T. Gospel and Mission in the Writings of Paul. Baker Books, Grand Rapids,1995. p.43. ओ ब्रायन डब्ल्यु. पी. बोवर्स के बिन्दु को आगे बढ़ाते हुए कहता है, ''उसका दावा है कि उसने सुसमाचार का पूरा कर लिया है . . . इस खासियत को दर्शाता है कि उसने इस क्षेत्र के रणनीतिक केन्द्रो में मजबुत कलीसियाओं की स्थापना कर दी थी. . . आगे की सुसमाचार प्रचार और मंडलियों का निर्माण अन्य लोगों के हाथों में था।'' यह भी देखें – Bowers, W.P. Fulfilling the Gospel: The Scope of Pauline Mission, JETS 30, 1997. 185-198

शिक्षकों के लिये प्रलेख – निम्नलिखित मानचित्रों को पौलुस की यात्राओं की समीक्षा व निश्चित करने के लिये उपयोग करें।[70] अगले पृष्ट पर समय–रेखा के रुप में तिथि अनुमानित है।

यात्रा # 1

यात्रा # 1 – प्रेरितों के काम 13–14

शिक्षा देने के स्थलः

– अन्ताकिया में भेजने वाली कलीसिया की विशेषता
– तीन क्षेत्रों कुप्रुस, फ्रुगिया (पिसिदियाई अन्ताकिया), और गलातिया (इकुनियुम, लुस्त्रा, और देरबे) की शुरुआत होती है।
– कुल समय 18 महिनों से भी कम था। इसका मतलब है कि एक जगह में थोड़ा ही समय दिया गया था, तेज गति से प्राचीनों की नियुक्ति की गयी थी (प्रेरितों के काम 14:13)।
– हर जगह सताव ने पीछा किया था।
– सुसमाचार प्रस्तुति – 13:16–41।
– पौलुस/बरनाबास का तिरस्कार किया जाना।

यात्रा # 2

यात्रा # 2 – प्रेरितों के काम 15:39–18:22

शिक्षा देने के स्थलः

– प्रथम शिष्यत्व यात्रा – गलातिया और फ्रुगिया, 15:41–16:6
– नये अगुवों की सुची – सिलास, तीमुथियुस, लुका, लुदिया, प्रिस्किला/अक्विला आदि
– मकिदुनिया के लोगों की बुलाहट फिलिप्पी की ओर ले जाता है।
– आराधनालय नहीं . . .केवल स्त्रीयां और दारोगा! (फिलिप्पियों 4:1 में, तौभी आनन्द और मुकुट के लिये बुलाये गये)।
– थिस्सलुनीकी में एक छोटा पड़ाव? – 17:2।

यात्रा # 3

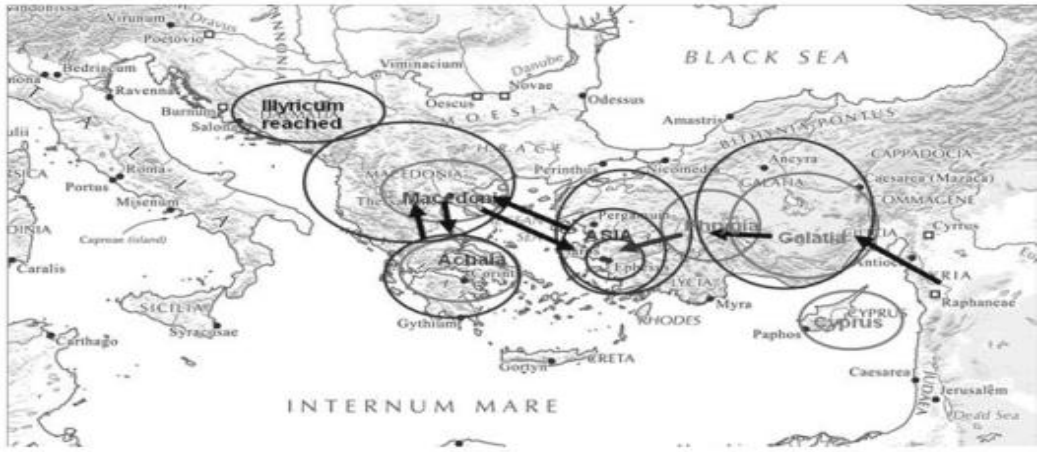

यात्रा # 3 – प्रेरितों के काम
18:23–20:38

शिक्षा देने के स्थलः

– पहले एशिया में बंद हुआ, और अब इफिसुस में खोला गया। समय ही सबकुछ है।
– उसके संदेश का सारांश – 20:20–21
– अगुवों को प्रचार करने का अधिकार दिया जाता है।

पौलुस का समय-रेखा

गृह–कार्यः प्रशिक्षुओं को समूहों में या जोड़ी में लें। गलातियों की पत्री 1–2 और प्रेरितों के काम को नये नियम की घटनाओं की समय–रेखा बनाने के लिये उपयोग करें। इससे जो परिणाम निकलेंगे, वे नीचे दिये गये की समानता में दिखने चाहिये।[71]

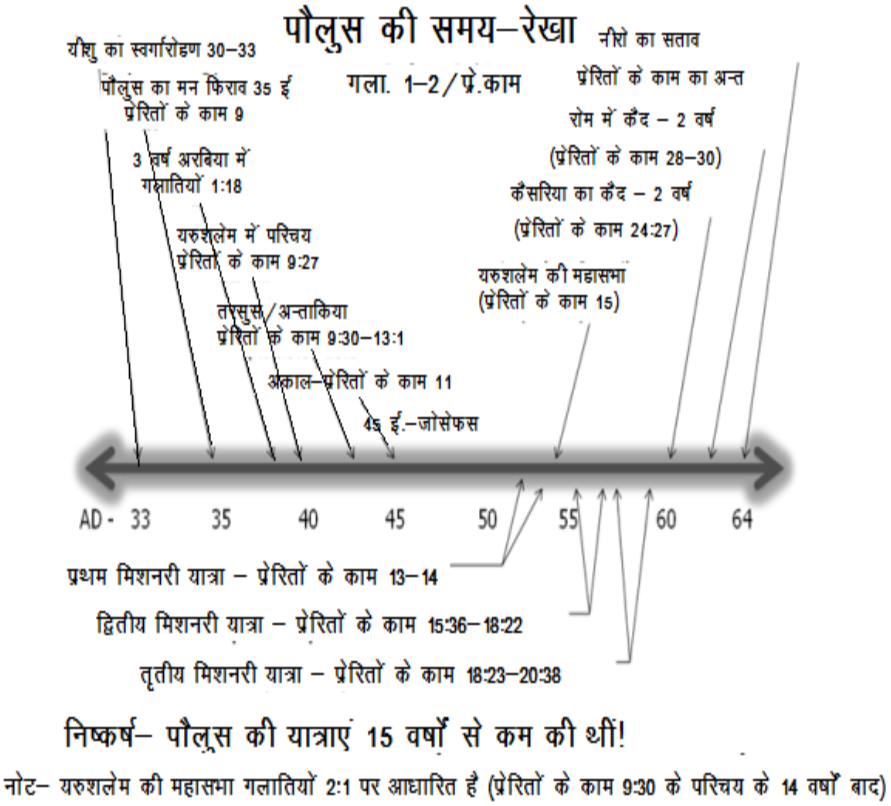

पौलुस के नेतृत्व की बढ़ोतरी

नीचे दिये गये सूची के सभी नाम या तो प्रेरितों के काम से, या पौलुस की पत्रियों में पाई जाने वाली विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं। इसमें कलीसिया स्थापक, कलीसिया के संचालक, शिष्यों को प्रशिक्षण देने वाला, यहूदी/युनानी, पासबान, अति सम्मानीय शिक्षक, और भागे हुए दास/गुलाम शामिल हैं।

नेतृत्व का केन्द्रीय भागः

बरनाबास, सिलास, तीमुथियुस, प्रिस्किल्ला/अक्विला, तीतुस, लुका

---

[71] यह ध्यान दिया जाना चाहिये कि प्रेरितों के काम में 15 वर्षों की अनुमानित अन्तराल का लेखा नहीं जाया जाता है (उदाहरण के लिये प्रेरितों के काम 14:28 में पौलुस अन्ताकिया में एक लम्बा पड़ाव डालता है)। जॉन स्टॉट ने पौलुस की यात्रा की इस खिड़की को 47–57 ई. माना है।

देखें Stott, John. *The Message of Acts*, Inter Varsity, Leicester, 1990. P.1920.

उभरते अगुवेः

यासोन, दियुनुसियुस, यूस्तुस, लुदिया, इरास्मुस, स्तिफनुस, गयुस, फीबे, क्रिस्पुस, सोस्थेनेस, अपुल्लोस, इपफ्रास, अरिस्तर्खुस, फर्तुनातुस, अर्खिकुस, अन्द्रुनीकुस, युलियुस, इरास्तुस, तर्तियुस, त्रुफिमुस, लीनुस, यूबूलुस, क्लौदिया, मरकुस, अर्तिमास, तुखिकुस, क्लेमेंस, युनेसिमुस, इपफ्रदीतुस, येनुस, क्रेसेन, करपुस, उनेसिफुरुस, क्लौदिया, इपफ्रास, अन्य. . . .

नेतत्व के श्रोतः

यह ध्यान देने योग्य है, ये अगुवे अलग–अलग श्रोतों से आये थे।

कुछ लोग पौलुस के द्वारा मसीह के लिये जीत लिये गये थे – जैसे तीमुथियुस, यासोन, क्रिस्पुस, और लुदिया।

कुछ लोग शिष्यों के शिष्य थे – इपफ्रास (तीमुथियुस का शिष्य?), तीतुस (क्रिस्पुस का शिष्य?), अपुल्लोस (प्रिस्किल्ला / अक्विला का शिष्य?)।

तौभी अन्य लोगों का पता किया गया था, जब वे सेवा करते थे; और पौलुस के दर्शन के अनुसार परमेश्वर ने उन्हें समय पर तैयार किया था, जैसे कि प्रिस्किल्ला और अक्विला, सिलास, मरकुस आदि।

निष्कर्ष – रोमियों 15:19,23 – कोई जगह बाकी नहीं था! नीचे दिये मानचित्र छः भिन्न कलीसिया स्थापन धाराओं के साथ मिशन क्षेत्रों को दर्शाते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में छः कलीसिया स्थापन आंदोलन – 15 वर्षों से कम में 3 करोड़ लोगों तक।

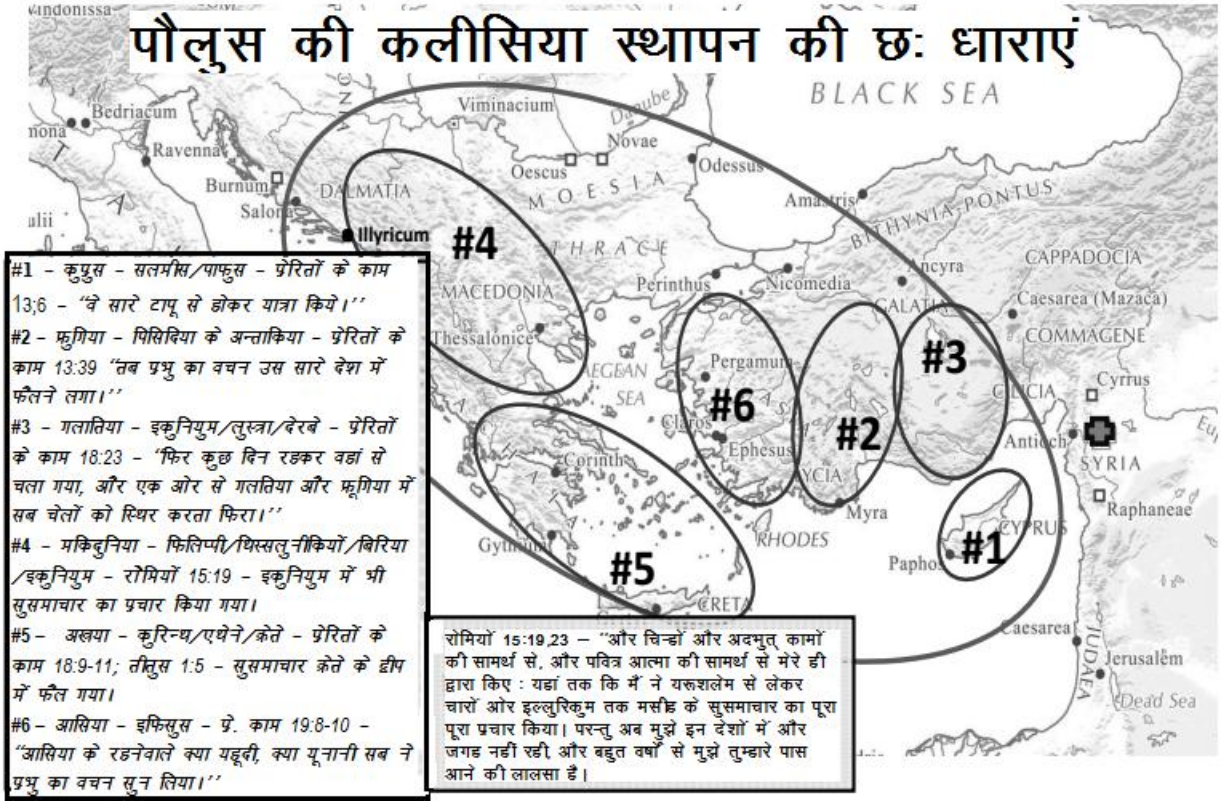

घटना का अध्ययन – ''जी'' लोग – कलीसिया स्थापन दल

समय – 12 वर्षों तक

रणनीतिक समन्वयक का रुपरेखा

''जी'' लोगों के लिये ''रणनीतिक समन्वयक'' पहली पीढ़ी की सुशिक्षित लोग होते है।, जो अब प्राथमिक रुप से गैर–सांस्कृतिकों के बीच में कार्य करती है। वे अपनी सेवकाई से जुड़ लक्ष्य निर्धारित लोगों के कई भाषाओं में धारा–प्रवाह होते हैं, और वह अपनी प्रगतिशील रणनीति के तहत स्थानीय संस्कृतियों और धार्मिक परम्पराओं के शोध/अनुसंधान करने में समय लगाया होता है। वह सम्पूर्ण क्षेत्र में संदर्भ के मामले में एक अगुवा होता है, और प्रायः इन प्रयासों के लिये आलोचना का शिकार होता है। ''रणनीतिक समन्वयक'' प्रभु के आगमन के दर्शन के साथ प्रतिनिधित्व के लिये मजबूत होता है, जो उसे आगे लेकर चलता है। वह उम्मीद रखता है कि हर विश्वासी खोये हुओं को उद्धार के विश्वास में लाने और मेल की सेवकाई करे।

क्षेत्र/खेत – ''रणनीतिक समन्वयक'' के शब्दों में . . .

मैं और हमारी टीम गैर–सांस्कृतिक क्षेत्रों में कलीसिया स्थापन के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं, जिसमें भौगोलिक दृष्टिकोण ऐसे जन–समूदाय हैं जिन्होंने कभी भी यीशु का नाम नहीं सुना है। प्राथमिक लोग जो इसमें शामिल होना चाहते हैं, वे पूर्व से पश्चिम तक 2000 कि.मी. से भी अधिक क्षेत्रों में फैले हुए हैं। हम जिस आबादी को शामिल कर रहे हैं, वे अनुमानतः 25 से 30 करोड़ की है। इस क्षेत्र के धर्म बहूदेववादी ईश्वरों की उपासना और पूर्वजों की उपासना दोनों ही का मिश्रण हैं। जब हमने कलीसिया स्थापन के कार्य शुरु किये, तो हमारे पास कोई साधन नहीं थे, जैसे कि हम ही इन समूहों को शामिल करने वाले पहले व्यक्ति थे। हमारे क्षेत्र के भीतर शहरी क्षेत्र घनी आबादी वाले थे, क्योंकि अधिकाधिक लोग आर्थिक और सामाजिक बढ़ोतरी के लिये वहॉ जा बसे थे। हम जिस देश में कार्य करते हैं, वह विकासशील विश्व बाजारों पर एक खिलाड़ी है, और पूरे क्षेत्र में व्यापार पर हावी है। इसका मतलब समाज का धर्म निर्पेक्षीकरण है, क्योंकि मूर्तिपुजक धार्मिक परम्पराओं का संचालन भी अर्थ के द्वारा किया जाता है, जिनकी आय को तेजी से रक्षा की जाती है।

बीते दशक में विभिन्न प्रेरणाओं के द्वारा हमें जितने भी इलाकों में जय पाया था, वहॉ सताव ने पीछा किया। जैसे कि पहले कहा गया था कि आर्थिक कमी का कारण मूर्तियों और उनके पण्डितों को त्यागने वाले मूतिपूजक थे, और उसके बाद सुसमाचार का तिरस्कार किया जाना। परन्तु इससे भी अधिक मुझे और मेरी टीम को अपनी ही परम्पराओं को तोड़ने के लिये सताया गया, जिसे हमने परखा और माना कि ये बाइबल पर आधारित नहीं थे।

भागीदार

हमने बाहरी लोगों की खोज की और अंदरुनी लोगों को तैयार किया, ताकि वे कटनी के लिये फलदायी मजदूर बन सके। (जो बाहर से आये थे, वे खेत में पहूॅचने के बाद ही इसमें शामिल हुए थे . . .हम बाहर भेजने वालों को इकट्ठा करने की ताक में नहीं थें, परन्तु अपनी ही कलीसियाओं को।) हमारे अगुवों में से अधिकांश प्रथम पीढ़ी के विश्वासी लोग थे। हम सभी के लिये इसका मतलब था – कार्य करते हुए ही प्रशिक्षण प्राप्त करना, जैसे कि हम आगे बढ़ते जाते थे। जिन स्थानों में विस्फोटकारी बढ़ोतरी देखी गयी, वहॉ सर्व–सम्मति से अंदरुनी (स्थानीय) अगुवों के द्वारा नेतृत्व की जाती थी।

रणनीति

हम स्पष्ट प्राथमिकताओं के आसपास कार्य कर रहे हैंः

1. पवित्र आत्मा के निर्देशन के द्वारा खोये हुओं को ढुॅढ़ो और जीतो।

2. विश्वास में आये नये लोगों को परिवार से जुड़ने के लिये तुरन्त शिष्य बनाओ।
3. आज्ञाकारिता की नींव के रुप में तुरन्त बपतिस्मा देना जरुरी,
4. जो मसीह के लिये समर्पित हो चुके हैं, सताव के समय उनके घरों में कलीसिया को इकट्ठा करना।
5. अगुवों को निर्देश दें और जिम्मेवारी दें कि वे सताव आने से पहले जितनी जल्दी हो सके, आगे बढ़ जायें।
6. विश्वासियों को पवित्र आत्मा पर भरोसा रखना सीखायें, और जब संभव हो, वे अपनी आज्ञाकारिता को माप सकें।

यह रणनीति हमें कई ताकतों का सामना करने के लिये अगुवाई करती है। ''प्रादेशिक'' ईश्वरों से सीधे आमना–सामना हुआ करता है, और कई बार उस पर जय पाने में अगुवाई मिली है। (सम्भवतः इसी कारण से हम लोगों ने अधिकांश सताव का सामना किया है।) दूसरी ओर इस प्रकार की शक्तियों का सामना से कई धार्मिक और राजनीतिक नेताओं के लिये मसीह को ग्रहण करने का द्वार खोल दिया है।

बारम्बार आश्चर्यकर्म और चंगाई के द्वारा हमलोगों को सुसमाचार को लेकर प्रवेश व प्रस्तुत करने में सहायता मिली है। जो भी इन घटनाओं को देखते हैं, वे खुद को मसीह को समर्पित कर देते हैं।

किसी घर/घराने का मुखिया हमारा लक्ष्य होता है। यह एक ऐसा माध्यम रहा है, जिससे पूरे परिवार ने विश्वास किया और एक साथ बपतिस्मा लिया ह। इससे हमारे कलीसिया को गठन करने में सहायता मिली है, जैसे कि स्वाभाविक तौर पर एक नये समूह से अगुवे उभरते हैं।

सताव के कारण नये विश्वासियों के साथ हमारा प्राथमिक समय सीमित हो जाता है, इसलिये हम पर शिष्यपन का एक नमूना विकसित करने का दबाव हो जाता है, जिसे हम प्रत्येक नये खेत में लागू करना चाहते हैं। इससे हमारे शुरुआती शिष्यत्व के धारा–रेखा को मदद मिलती है, और इसके साथ–साथ हमारे प्रस्थान के बाद नये विश्वासियों के साथ इसकी पुनरुत्पादन को सुगम बनाने में भी मदद मिलती है।

परिणाम

जिला–पहूँच पर दृष्टिकोण करते हुए, हम पुणः पुनरुत्पादन करने वाली कलीसियाओं के छः अलग अलग धाराओं को शुरु करने में सक्षम हुए हैं। इससे पूरे प्रदेश में सुसमाचार संतृप्ति मिली है। नये विश्वासियों में जिम्मेदारियों को देने से, और इन कलीसियाओं पर अधिकार रखना इन्कार कर देने से, प्रत्येक खेत में जल्द ही परिपक्वता उभर कर आयी है।

इस तरह की जिम्मेदारी ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रशिक्षकों और प्रतिनिधियों के साथ एक मजबूत नेतृत्व के लिये अगुवाई किया है। हम मानते हैं कि इन 30 करोड़ लोगों तक पहुँच हो चुकी है।

कठिनाईयां

1. **अन्य नेटवर्कों में परम्पराएं अक्सर बाधा डालती है** और झुठे शिक्षण की शुरुआत करती है, जो हमारे प्रयासों को तोड़ने में सक्षम हैं, यदि इन्हें जॉच नहीं किये गये। हम इस प्रकार की शिक्षा के श्रोत के लिये सीधे तौर पर अपील करते हुए इन परंपराओं का सामना करते हैं, और अंततः वचन से उनके झुठ का प्रदर्शन करते हैं।

2. **हमारी कलीसियाओं में से कुछ वास्तव में गड़बड़ हैं।** झुठे शिक्षक झुठे सुसमाचार प्रचार करते हैं, द्वितीय आगमन के बिषय गलत समझ रखते हैं, और आत्मिक वरदानों को अत्याधिक उपयोग करते हैं। हम यह भी देखते हैं कि कार्यों पर आधारित पृष्टभूमि प्रायः नीतिवाद, प्रभु भोज के बारे में झुठी शिक्षा, अनैतिकता, कलीसियाओं व अगुवों के बीच गुटबाजी, और अपनी जीविका के लिये अगुवों के प्रति अवमानना जैसे मुद्दों की ओर ले जाती है।

3. **नया नियम उन लोगों के लिये उपलब्ध नहीं है जिनके साथ हम जुड़े हैं।** इसका मतलब हम मसीह के जीवन की शिक्षा के लिये मौखिक पद्धति पर ही निर्भर रहते हैं। यदि नया नियम उपलब्ध भी होता, तो पूरे क्षेत्र में साक्षरता का अनुपात अनुमानतः 10 प्रतिशत से भी कम है।

4. **दीर्घ–कालीन शिष्यत्व दूरी के कारण कठिन होता है।** अधिकतर यह पत्राचार के द्वारा ही होता है। यद्यपि हमने हर चर्च का पुणः दौरा करने का निर्णय किया है, तौभी हमने कम से कम एक बार शुरु किया है, दूसरी और तीसरी पीढ़ी की कलीसिया हमारे केलैंडर में कभी भी समायोजित नहीं हुई है। हमारे सामग्रियों में हमारे आरंभिक शिष्यत्व पैकेज पर पुनर्विचार, परमेश्वर की सामर्थ पर जोर दिया जाना, परमेश्वर के वचन के रहस्य को समझने के लिये सही दैवीय सिद्धांत, जीवन–यापन, और प्रेम, शामिल होते हैं। हमने कई ''गैर–तार्किक'' मुद्दों पर भी विश्वासियों को निर्देश देने का प्रयास किया है (जैसे विश्वास ही से उद्धार, यीशु मसीह का ईश्वरत्व आदि)।

निष्कर्ष

इन कमियों के बावजुद भी, मुझे एक रणनीतिक समन्वयक के रुप में निश्चय है कि बढ़ोतरी व स्वास्थ्य को बनाये रखने वाली हर जरुरतें इन छः धाराओं में मौजूद हैं। मुझे इस बात का भी निश्चय है कि सेवकाई के बारह वर्षों के बाद इन क्षेत्रों के लिये मेरा अभिनय पूरा हो चुका है। हमारे यीशु मसीह के प्रभुत्व के दिशा–निर्देश के तले और पवित्र आत्मा की अगुवाई में मुझे काम करने के लिये कोई जगह नहीं बचा है। हमारी अगली अवधि की सेवकाई नये जन समूदाय को संलग्न करने के लिये पश्चिम में फैल सकती है।

विचार विमर्श और मूल्यांकन के लिये प्रश्नः

1. आप किस प्रकार की शक्ति देखते हैं?

2. कलीसिया स्थापन के प्रयासों में किस प्रकार की कमजोरी पायी जाती है?

3. भविष्य में इस कार्य के प्रति आपका क्या ख्याल है?

4. इस कलीसिया स्थापन दल को आप क्या सलाह देंगे?

[72] यह घटना अध्ययन पौलुस के तीनों यात्रा की सेवकाई की प्रस्तुति है। इसे पुनः पढ़ने और अध्ययन करने के लिये समय लें, और यदि पौलुस की सफलता के प्रति आचरण में किसी भी प्रकार के बदलाव पर विचार विमर्श करें।

चारों खेत को संतृप्त करना

मरकुस 4:26-29 – प्रशिक्षकों के लिये एक मार्ग–दर्शिका

कलीसिया स्थापन के चार खेत

मरकुस 4:26–29

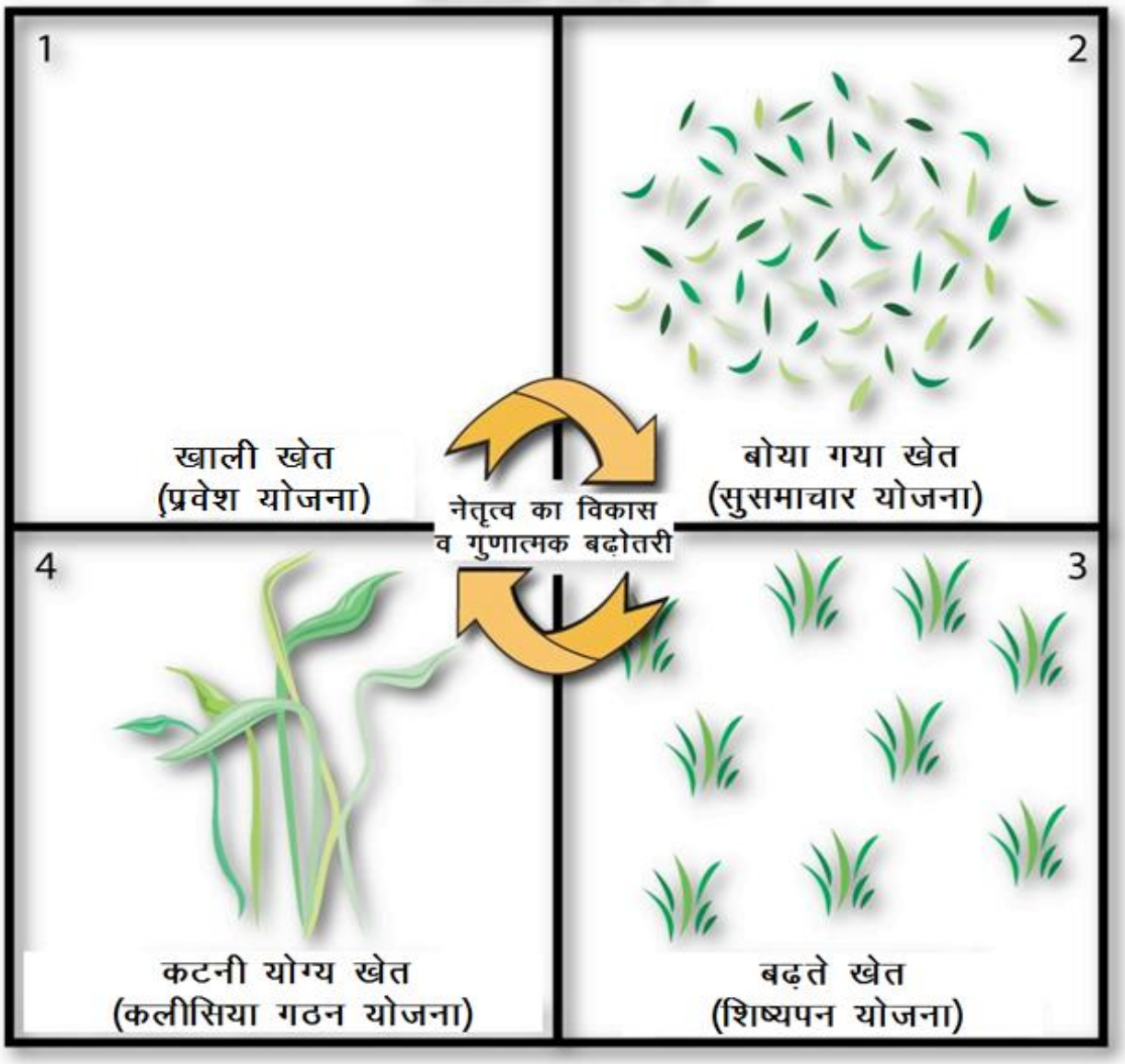

प्रशिक्षण का परिचय करना – परमेश्वर का अन्तः दर्शन

आदि से परमेश्वर की योजना – राष्ट्रों को आशिष देना!

उत्पति 12:2–3; निर्गमन 19:5–6; भजन संहिता 67:1–5; यशायाह 66:18–19; 1 पतरस 2:4–9; प्रकाशितवाक्य 5:9

विवरण – परमेश्वर अपनी कलीसिया को स्थापित करने के लिये हमेशा अपने याजकों का इस्तेमाल किया है।

हरेक विश्वासी याजक हैं! कलीसिया उसकी योजना का वाहन है!

चार खेतों का परिचयः

छोटे समूहों में मरकुस 4:26–29 पढ़ें और विचार–विमर्श करें।

प्रश्न पुछें – नयी कलीसिया की शुरुआत करने के बारे में ये वचन क्या कहती है?

उत्तर – चारो खेत दृष्टांत में प्रस्तुत किये गये हैं।

खेत #1 – खाली खेत – एक नये खेत में हम कैसे प्रवेश करते हैं?

खेत #2 – बोया हुआ खेत – हम क्या कहते हैं? हम इसे किससे कहते हैं?

खेत #3 – नयी बढ़ोतरी – कैसे हम शिष्य बनाते हैं?

खेत #4 – नेतृत्व में गुणात्मक बढ़ोतरी – कैसे हम कलीसिया का गठन करते हैं?

कटनी भविष्य के लिये भोजन/बीज को समान करती है।

खेत #1 – प्रवेश रणनीति

लक्ष्य – सामान्य विश्वासियों को ''प्रवेश दलों'' के लिये एकजुट करना।

कुंजी प्रश्न – कैसे हम नये खेत में प्रवेश करते हैं?

क्या अध्ययन करना है – लुका 10:1–11 – ''ओइकोस''

कुंजी पद – लुका 10:1 – ''यीशु जिस जिस नगर और जगह को आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।''

यह यीशु की ''प्रवेश रणनीति'' थी। यह हमें सीखाता है कि कैसे नये स्थानों में प्रवेश करना है।

आत्म–अनुसंधान अध्ययन – लुका 10:1-11

निम्नलिखित पदों को पढ़ने के लिये समय लें और उस गद्यांश से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. यीशु ने चेलों से क्या करने को कहा था?
2. यीशु ने चेलों से क्या न करने को कहा था?
3. उनके प्रयासों का लक्ष्य क्या था?

उत्तर – यीशु का लक्ष्य ''घरों/शांति के लोगों'' पर टिका था।

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन हमें प्रवेश रणनीति के लक्ष्य को समझने में मदद करेगी। निम्नलिखित वचनों पर ध्यान करें:

प्रेरितों के काम 10:9–48; 16:13–15; 16:25–34; 18:5–11

प्रश्न पुछें – किसने उद्धार पाया था?

उत्तर – प्रत्येक नमूने दिखाते हैं कि विश्वासियों के परिवारों ने अपने घरों में सुसमाचार को ग्रहण किया था।

क्या अभ्यास करना है – यीशु ने लुका 10 में जो निर्देश दिये हैं, उसे अभ्यास करने के लिये प्रशिक्षुओं को दो–दो करके भेजें। वचन को करीब से पालन करने के लिये हर संभव प्रयास करें। यह सुनिश्चित करें कि वे अपने लक्ष्य – घरों/शांति के लोगों'' को जानते हैं। इसके अभ्यास के लिये कम से कम तीन घंटे की अनुमति दें।

सरल निर्देश – प्रार्थना करें और परमेश्वर से सुसमाचार के लिये द्वार खोलने को कहें। जब वह ऐसा करता है, तो उस घर के लोगों को सुसमाचार बतायें।

कार्य सौंपें – प्रशिक्षण में हर नेटवर्क/कलीसिया सामान्य विश्वासियों में से ''प्रवेश दलों'' के लिये एक दल का गठन करें। ये दल जाकर कलीसिया स्थापन खेतों में प्रार्थना करेंगे ताकि घरों/शांति के लोग अपने द्वार खोल सके। जब द्वार खुल जाता है, तो उन्हें शांति (मेल) का संदेश प्रचार करने के लिये तैयार भी रहना है। प्रत्येक दल को एक खास इलाके के लिये नियुक्त किया जाना चाहिये, और से कम से कम सप्ताह में एक बार उस इलाके का दौरा करे।

खेत # 2 – सुसमाचार प्रस्तुति

लक्ष्य – सामान्य विश्वासियों को बोने वाला बनने के लिये एकजुट करना।

दो कुंजी प्रश्नः

1. कौन सुसमाचार प्रचार के लिये योग्य है?
2. हम क्या कहते हैं?

क्या अध्ययन करना है – यूहन्ना अध्याय 4

कुंजी प्रश्न – कौन योग्य है?

यूहन्ना 4 की कहानी बतायें। प्रशिक्षार्थियों से महिलाओं की योग्यताओं के लिये कहें/पुछें।

वह (सामरी स्त्री) . . .एक नारी, अशिक्षित, नया विश्वासी, सामरी (नीच जाति), और पापिन थी; तौभी यीशु ने उसे उसके शहर के लोगों को उसे (यीशु को) प्रस्तुत करने, और विश्वास में लाने के लिये चुना! वह एक अति प्रभावी सुसमाचर प्रचारिका थी।

उत्तर – यह बताती है कि जो लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, वे योग्य हैं!

कुंजी प्रश्न – हम क्या कहते हैं?

उस स्त्री नें चार काम की जिससे वह प्रभावी बनी थी।

कुंजी वचन – पद 28–30 – ''तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी। आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया: कहीं यह तो मसीह नहीं है? सो वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।''

ये तीनों पद ''सुसमाचार प्रचार के लिये चार मुख्य बातें'' प्रदान करते हैं।

सुसमाचार प्रचार के लिये चार मुख्य बातें – यूहन्ना 4:28–30

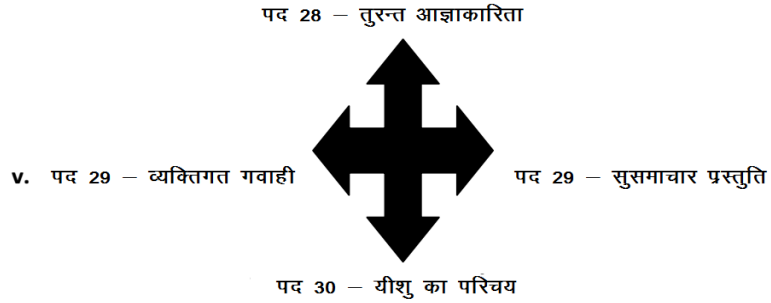

क्या अभ्यास करना है?

तुरन्त आज्ञाकारिता – अपने ''ओइकोस'' से 20 नामों की सूची तैयार करें।

व्यक्तिगत गवाही – तीन भाग की गवाही सीखायें। इस सत्र के दौरान प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को पांच लोगों को अपनी गवाही बताना चाहिये।

सुसमाचार प्रस्तुति – प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को सुसमाचार के पुल की शिक्षा दें। वे अपने सहपाठी को यह बताते हुए अभ्यास करेंगे, और प्रशिक्षण के दौरान इन पदों को कण्ठस्थ करेंगे।

मसीह का परिचय – प्रार्थना/बाइबल अध्ययन – हम परमेश्वर से और परमेश्वर हमसे बातें करता है। जो सुसमाचार में रुचि रखते हैं, उनके घरों में जाकर शिष्यत्व का पाठ आरम्भ करते हुए उनसे मुलाकात करते रहना चाहिये।

प्रशिक्षक के लिये औजार

जब इन चार प्रमुख बातों के साथ नये विश्वासियों को प्रशिक्षण दिया जाता है, तो ध्यान रखें कि वे नीचे लिखित बात को अपने स्मरण से कहते हैं:

(सिर पर हाथ रखते हुए) ''हम परमेश्वर को तुरन्त आज्ञाकारिता का वचन देते हैं।''

(हाथों को बाहर की ओर फैलाते हुए) ''हम व्यक्तिगत गवाही और सरल सुसमाचार प्रस्तुति के साथ बाहर के लोगों तक पहूँचते हैं।''

(हाथों को नीचे की ओर करते हुए) ''हम उन्हें मसीह का परिचय देने के द्वारा नींव डालते हैं।''

कार्य सौंपें – हर प्रशिक्षार्थी को चाहिये कि वे प्रत्येक सप्ताह पांच लोगों को अपनी गवाही बताये, व सुसमाचार सुनाये।

खेत # 3 – शिष्यत्व

अल्पकालीन शिष्यत्व

लक्ष्य – नये विश्वासियों को इकट्ठा करने के लिये पुराने विश्वासियों को एकजुट करना, और आरम्भिक शिष्यत्व के पाठ सीखाना।

क्या अध्ययन करना है?

1. मत्ती 28:19–20 – एक शिष्य होने का मतलब आज्ञाकारिता होता है।
2. पालन करने के लिये आज्ञाएं – प्रेरितों के काम 2:38–47 – प्रथम कलीसिया ने क्या किया था?
3. सात आज्ञाओं की पुस्तिका – पद्धति को सीखाना!

– उन्हें कहानी बतायें/प्रश्न पुछें/उन्हें उत्तर देने दें।

क्या अभ्यास करना है – समय जैसे अनुमति दे, एक प्रशिक्षक के रुप में नमूना बनें/सहायता करें/निगरानी रखें, ताकि सात आज्ञाओं के पाठों को 6–10 के छोटे समूहों में सीखाने के लिये पद्धति का उपयोग किया जा सके।

कार्य सौंपें – जरुरी है कि मसीह में आये हर नये घराने को उनके घरों में सात आज्ञाओं को सीखाया जाये। यदि जरुरी हो तो उन्हें पुस्तिका दें। नीचे दिये गये ''सात आज्ञाएं'' नामक भाग को देखें, जो छपाई की सामग्री के रुप में दिये गये हैं।

दीर्घ–कालीन शिष्यत्व

लक्ष्य – पुराने विश्वासियों को व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के लिये इकट्ठा करें, और पाठों की तैयारी करने और सीखाने के लिये शिक्षकों को जिम्मेवारी दें।

क्या अभ्यास करें – 4–6 के समूह में, प्रशिक्षण सत्र के दौरान कम से कम तीन पाठों को विकसित करें/सीखायें।

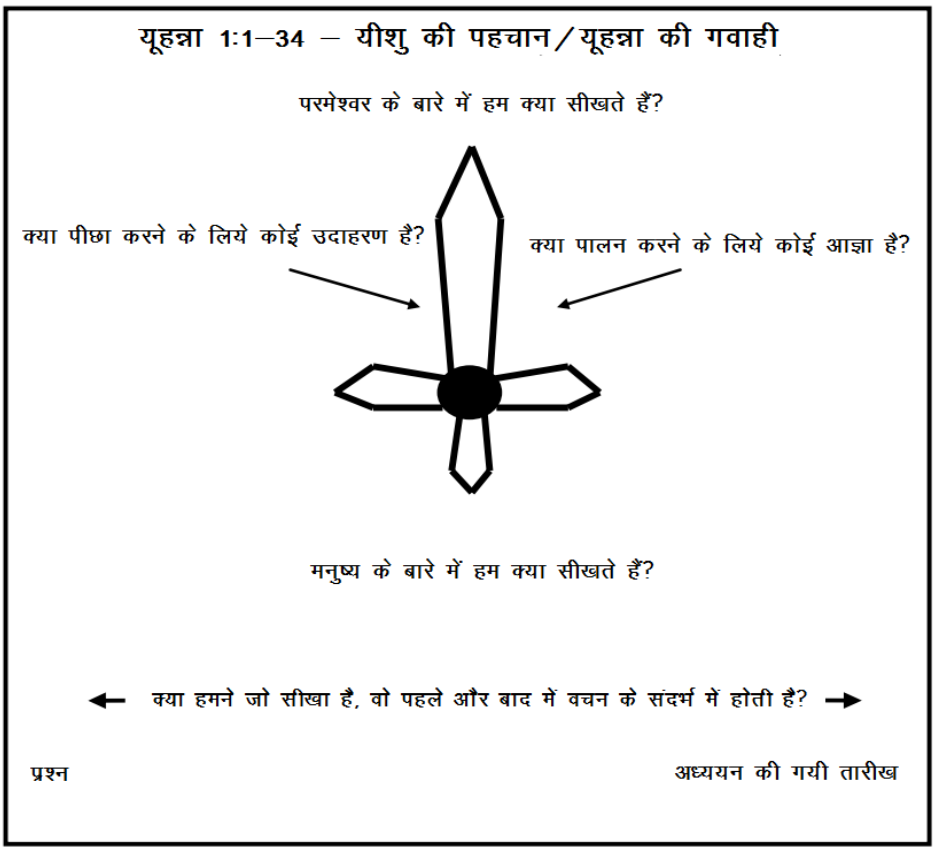

कार्य सौंपें – प्रतिदिन ''तलवार'' के साथ एक अध्याय (रोज एक अध्याय) का अध्ययन करें। पासबान या अगुवे इसकी साप्ताहिक प्रगति की जिम्मेवारी उठायें। इसकी गति को बनाये रखने के लिये पढ़ने की सूची तय करें।

खेत # 4 – कलीसिया गठन करना

लक्ष्य – एक स्वस्थ कलीसिया का प्रदर्शन करना

क्या अध्ययन करें – स्वस्थ कलीसिया के लिये हस्त–पुस्तिका

एक सिर और एक उद्देश्य – कुलुस्सियों 1:18 – यीशु मसीह; 1 कुरिन्थियों 10:31 – परमेश्वर की महिमा करना।

दो अधिकार –

- ☞ परमेश्वर का वचन – 2 तीमुथियुस 3:16–17
- ☞ परमेश्वर की आत्मा – यूहन्ना 14:26

तीन कार्य–क्षेत्र – पासबान, डीकन और खजांची/कोषाध्यक्ष/भंडारी

- ☞ पासबान – इफिसियों 4:11–12, योग्यता – 1 तीमुथियुस 3:1–7
- ☞ डीकन – प्रेरितों के काम 6:1–7, योग्यता – 1 तीमुथियुस 3
- ☞ कोषाध्यक्ष – पासबान का सुरक्षा, यीशु का भी एक था।

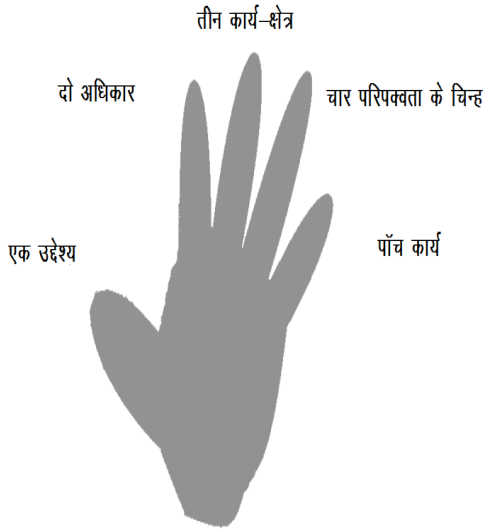

परिपक्वता के चार चिन्ह:

1. स्व–संचालन – प्रेरितों के काम 6:1–7, अपने अगुवों का चुनाव करें।
2. स्व–सहायता – प्रेरितों के काम 4:34–36 – यरुशलेम की कलीसिया एक उदाहरण।
3. स्व–पुनरुत्पादन – प्रेरितों के काम 13:1–4 – पौलुस/बरनाबास भेजे गये।
4. और स्व–सुधार – 2 तीमुथियुस 3:16–17 सफलतापूर्वक वचन का उपयोग।

पाँच कार्य: आराधना, संगति, सेवा, मिशन और शिष्यपन

- ☞ सबसे बड़ी आज्ञा – मत्ती 22 – परमेश्वर से प्रेम करो = आराधना करो; पड़ोसियों से प्रेम करो = संगति (मसीही पड़ोसीगण); सेवा (खोये हुए पड़ोसियों की)।
- ☞ सबसे बड़ा आदेश – मत्ती 28 – ''जाओ!'' = मिशन; शिष्य बनाओ = शिष्यत्व

प्रेरितों के काम 2:38–47 को प्रथम कलीसिया के पांच कार्यों को उदाहरण स्वरुप देखें।

क्या अभ्यास करें – 6–10 के समूहों में हस्त–मार्गदर्शिका की हर बातों का अभ्यास किया जाना चाहिये।

1. कार्य तय करें (पासबान/डीकन/कोषाध्यक्ष) – बाईबलीय योग्यता और कार्य व्योरे का उपयोग करें।
2. पाँच कार्यों को तय करें – समय जितना अनुमति दे, इसका अभ्यास करें।

कार्य सौपें – हर प्रचार के बिन्दुओं पर हस्त–मार्गदर्शिका से सीखायें। कार्यों की नियुक्ति करें, इसके कार्यों को सीखायें व अभ्यास करें। इसकी प्रगति की रिपोर्ट लिखें।

गुणात्मक बढ़ोतरी – अगुवापन का विकास

लक्ष्य – विश्वासयोग्य/फलदायी लोगों को एकजुट करना ताकि वे दूसरों को एकजुट कर सकें।

कुंजी प्रश्न – कैसे में अगुवों की बढ़ोतरी कर सकता हूँ?

क्या अध्ययन करें – परिशुद्धता के साथ कटनी – यीशु ने चेलों को शुद्ध किया ताकि विश्वासयोग्य लोगों को पाया जा सके। उसके बाद उन्हें एक रुप देने के लिये उनके साथ समय बिताया गया, और फिर बाहर भेजा गया।

स्व–अनुसंधान अध्ययन – विश्वासयोग्य को छानकर निकालना

निम्नलिखित वचनों को पढ़ें और यीशु के द्वारा की गयी छानने की विधि की खोज करें, आप जो पाते हैं, उसे लिखें।

1. मरकुस 10:17–23 प्रभुत्व – यीशु – प्रथम स्थान में ।
2. मत्ती 10:32–38 मृत्यु तक पीछे चलने के लिये इच्छुक रहना।
3. मत्ती 13:9–17 – दृष्टांत
4. अन्य? –

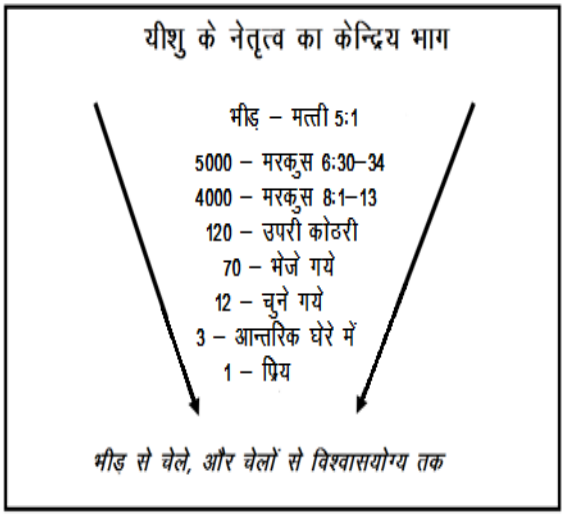

एक बार जब यीशु ने विश्वासयोग्य लोगों को पहचान लिया, तो उसने उनके साथ समय बिताने की प्राथमिकता दी। देखें मरकुस 3:14

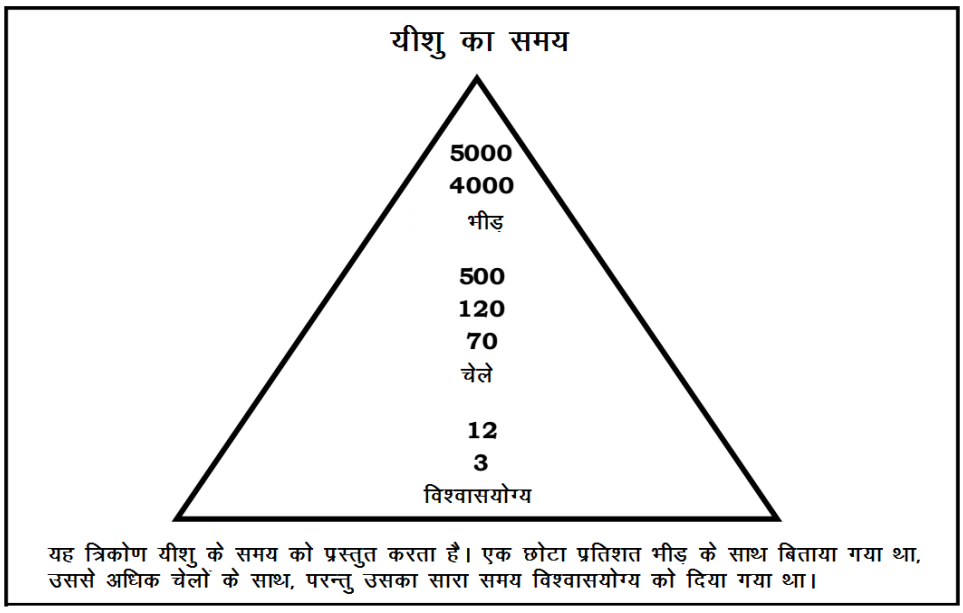

कुंजी वचन – 2 तीमुथियुस 2:2 ''और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।''

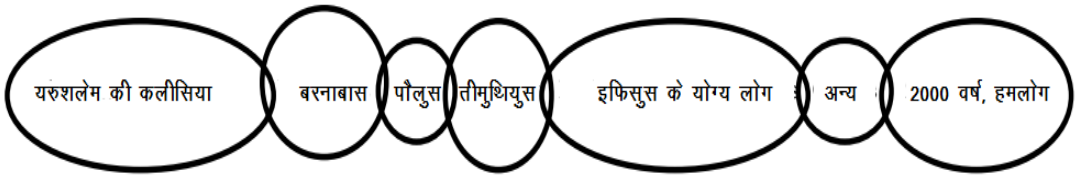

कलीसिया स्थापन योजना के हर स्तर पर अगुवों को तैयार किया जाना चाहिये। जो विश्वासयोग्य हैं, और वे स्पष्ट तौर पर बाइबलीय निर्देशों का अभ्यास करते हैं, वे दूसरों को परामर्श देने के योग्य हैं। इससे एक श्रृंखला का सृजन होता है, जैसे कि आप ऊपर देखते हैं।

कार्य सौपें – गुणों से पूर्ण पांच अगुवों की पहचान करें, जिन्हें परमेश्वर ने आपको परामर्श देने के लिये दिया है। प्रार्थना करने के लिये समय निकालें और साप्ताहिक तौर पर उनके साथ समय बिताने के लिये समर्पण होवें। नित्य योजनाएं बनायें, ताकि उनके कौशलताओं को तेज कर सकें और उनका मूल्यांकन कर सकें, जो चार खेतों में पाये जाते हैं।

प्रशिक्षकों के लिये सलाहः

प्रशिक्षण शिक्षण से अलग होता है। शिक्षण मन के लिये है, प्रशिक्षण में अभ्यास लागू होता है। कोई भी जन कलीसिया स्थापन के लिये इस या अन्य सामग्री से प्रशिक्षण देता है, उन्हें उनके कार्यक्रम के कई पहलुओं पर विचार करने के लिये अच्छी सेवा प्राप्त होगी।

1. ***किस क्रम में आप अपनी सामग्री पेश करेंगे?*** इस सवाल का जवाब सीखाये गये सामग्रियों की जटिलता पर निर्भर करता है। अक्सर जब हम कलीसिया स्थापन योजना के पांच भागों को प्रस्तुत करते हैं तो हम कलीसिया गठन से शुरु करते हैं। यह हमें स्वस्थ देह के जीवन का अभ्यास करने के साथ–साथ नये नियम की सादगी का अभ्यास के लिये भी सक्षम बनाता है।

2. ***आप किन बाधाओं का सामना करेंगे?*** आपके प्रशिक्षुओं के धर्म–विज्ञान या कलीसिया–विज्ञान में संभावित अवरोधों की आशंका आपको सामग्रियों की प्रस्तुति के क्रम तैयार करने में मदद कर सकती है। कई बार हमारे प्रशिक्षण में दो केन्द्रीय कार्य होते हैं, – परम्परा, राय, या झुठे धर्म विज्ञान से उत्पन्न हुई बाधाओं को तोड़ डालना, और उसके बाद फिर पवित्रशास्त्र के नमूने पर तैयार करना।

3. ***यर्थाथवादी लक्ष्य क्या–क्या हैं?*** कलीसिया स्थापन योजना के पांच भाग कलीसिया स्थापन की प्रक्रिया को प्रस्तुत करती है। साथ मिलकर वे कलीसिया स्थापक के आरम्भ के लिये सुचना की एक बड़ी टुकड़ी है। छोटे टुकड़ों में सामग्रियों को बांटने से कई बार एक प्रासंगिक अभ्यास हो सकते हैं। हमने सामग्रियों की दोहराई भी पाया है, जो प्रशिक्षार्थियों के द्वारा लागू नहीं किये गये। इस प्रकार, यद्यपि पूरी रीति से प्रथम प्रशिक्षण को न समझने पर भी, उसी सामग्री की बाद की समीक्षाओं ने ''आहा!'' की ओर अगुवाई की, जब कलीसिया स्थापक ने एक बड़ी तस्वीर की खोज की।

4. ***आप किन्हें प्रशिक्षित कर रहे हैं?*** सामान्य विश्वासियों को प्रशिक्षित करना निरंतर सर्वाधिक फलदायी साबित हुआ है। फिर भी मौजूदा नेटवर्क के भीतर सामान्य लोगों तक पहूँच प्राप्त नहीं की जाती है। कभी–कभी अधिक औपचारिक ''द्वारपाल'' प्रशिक्षण एक आवश्यकता बन जाती है। नेटवर्क के प्रमुख को विश्वास दिलाने में अलग तरीके की मांग हो सकती है। द्वारपाल का प्रशिक्षण कुछ सामग्रियों के पीछे ''क्यों'' सवालों से निपटने के लिये होती है, जबकि सामान्य विश्वासियों के लिये प्रशिक्षण ''क्या'' से संचालित होता है। हमें इसे क्यों करना चाहिये? बनाम हमें क्या करना चाहिये?

5. ***सब कुछ का अभ्यास करें!*** सामान्य लोगों के साथ/लिये विश्वास ही कुंजी है। वे जो अभ्यास करते हैं, वे उसे करेंगे। कल्पना कर लेना एक प्रशिक्षक के लिये नीचे गिरने जैसा होता है। समझ या प्रतिस्पर्धा की कल्पना निराशा की ओर अगुवाई करेंगी। सीखाये नहीं, प्रशिक्षित करें! सामग्रियों को उनके कार्यों में लागू करें।

6. ***अनुक्रमिकता से बचें।*** कलीसिया स्थापन योजना के पांच भाग कलीसिया स्थापन के पांच कदम नहीं हैं। बल्कि उन्हें कलीसिया स्थापक के अभिनय में जोर देने के जारी क्षेत्रों के रुप में समझा जाना चाहिये।

7. उपकरण परस्पर बदलने योग्य (विनिमय) होते हैं। यद्यपि यह हस्त–पुस्तिका उच्च–निर्देशित हैं, प्रत्येक नये खेत के भीतर विशिष्ट सेटिंग में उपकरण को अनुकूल करने के लिये तैयार रहें। उन अभ्यर्थियों के नमूने देखें, जिन्होंने प्रभावी तौर पर विभिन्न उपकरणों को उपयोग किया है।

एक विशिष्ट प्रशिक्षण के बाद के संक्षिप्त संस्करण पर विचार करें। प्रत्येक खेत का पालन करने के लिये मास्टर ट्रेनर्स के लिये प्रमुख सामग्रियों और लक्ष्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

मसीह यीशु

की

सात आज्ञाएं

जॉर्ज पैटरसन की सात आज्ञाओं का एक अनुकरण

बाइबल अध्ययन पद्धति

इब्रानियों 4:12 कहता है, *"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।"*

एक तलवार का चित्र हमें बाइबल के किसी भी क्षेत्र को सीखाने में सहायता करता है। जब हम एक तलवार के बारे में सोचते हैं, तो हम उन चार चार प्रश्नों के बारे में पुछते हैं जिन्हें हमें पुछना चाहिये।

इस तीर की नोंक ऊपर की ओर है, जो परमेश्वर के लिये है।

हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं?

नीचे की ओर नोंक किये तीर मनुष्य के लिये है।

हम मनुष्य के बारे में क्या सोचते हैं?

इस तलवार के दो धार भी हैं। प्रथम धार हमसे पुछने को कहती है,

क्या पालन करने के कोई आज्ञा हैं?

दूसरी धार हमसे पुछने को कहती है,

क्या मानने के लिये कोई आज्ञा हैं?

बाइबल से कोई भी कहानी पढ़ने या बताने के बाद इन चार प्रश्नों को एक-एक करके पुछें, और उत्तर के लिये कहानी में ढुंढ़े। आप जो उत्तर पायेंगे, वो हमारे जीवन में इस कहानी के अर्थ को प्रगट करेगा।

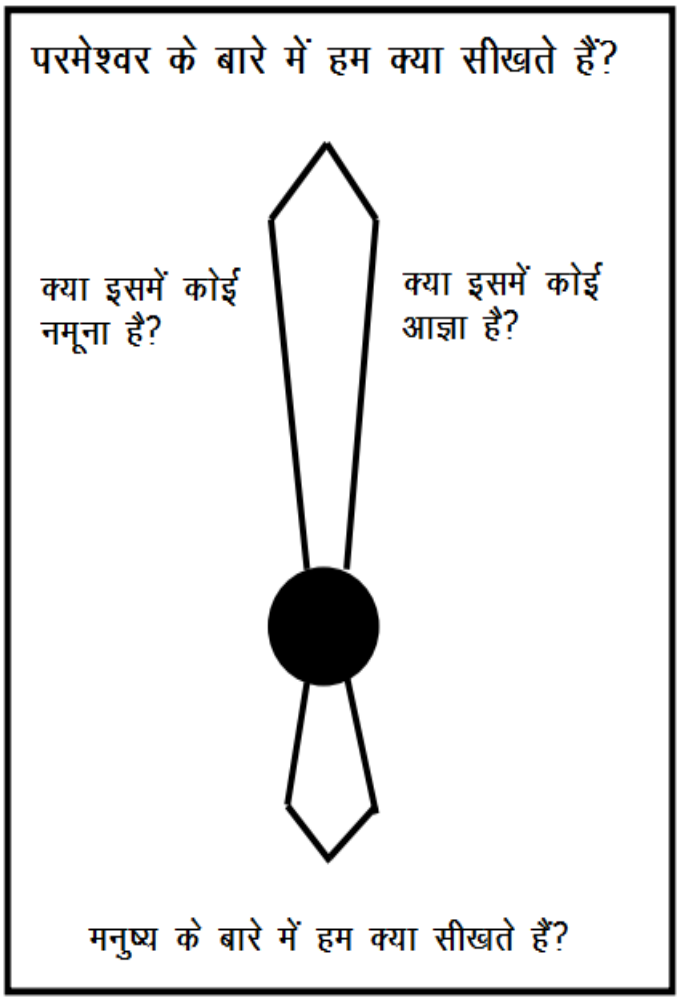

आज्ञा # 1 - पश्चाताप करो और विश्वास करो

आज्ञा – मरकुस 1:15 में, यीशु कहता है. . .

कहानी बतायें – लुका 19:1–10 से जक्कई के उद्धार की कहानी

पश्चाताप का क्या अर्थ होता है?

पश्चाताप का अर्थ होता हैः अपने पापों से मुड़ना और यीशु के पीछे चलना।

विश्वास करने का अर्थ <u>क्या</u> होता है?

विश्वास करने का अर्थ होता हैः यीशु को प्रभु के रुप में विश्वास/भरोसा करना।

हमें <u>क्यों</u> पश्चाताप करना चाहिये?

रोमियों 3:23, रोमियों 6:23, रोमियों 10:9–10

<u>किसे</u> पश्चाताप करना चाहिये?

प्रेरितों के काम 2:38–41 – हरेक को क्षमा पाने के लिये पश्चाताप करना जरुरी है।

आश्वासन <u>क्या</u> है?

1 यूहन्ना 1:9 कहता है कि जब हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो यीशु हमारे पापों को क्षमा करता और शुद्ध करता है।

यूहन्ना 10:28 – हमारा उद्धार यीशु का है।

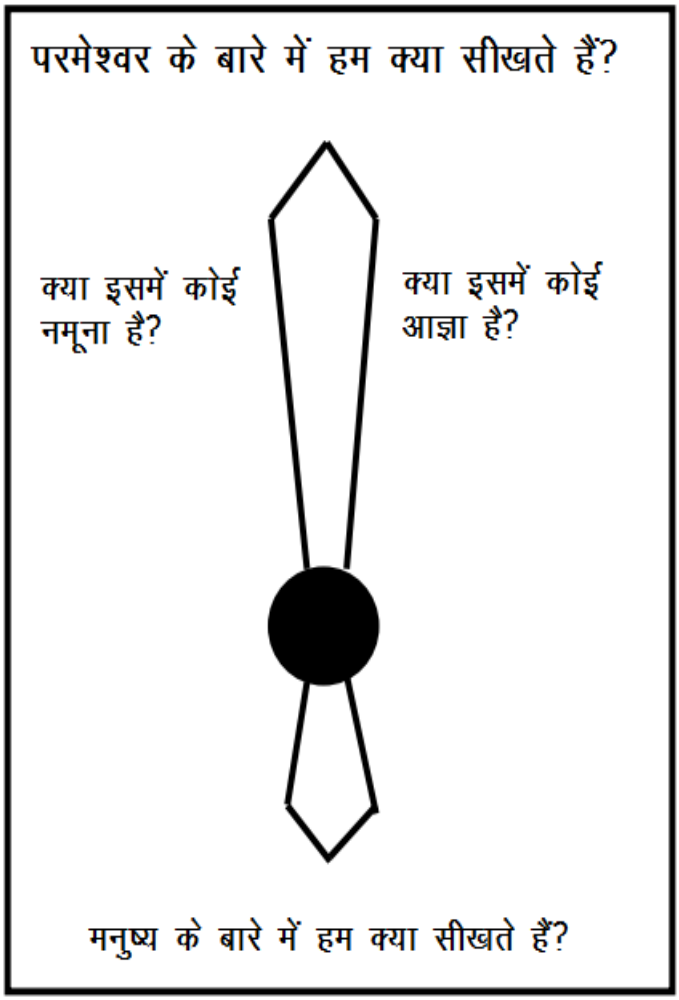

प्रार्थना – हे यीशु! मैं अपने पाप के पुराने जीवन को त्यागना चाहता हूँ, और तेरे पीछे चलना चाहता हूँ। मैं तुझ पर विश्वास करता हूँ। तू मेरा प्रभु बन जा।

कार्य – प्रभु यीशु के सामने अपने पापों को मान लें, उनसे मुड़ जायें और एक नया जीवन जीयें।

आज्ञा # 2 - बपतिस्मा लो

आज्ञा – मत्ती 28:19 में, यीशु कहता है. . .

कहानी बतायें – प्रेरितों के काम 8:26–39 से फिलिप्पुस और एक नया विश्वासी की कहानी

बपतिस्मा <u>क्या</u> है?

रोमियों 6:3–4 – बपतिस्मा यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने, और फिर से जी उठने का प्रतीक है। इसका अर्थ है कि हम भी अपने पुराने जीवन के लिये मारे गये हैं, और यीशु के साथ एक नया जीवन जीने के लिये जिलाये गये हैं।

<u>क्यों</u> हमें बपतिस्मा लेना चाहिये?

मत्ती 3:13–15 – यीशु ने बपतिस्मा लिया, इसीलिये हमें भी लेना चाहिये। बपतिस्मा लेने का मतलब हम यीशु को अपने प्रभु के रुप में पहचानते हैं।

<u>किसको</u> बपतिस्मा लेना चाहिये?

प्रेरितों के काम 2:38 – जो पश्चाताप करे और विश्वास करे, वे सभी बपतिस्मा ले सकते हैं।

हमें <u>कैसे</u> बपतिस्मा लेना चाहिये?

मत्ती 3:16 – यीशु जल में उतर कर बपतिस्मा लिया।

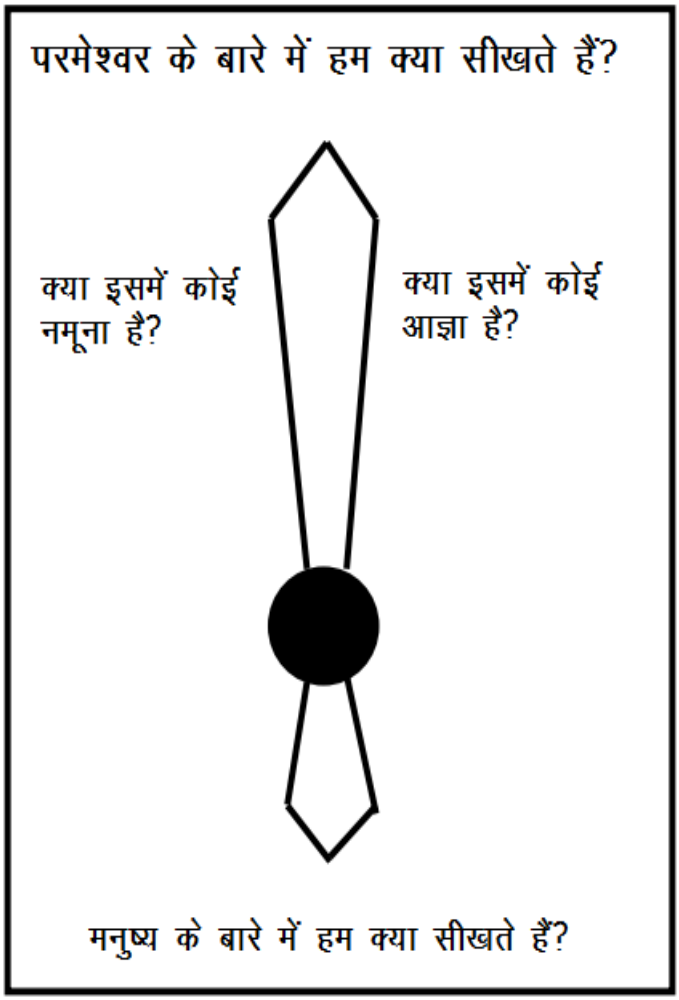

प्रार्थना – हे प्रभु, मुझे बल दे, ताकि मैं बपतिस्मा के प्रतीक के द्वारा मेरे जीवन को तेरे साथ पहचान करा सकुं।

कार्य – जल में उतरो और बपतिस्मा लो।

आज्ञा # 3 - प्रार्थना करो

आज्ञा – मत्ती 6:9–13 में, यीशु कहता है. . .

कहानी बतायें – मत्ती 6:5–15 में, यीशु प्रार्थना के बिषय में सीखाता है।

प्रार्थना <u>क्या</u> है?

प्रार्थना पिता परमेश्वर से बातचीत करना है।

हम <u>क्यों</u> प्रार्थना करते हैं?

मत्ती 6:9–13 – परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनता है।

हम चाहते हैं कि उसकी इच्छा इस जगत में पूरी होवे।

हम <u>कैसे</u> प्रार्थना करते हैं?

सामान्य तौर पर परमेश्वर से बातचीत करने के द्वारा।

'' हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।''
☞ जरुरतों के लिये प्रार्थना।

''हमारे अपराधों को क्षमा कर।''
☞ क्षमा के लिये प्रार्थना।

''हमें बुराई से बचा।''
☞ परीक्षा से बचे रहने के लिये प्रार्थना।

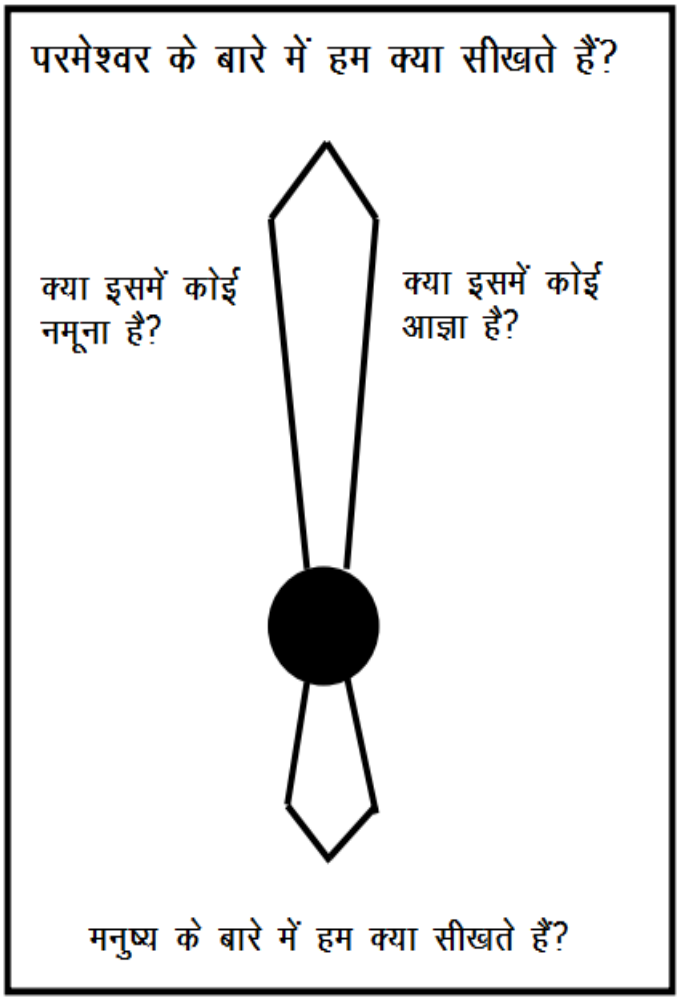

प्रार्थना – हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सीखा। हमें शुद्ध मन दे। तेरी इच्छा हमारे बीच में पूरी हो सके।

कार्य – अपने दिन की शुरुआत् और अन्त परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए और अपनी जरुरतों की प्रार्थना उसके सन्मुख चढ़ाते हुए करें।

आज्ञा # 4 – जाओ. . .शिष्य बनाओ

आज्ञा – मत्ती 28:19–20 में, यीशु कहता है. . .

कहानी बतायें – यूहन्ना 4:4–42 से सामरी स्त्री की कहानी बतायें।

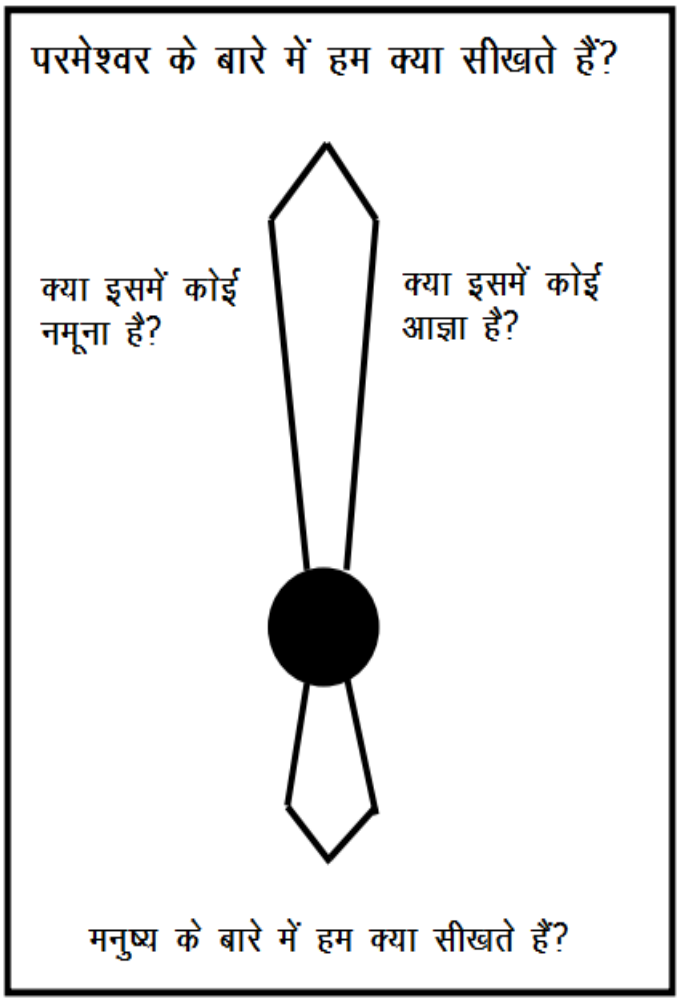

हमें किसके साथ बताना/बांटना चाहिये?

☞ यूहन्ना 4:16 – हमारे परिवार के लोगों को, मित्रों को, और पड़ोसियों को।

हमें क्या बताना चाहिये?

☞ यूहन्ना 4:29 – स्त्री ने अपनी कहानी और परमेश्वर की कहानी बतायी।

कौन जाने के लिये योग्य है?

☞ यूहन्ना 4 – जैसे सामरी स्त्री योग्य थी, वैसे ही हर विश्वासी हैं।

प्रार्थना – हे प्रभु, मुझे यह बताने के लिये साहसी बना, जो तू ने मेरे जीवन में किया है। मुझे मेरे समूदाय के लोगों को बताने के लिये तेरा वचन दे।

कार्य – इस पुस्तिका के अन्तिम पृष्ट से अपनी कहानी और परमेश्वर की कहानी बताने के लिये सीखें। आपकी सूची में जिन मित्रों व पड़ोसियों के नाम हैं, और जिन्हें आपकी कहानी सुनने की जरुरत है, उन्हें बताने के लिये अवसर प्राप्त हो, इसके लिये प्रार्थना करें। उन्हें बतायें।

आज्ञा # 5 - प्रेम करो

आज्ञा – मत्ती 22:37–39 में, यीशु कहता है. . .

कहानी बतायें – लुका 10:25–37 से भला सामरी की कहानी बतायें।

प्रेम क्या है?

☞ यूहन्ना 15:23 और 1 कुरिन्थियों 13?

हम क्यों प्रेम करते हैं?

☞ यूहन्ना 13:34–35 – क्योंकि पहले यीशु ने हमसे प्रेम किया, प्रेम इस संसार को यीशु के बारे में सीखाता है।

हम किससे प्रेम करते हैं?

☞ मत्ती 22:37–39 – सबसे पहले हमें परमेश्वर को प्रेम करना है, फिर अपने पड़ोसियों को।

हम कैसे प्रेम करते हैं?

☞ यूहन्ना 14:15 – यीशु को प्रेम करने का मतलब हम यीशु की आज्ञा मानते हैं।

☞ यूहन्ना 21:17 – दूसरों को प्रेम करने का मतलब, यीशु ने हमारे लिये जो किया है, वह उन्हें बताना है।

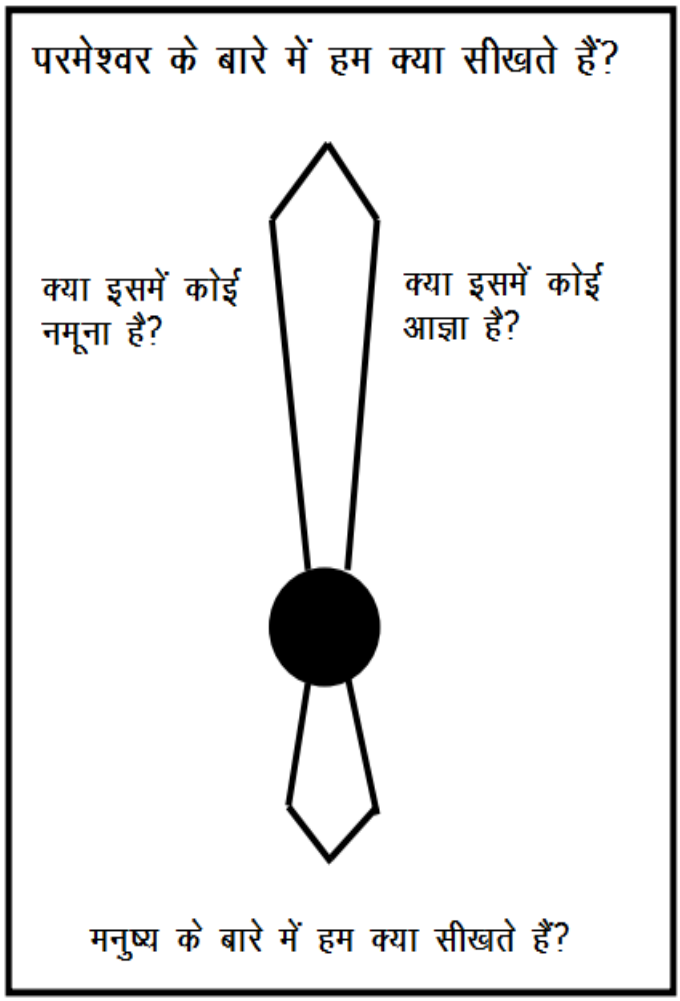

प्रार्थना – हे प्रभु! हमारी सहायता कर, ताकि हम तेरी आज्ञा मानते हुए तुझसे प्रेम कर सकें। हे प्रभु, मेरी सहायता कर कि हम दूसरों को प्रेम कर सकें; ताकि वे सीख सकें कि तू उन्हें भी प्यार करता है।

कार्य – हर एक दिन समय लें, ताकि आप पूरे संज्ञान के साथ अपने पड़ोसियों की सहायता करते हुए प्रेम दिखा सकें।

आज्ञा # 6 – प्रभु भोज

आज्ञा – लुका 22:19–20 में, यीशु कहता है. . .

कहानी बतायें – लुका 2:7–20 से यीशु का अन्तिम भोज की कहानी बतायें।

प्रभु भोज क्या है?

☞ 1 कुरिन्थियों 11:26 – यीशु के मृत्यु का एक प्रतीक।

हम प्रभु भोज क्यों लेते हैं?

☞ 1 कुरिन्थियों 11:26 – उसका देह तोड़ा गया, और उसका लहू हमारे लिये बहाया गया।

कैसे हम प्रभु भोज ग्रहण करते हैं?

☞ 1 कुरिन्थियों 11:27–29 – जरुरी है कि हम अपने आप को जांचें, परमेश्वर के सामने अपने पापों को मान लें, और याद करें कि यीशु हमें क्षमा देने के लिये मरा।

किसको प्रभु भोज लेना चाहिये?

☞ प्रेरितों के काम 2:42, 1 कुरिन्थियों 11:27–29 – बपतिस्मा प्राप्त शिष्य, जो यीशु के पीछे चलते हैं। जो अपने आप को जांचते हैं।

प्रार्थना – हे प्रभु! मेरे पापों को दिखा जो मैंने किया है, और उसे क्षमा कर। मेरे लिये अपना देह और लहु देने के लिये धन्यवाद।

कार्य – प्रभु भोज लें।

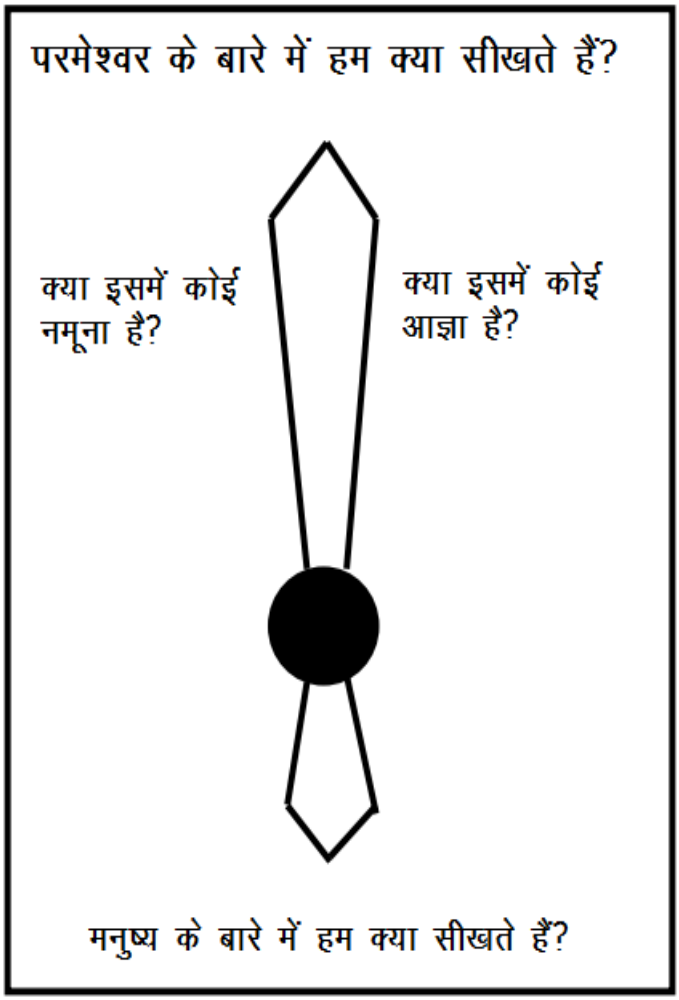

आज्ञा # 7 - दो

आज्ञा – लुका 6:38 में, यीशु कहता है. . .

कहानी बतायें – मरकुस 12:41–44 से विधवा की दान देने की कहानी बतायें।

हमें परमेश्वर को क्या देना चाहिये?

☞ अपना पैसा, समय, और हमारा जीवन।

हमें परमेश्वर को क्यों देना चाहिये?

☞ 2 कुरिन्थियों 9:6–7 – उदारता और हर्ष से दें। उदारता से दें, और हम उदारता से पायेंगे भी; क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवालों से प्रेम करता है।

कैसे हम परमेश्वर को देते हैं?

☞ 2 कुरिन्थियों 9:7 – हर्ष से, दबाव से नहीं।

☞ मत्ती 6:1–4 – गुप्त में, दिखाकर नहीं।

हम किसे देते हैं?

☞ 2 कुरिन्थियों 9 – इकट्ठा किया गया चंदा/दान एक कलीसिया को दिया गया था।

☞ प्रेरितों के काम 4:34–35 – कलीसिया ने उन सभों को दिया, जिन्हें जरुरत थी।

प्रार्थना – हे प्रभु! मेरे पास जो कुछ भी है, वह तेरा है। मुझे देना सीखा। मुझे जरुरतों को दिखा, ताकि मैं समय व पैसा के साथ सहायता कर सकुं।

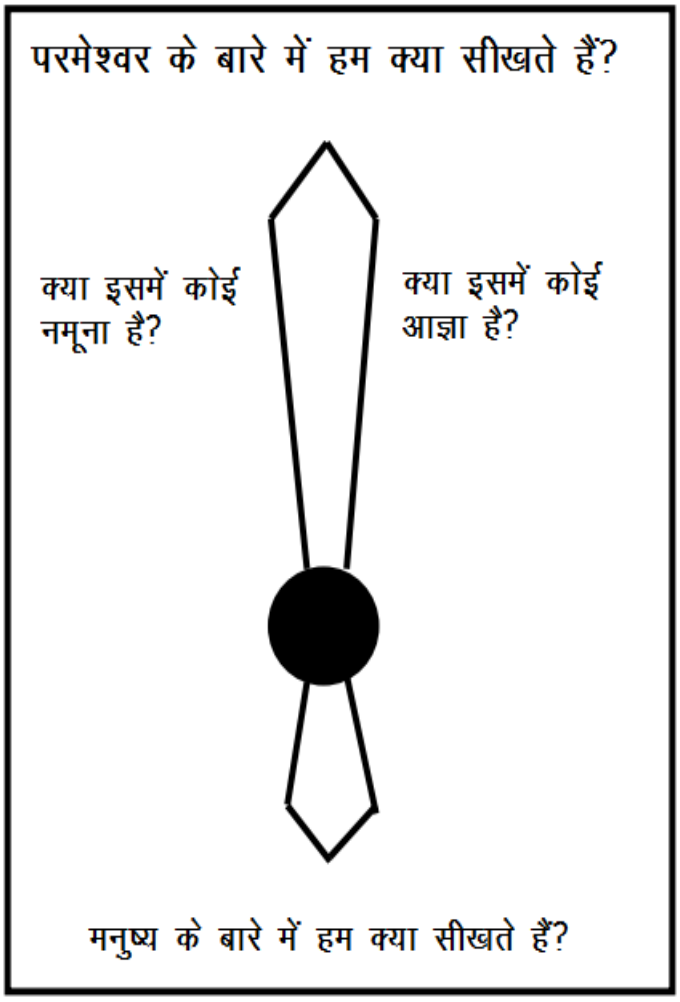

कार्य – इस सप्ताह आप अपने परिवार के साथ एक निर्णय लें कि आप कलीसिया के कार्य के लिये प्रति सप्ताह अपना समय व दान देंगे।

परमेश्वर की कहानी

रोमियों की पुस्तक हमें पाप की समस्या और परमेश्वर से मिलने का तरीका के बारे में बताती है। यहॉ समझने और बयान करने का एक सरल तरीका है, जो यीशु देता है। यीशु के संदेश को विश्वास करने और पापों से मुड़कर उसके पीछे चलने से यीशु के द्वारा परमेश्वर से मेल और उद्धार लाता है।

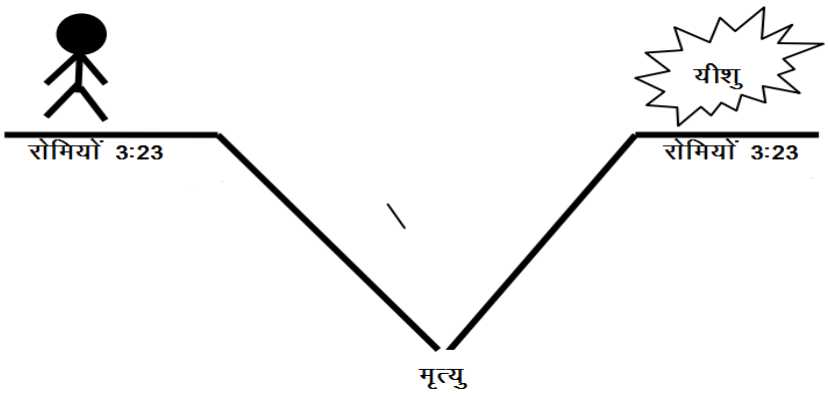

पाप के कारण हमलोग परमेश्वर के पास तक पहूॅच नहीं पायें, परन्तु परमेश्वर का हमारे पास पहूॅचने के लिये एक योजना है।

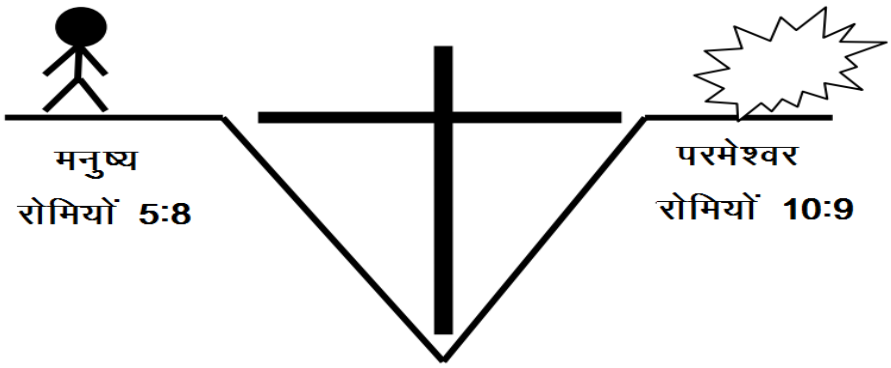

आप किसी को भी उद्धार का शुभ संदेश बताने के लिये रोमियों की पत्री से लिये गये चार पदो के साथ इन दो सरल रेखाचित्रों को उपयोग कर सकते हैं।

मेरी कहानी

1 पतरस 3:15 कहता है, *''पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ।''*

पतरस के निर्देश का पालन करने का मतलब हर समय अपने उद्धार की कहानी को बताने के लिये तैयार रहना है। जो कोई भी यीशु को उद्धारकर्त्ता के रुप में जानते हैं, उसकी कहानी के तीन भाग होते हैं।

भाग 1 – **हमारा जीवन, इससे पहले कि हमने यीशु पर विश्वास किया था।**

भाग 2 – **कैसे हमने यीशु के बारे में सुना, और विश्वास किया था।**

भाग 3 – **यीशु पर विश्वास करने के द्वारा हमारे जीवन में किस प्रकार का बदलाव हुआ।**

हमें इन तीन भागों को उपयोग करते हुए अपनी गवाही का अभ्यास करना चाहिये, ताकि हम किसी भी समय किसी से भी बता सकें। सामान्य शब्दों का इस्तेमाल करते हुए बताने का अभ्यास करें, हमारे पड़ोसी इसे समझेंगे। हमें इस योग्य बनना चाहिये कि अपनी गवाही जल्दी और स्पष्टता के साथ बता सकें। पूरी कहानी लगभग तीन मिनटों में पूरी हो जायेगी। अन्य विश्वासियों के साथ इसे अभ्यास करने के लिये समय लें, जिससे वे अपनी गवाही दूसरों को बताने सीख पायेंगे।

नीचे खाली स्थान में कम से कम 25 लोगों के नाम लिखें जिन्हें आपके उद्धार की कहानी सुनने की जरुरत है। उन लोगों को ढुंढ़े, और उन्हें अपनी गवाही बताने के लिये तैयार रहें।

25 लोगों के नाम

1.	14.
2.	15.
3.	16.
4.	17.
5.	18.
6.	19.
7.	20.
8.	21.
9.	22.
10.	23.
11.	24.
12.	25.
13	26.

Bibliography

Akins, T. 1991. *Pioneer Evangelism*. Junta de Missoes nacionais, Convencao Batista Brasileira, Brazil.

Allen, Roland. 1946. *Missionary Methods: St. Paul's or Ours.* World Dominion Press. Also published by Eerdmans, 1983.

Allen, Roland. 1949. *Spontaneous Expansion of the Church*, Eerdmans.

Birkley, Del, 1995. *The House Church*, Herald Press, Scottsdale.

Bowers, W.P. 1997. *Fulfilling the Gospel: The Scope of Pauline Mission*, JETS 30.

Brock, Charles. 1981. *Indigenous Church Planting*, Broadman Press, Nashville. Also published by Church Growth International, Neosho, 1994.

Bruce. F.F. 1977. *Paul: Apostle of the Heart Set Free*. Eardmans, Grand Rapids.

Carlton, R. B. 2003. *Acts 29: Practical Training in Facilitating Church-Planting Movements*. Radical Obedience Publishing.

Garrison, David. 2004. *Church Planting Movements*. Midlothian: WIGTake Resources, Bangalore.

McRay, John. 2003. *Paul: His Teaching and Practice*. Baker Academic, Grand Rapids.

Nevious, John. 1958. *Planting and Development of Missionary Churches*. The Presbyterian and Reformed Publishing Company, New Jersey.

O'Brien, P.T. 1995. *Gospel and Mission in the Writings of Paul*. Baker Books, Grand Rapids.

O'Conner, Patrick. 2006. *Reproducible Pastoral Training*, William Carey Library, Pasadena.

Piper, John. 2003. *Let the Nations be Glad*. Baker Academic, 2nd Ed. Grand Rapids.

Stott, John. 1990. *The Message of Acts*, Inter Varsity, Leicester.

Viola, Frank. 2003. *Pagan Christianity*, Present Testimony Ministries.

Warren, Rick. 1995. *The Purpose Driven Church*. Zondervan, Grand Rapids.

Zdero, Rad. 2004. *The Global House Church Movement*. William Carey Library, Pasadena.

From other Practitioners

It is our assertion that these five parts of the Church Planting Plan are nothing new to missiology. We have sought to demonstrate their origin within scripture. For further study consider the following examples of practitioners who have discovered these same five parts. Though not specifically listed, see the Five Parts within these books.

Acts 29 – **R. Bruce Carlton** – see bibliography
The teaching of Carlton and his disciples gave rise to the recognition of these five parts.
1) Entry Strategy – Sessions 7,10,11.
2) Gospel Presentation – Sessions 6,29.
3) Discipleship – sessions 13,18,26,27.
4) Church Formation – 17,31,34.
5) Leadership Multiplication – sessions 4,8,16,26,30.

Reproducible Pastoral Training – **Patrick O'Conner** – see bibliography. Chapter one contains all five parts.
1) Entry Strategy –p. 29-36 -- "Guidelines" 7 and 8
2) Gospel Presentation p. 36-44 – "Guidelines" 9-11
3) Discipleship – p. 44-58 – "Guidelines" 12-16
4) Church Formation – p. 45-82 – "Guidelines" 16b - 21
5) Leadership Multiplication – p. 83-94 -- "Guidelines" 22-23

Indigenous Church Planting – **Charles Brock** – see bibliography. The five parts are woven throughout the book. See especially Appendix one "Church Planting Process" p. 262 within the 1994 edition.

Church Multiplication Guide – **George Patterson and Richard Scroggins –** William Carey Library, Pasadena, 2002.
Again the five parts are woven throughout. See especially chapter 10 within Part II.
1) Entry Strategy - Section 10-E,F.
2) Gospel Presentation – Section 10-B,C,D.
3) Discipleship – section 10-I,L,M
4) Church Formation – Section 10-F,G,H
5) Leadership Multiplication – Section 10-A,D.

Church Planting Movements – **David Garrison –** see bibliography. Garrison's "10 Universal Characteristics" of a CPM contain all five parts. Part III - Chapter 11 – p. 172.
1) Entry Strategy – "Extraordinary Prayer" – Garrison description promotes prayer within a Luke 10 strategy.
2) Gospel Presentation – Every Church Planting Movement has "Abundant Evangelism" – Quantity and Quality.
3) Discipleship – Garrison Emphasizes the "Authority of God's Word" and suggests several alternative discipleship methods for non-literates.
4) Church Formation – Each of the sections on "Intentional Planting of Reproducing Churches", "House Churches", and "Healthy Churches" deal with formation.
5) Leadership Multiplication – One of Garrison's strongest contributions are the sections on "Local/Lay Leadership" as a reproducible model.

Pioneer Evangelism – **Thomas W. Akins –** see bibliography. Here specific tools have been used in each of the five areas to start thousands of churches.
1) Entry Strategy – See studies on "Following the Oikos" and "Men of Peace"
2) Gospel Presentation – see the "Good News" Bible study as a tool for evangelism.
3) Discipleship – see the "New Life in Christ" Bible study for beginning discipleship.
4) Church Formation – The habit of meeting together is formed through these same participative Bible studies.
5) Leadership Multiplication – see the section concerning ongoing discipleship for leaders.

The Four Fields of Church Planting

MARK 4:26-29

Field 1—Entry

House of Peace—Luke 10—2x2
List your Oikos

1.
2.
3.
4.
5.
6.
7.
8.
9.
10.

Begin praying for your oikos
- Make a plan to share with 5 people each week.

Field 2—Evangelism

Share Your Story

Before — How you Met Christ — Since

Share Christ's Story

Field 3—Discipleship

Milk—Tell the 7 Commands

1. Repent and Believe--Luke 19:1-10
2. Be Baptized--Acts 8:26-39
3. Pray—Matthew 6:5-15
4. Go...Make Disciples—John 4:4-42
5. Love—Luke 10:25-37
6. Lord's Supper—Luke 22:7-20
7. Give—Mark 12:41-44

What did we learn about God?

Is there a sin to avoid?

Is there a example/ command to follow?

What did we learn about man?

Meat—Everyday read one chapter and use the sword

Field 4—Church Formation

The Handy Guide to a Healthy Church

One Head and One Purpose
Christ—Ephesians 1:22-23
His Glory—1 Corinthians 10:31

Two Authorities
Word of God—2Timothy 3:16-17
Spirit of God—John 14:26

Three Offices
Pastor—1Timothy 3:1-7
Deacon—Acts 6:3
Treasurer—2 Corinthians 8:19-21

Four Marks of Maturity
Self-Governing—Acts 6:1-7
Self-Supporting—Acts 2:44-45
Self-Reproducing—1 Thess. 1:7-8
Self-Correcting—2 Tim. 3:16-17

Five Functions—Acts 2:38-47
Worship—Love God
Fellowship—Love Believers
Ministry—Love the Lost
Missions—Go!
Discipleship—Teach Others

The Four Fields of Church Planting (repeated three more times across the page: Field 1—Entry, Field 2—Evangelism, Field 3—Discipleship, Field 4—Church Formation, identical text)